गौड़ इतिहास

लेखक—

ठाकुर रुद्रसिंह तोमर, एम० आर० ए० एस० (लण्डन)

राज वैद्य, मन्त्री आयुर्वेद सेवा मण्डल,

सम्पादक पाण्डव-यशेन्दु-चन्द्रिका,

रचियता रुद्रक्षत्रिय प्रकाश, रामदेव चरित्र।

प्रकाशक—

क्षत्रिय रिसर्च सोसाइटी

एल्गिन रोड, दिल्ली।

(आर० एस० तोमर एण्ड सन्स)

दिल्ली

प्रथम संस्करण

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य १)

Ac. Gunratnasuri MS

Jin Gun Aradhak Trust

परिचय

राजकुमार श्री शम्भूसिंहजी शिवपुर—बड़ोदा (ग्वालियर) सूर्य्य वंशावतंस स्वर्गीय राजा श्री विजयसिंहजी गौड़ के द्वितीय राजकुमार हैं। आप का शुभ जन्म सन् १८६८ ई० सम्वत् १६५५ आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा को हुआ, आप की शिक्षा का विशेष और समुचित प्रबन्ध होने से श्रीमान् ने अल्प काल में ही अच्छी उन्नति की; शैशव काल से ही आप की विशेष रुचि आखेट-क्रीड़ा एवं शस्त्र विद्या में रही जो कि क्षत्रियों का स्वाभाविक गुण होता है। इसी से आपकी सुसंस्कृति तथा सुयोग्य शिक्षण का उज्ज्वल उदाहरण मिलता है।

आपकी योग्यता, सदाचार एवं सहनशीलता पर मुग्ध होकर सम्वत् १६७५ वि० में श्रीमन्त प्रजावत्सल स्वर्गीय महाराज माधवराव सिंधिया गोपाचल अधिपति ने अपने (Personal) विभाग में नियुक्त कर आपके रहने के लिये एक स्टेट गैस्ट की भाँति प्रबन्ध कर आज्ञा प्रदान की कि राज्य के नियमानुसार आप भूविभाग (Revenue), प्रबन्ध विभाग (Settlement) व कागज़ात देही के कार्य की शिक्षा प्राप्त करें यही मेरी हार्दिक इच्छा है, ताकि राज्य के किसी उच्च पद पर आपको नियुक्त किया जावे। इसी हेतु आपने भी राज्याधीश की उपरोक्त आज्ञा को सहर्ष शिरोधार्य किया तब दरबार ने भी आपकी शिक्षा का उत्तम प्रबन्ध राय साहब कन्हैयाचन्द कपूर डायरेक्टर क़ागज़ात देही के आधीन सुयोग्य प्रणाली के अनुसार करा दिया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इसी वर्षसम्वत् १९७५ वि० में स्वर्गीय ग्वालियर नृपति की आज्ञा सेआप का शुभ विवाह ठिकाने देवगढ़ में श्रीमान् राव बहादुर कर्नल कोकसिंह जी, वर्क जङ्ग बहादुर, इन्स्पेक्टर जनरल पोलिस राज्य ग्वालियर के ज्येष्ठ भ्राता श्रीमान् ठाकुर साहब मेजर दोलतसिंहजी महोदय, गार्जियन वर्तमान श्री ग्वालियर नरेश की सुपुत्री से बड़े समारोह से हुआ। इस शुभ विवाहोत्सव के समय मिलेट्री के बैण्ड, फ़ौज इत्यादि युक्त प्रोसेशन के लिये राज्य ग्वालियर की ओर से प्रबन्ध हुआ था। उस समय राज्याधीश्वर ग्वालियर की सवारी शिवपुरी में विराजमान होने के कारण लग्न समारम्भ के उत्सव में सम्मिलित होने में पत्र द्वारा असमर्थता प्रगट की और श्रीमान मुन्तज़िम साहब जागीरदारान राज्य ग्वालियर को प्रेषित कर लग्न रसम का खिलअत ५ पारचे, १ कण्ठी, १ सिरपेच प्रदान कर गौरवान्वित किया।

सम्वत् १९७६ वि० में राज्याधीश्वर ने स्थान गौरव (ऐजाज नशिस्त) पर्सनल स्टाफ़ दरबार में सम्मिलित होने की सहर्ष आज्ञा प्रदान की।

आपकी शिक्षा का स्रोत कमिश्नर के निरक्षण में प्रचलित रहा। प्रबन्ध विभाग (Settlement) का शिक्षण पूर्ण रूपेण समाप्त हुआ। पश्चात् अपनी योग्यता द्वारा आप अतिशीघ्र ही राज्याधीश्वर ग्वालियर के विश्वासपात्र बन गये। प्रबन्ध विभाग पति (Settlement Commissioner) के दीर्घ कालीन छुट्टी (अवकाश) चले जाने पर आप को ही उपरोक्त विभाग का अधिकार सौंपा गया,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तत्पश्चात आप रेव्हेन्यू विभाग (Revenue Department) में लगे (अटेच) रहे और आर्मी मैन्यूवर्क्स के समय पर सर्वदा राज्याधीश्वर के साथ आर्मी गेलपर्स की सेवा (Duty) की।

इस समय प्रबन्ध शिक्षा (Settlement Training) के हेतु आपको बृटिश इण्डिया (British India) में राज्य की ओर से भेजने के लिये श्रीस्वर्गीय महाराज साहब ने नामाङ्कित किया और यू० पी० सरकार से पत्र व्यवहार कर आप मथुरा भेजे गये। वहाँ एक वर्ष पर्यन्त श्री० ऐच० ऐ० लेव० (Mr. H. A. Lave, I. C. S. Settlement Officer) व डब्ल्यू० आर० टैनेन्ट (Mr. W. R. Tanent. I.C.S., Assistant Settlement Officer) के निरीक्षण में शिक्षा-विषय समाप्त होने पर अत्युत्तम विवर्ण (Report) दरबार ग्वालियर की सेवा में उपस्थित होते ही दरबार ने आपको ता० २१ मार्च १९२३ में असिस्टेण्ट सेटिलमेण्ट आफिसर के पद पर सुशोभित किया। इस कार्य को सुयोग्यता से निभाने के कारण दूसरे वर्ष में ही आपकी वेतन-वृद्धि हुई। इस प्रकार अजलाय नरवर, शाजापुर में चारवर्ष पर्यन्त प्रबन्ध विभाग का कार्य सुयोग्य रीति से करने के पश्चात आपका पद परिवर्तन नायब सूबा ज़िला ईसागढ़ के स्थान पर हुआ। इस कार्य को भी आपने सुचारु रूप से किया।

आपका जातीय प्रेम भी सराहनीय है। जिसका केवल एक ही उदाहरण यहाँ प्रगट किया जाता है, कि जिस समय टप्पे चन्देरी में आपको यह विदित हुआ कि चन्देरी अति प्राचीन और ऐतिहासिक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

स्थान के अतिरिक्त क्षत्रिय जाति का श्रेष्ठ केन्द्र है तो तुरन्त ही भ्रात्रत्व प्रेम का परिचय इस प्रकार दिया कि निक्टवर्ति क्षात्रियों को सङ्गठित कर उनकी सम्मति प्राप्त कर तुरन्त ही क्षात्रिय छात्रालय का उद्घाटन कर दिया। जिसको राज्य ग्वालियर को राजपूत हितकारणी जनरल सभा ने भी सहर्ष स्वीकार कर उपरोक्त छात्रालय के व्यय और शिशुओं के शुल्क का भार अपने ऊपर ले लिया।

सन् १६३१ की मनुष्य गणना का कार्य ज़िला अमझेरे का आपके निरीक्षण में हुआ। जिसको आपने सुचारु रूप से पूर्ण किया। इस सेवा से प्रसन्न हो स्वर्गीय ग्वालियर सरकार ने आपको स्पेशल (Special) कक्षा का प्रमाण पत्र प्रदान किया। वर्तमान काल में आप ज़िला उज्जैन में नायब सूबे के पद पर नियुक्त हैं।

आप राज्य ग्वालियर की राजपूत हितकारिणी जनरल सभा की ट्रस्ट (Trust Commitee) के सदस्य और क्षत्रिय रिसर्च सोसाइटी दिल्ली के सदस्य और उपप्रधान हैं।

इन्हीं सेवाओं तथा परोपकारी भावों को—

रघुकुल तिमिरोघध्वंश शीतेतरांशु।
जयतु जयतु शिव सिंहो राजपुत्राधिराय॥

इस श्लोक सहित देखकर यह तुच्छ भेंट आपकी सेवा में अर्पण कर आशा करता हूं कि आप इसे स्वीकार करेंगे।

लेखक—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

राजकुमार शम्भूसिंह जी
शिवपुर बड़ोदा, (ग्वालियर)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भूमिका

इस भावी परिवर्तन शील संसार में प्रत्येक समुदाय, सम्प्रदाय, जाति, राज्य, वर्ग अथवा समाज जिसे भी देखें, वह अपनी ही धुन में माया रूपी मिथ्या व्योपार में ग्रसित दृष्टि-गोचर हो रहे हैं। कोई विरला ही ऐसा व्यक्ति मिलेगा, जिसे प्राचीन काल की नीति, धर्म, संस्कृति व्यापारादि के जानने की लगन हो, दूसरे शब्दों में व्यतीत काल की घटनाओं का नाम ही इतिहास है। जैसे किसी ने कहा है कि:—

काहं कोऽहं, कुलं किंमे सम्बन्धः कीदृशोमम ।
स्वधर्म्मो नहिं लुप्येत ह्येवं संचिंतयेद् बुधः ॥

सच पूछें तो बिना ऐसी जानकारी के मनुष्य मनुष्य कहाने का अधिकारी नहीं, क्योंकि इतिहास ही के उदाहरणों से वेद वेदान्त और तन्निष्ठ धर्म्म का भी यथार्थ स्वरूप समझ में आ सकता है। अन्यथा कुछ भी नहीं, क्योंकि जो बहु श्रुत नहीं, जो विविध ज्ञान नहीं रखता, जिसको ऐतिहासिक घटनाओं का कुछ भी ज्ञान नहीं, वेद सर्वदा ऐसे व्यक्ति से दूर रहता है कि कहीं यह मेरे अर्थ का प्रवचन नहीं प्रवञ्चन करेगा, प्रसारण प्रचारण नहीं वरन् प्रतारण करेगा, वह धर्म के स्थान में अधर्म्म का उपदेश करेगा, ऐसे प्राणी का अपने को धर्म्म व्यवस्थापक (धर्म्मावलम्बो) कहना दम्भ मात्र है। वह वेद के अर्थ का भी और समस्त जनता की भी प्रतारणा प्रवञ्चन करेगा।

हमारे पूर्व ऋषियों ने अपनी रचनाओं में इतिहास का वर्णन निम्न प्रकार से किया है जो मनन करने योग्य है:—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इतिहास पुराणाद्यैः षष्ठसप्तमकौनयेत् ॥

'कारिका' दक्षः

इतिहासादि अभ्यासनम्

इतिहास पुराणानि धर्म्मं शास्त्र चाभ्यसेत् ।
तथा विवोद वाक्यानि परिवादांश्च नर्जयेत् ॥

अत्रि

इतिहास-पुराणं पञ्चमं वेदानां वेदं भगवोऽध्योमि ।

छन्दोग्यो०

इतिहास पुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत ।
बिभेत्यल्पश्रुताद् वेदो मामयं प्रतारिष्यति ॥

मनु—महाभारतादि

पूर्व कालीन महाभारतादि आर्ष लोक हितेषी कारुणिक ग्रन्थों में भीष्मादि महापुरुष जब उपदेश करते थे जो बीच बीच में:—

अत्राप्युदारं तीममितिहासं पुरातनम् ।

ऐसे उदाहरणों द्वारा उपदेश श्रोताओं को ठीक समझा देते थे। ऐसी सर्वाङ्गिणी शिक्षा जो उत्तम इतिहास के ग्रन्थों से जैसी प्राप्त हो सकती है वैसी किसी दूसरे विषय के ग्रन्थों से नहीं। इसलिये ऐसे इतिहास ग्रन्थों का परिशीलन मनुष्य के जीवन में धर्म्म, नीति आदि का सञ्चार उत्पन्न करता है कहा भी है :—

नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते ।

जिस प्रकार प्राचीन आर्य ग्रन्थों द्वारा इतिहास का बोध प्राप्त किया जाता है। उसी प्रकार नूतन अनुसन्धान द्वारा और ग्रन्थों

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

का निर्माण करना भी अति आवश्यकीय है। जैसा कहा भी है History is the story of a nation pulsating with life and telling in clear words that it can not die while it makes history "michelet".

परिवर्तनि संसारे मृतः को वा न जायते ॥
सजातो येन जातेन याति वंशः समुन्नितम् ।

—भर्तृहरि

मैंने उपरोक्त कथन तथा अपने निर्धारित विचारानुसार इस प्राचीन गौड़ इतिहास का सङ्कलिन १६६० वि० में आरम्भ किया, किन्तु कई दैविक आपत्तियों में ग्रस्त होने के कारण इसके प्रकाशन में बहुत विलम्ब हो गया, जिन में दो तो अत्यधिक दारुण थीं। प्रथम मेरे ज्येष्ठ पुत्र को मोतीभारा का घोर आक्रमण हुआ, जिसे १¾ मास तक अन्न तक नहीं दिया गया, उसके पश्चात मेरी धर्मपत्नि भाद्रपद शुक्ल में रोगग्रस्थ हुई इसी बीच मुझे भी आश्विन कृष्ण पितृपक्ष अमावस्या को ज्वर ने अन्य बालकों सहित ग्रस्त किया, किन्तु खेद है कि आश्विण शुक्ल अष्टमीयोपरांत नवमी बुधवार ता० २७ सितम्बर को मेरी धर्मपत्नी का लेडी हार्डिंग में उसकी कुटल कर्मचारियों की लापरवाही के कारण मोह अवस्था में उसका शरीरान्त होगया, जिस भूल के लिये वहां की सुपरिण्टेण्डेण्ट तथा प्रमुख चिकित्सक Medical officer ने क्षमा तथा अकस्मात मृत्यु पर खेद और सहानुभूति प्रकट करने का पत्र लिखकर अपने प्रायश्चित्त को पूरा किया। इसके पश्चात् जब मैं उसकी अस्थियां हरिद्वार २ अक्तूबर को लेकर गया

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

और ५ अक्तूबर को वापिस आया तो आने के ३ घण्टा पश्चात् जो ७ मास का लड़का श्रीमती छोड़ गई थीं, वह भी अपने प्राणपखेरू ले उड़ा। इन उपरोक्त विपदाओं के कारण इसकी रचना जैसी मैं चाहता था, नहीं हो सकी, कारण कि इधर पाठकों की मांग पर मांग होरही थी। और उधर अपर स्वजन विभाग का एक के बाद दूसरा घाव हो रहा था।

अब प्रेस वालों ने जो इसके प्रकाशन और अपने प्रण का अनुचित परिचय दिया, उसका अन्दाज़ा तो और भी शोचनीय है। ता० ७–६–३४ को तो पुस्तक का आर्डर बुक हुआ और शर्त हुई कि आठ पृष्ट दैनिक देंगे। किन्तु आज ५ वें मास का अर्धभाग व्यतीत हो गया तो भी उसे अधूरा ही रखा। साथ ही कई बार कापी खो देने तथा कम्पोज़ीटरों और संशोधक की असावधानी के कारण इसमें अनेक त्रुटियां रह गई हैं, फिर भी आशा है कि कृपालु पाठकगण उनपर विचार न कर इसके तत्व को ग्रहण कर त्रुटियों से मुझे सूचित कर कृतार्थ करेंगे, ताकि द्वितीय संस्करण में उनका विशेष ध्यान रखा जावे।

सारं ततो ग्रहह्यमपास्य फल्गु।
हंसैर्यथाक्षीरमिवाम्बुमध्यात् ॥

अन्त में मैं अपने मित्र ठाकुर भगवती प्रसाद सिंह जी का कृतज्ञक हूँ जो मेरे इस विपत्तिकाल में इस पुस्तक के संग्रह में सहायक बने और इम्पीरियल लायब्रेरी के लायब्रेरियन को भी धन्यवाद दिये बग़ैर नहीं रह सकता जिन्होंने पुस्तकालय में हरेक प्रकार की सुविधा पुस्तकाव-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लोकन में दी। और पण्डित देवी प्रसाद जी शर्मा मेनेजर जाब, हिन्दुस्तान टाइम्स और ठाकुर बलरामसिंह जी मैनेजर भदावर प्रेस, का भी उपकृत हूँ जिन्होंने ऐसे विकट समय में—जब कि पूर्व वर्णित प्रेस के प्रबन्धकर्ता ने विश्वास घात कर समय पर पुस्तक देने से इन्कार कर दिया—तो उन्होंने तुरन्त ही ब्लोक, टाइटिल तथा भूमिका और अन्तिम १०४ से आगामी पृष्ठों के फार्म समय पर छाप कर देने का अनुग्रह किया।

इन्द्रप्रस्थ
विजयादशमी, १७–१०–१९३४

रुद्रसिंह तोमर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विषय-सूची

—:o:—

विषय		पृष्ठ
१—गौड़ देश और उस का वर्णन	...	१
२—पाल राजों की वंशावली	...	३०
३—लखनौती में सेन राज्य	...	३१
४—गोण्डा वर्णन	...	३८
५—श्रावस्ती वर्णन	...	४२
६—कुरुक्षेत्र वर्णन	...	४६
७—कुरुक्षेत्र तीर्थ महात्म्य	...	५०
८—थानेश्वर गौड़	...	८६
९—गौड़ जातियों का वर्णन	...	
१०—ब्राह्मण	...	९२
११—क्षत्रिय वंश	...	१००
१२—सूर्य्य वंशीय गौड़ों का इतिहास	...	११०
१३—ग्वालियर शिवपुर सम्बन्धो पत्रों की नकल		१४७
१४—गौड़ क्षत्रियों के गोत्र प्रवर्णादि	...	१५१

Ac. Gunratnasuri MS

Jin Gun Aradhak Trust

हिंदू भारत का उत्कर्ष

या

राजपूतों का आरंभिक इतिहास

लेखक—श्री चिन्तामणि विनायक वैद्य, एम० ए०, एल-एल० बी०

इस पुस्तक में लेखक ने अनेक अरब प्रवासियों के लिखित प्रमाणों तथा शिलालेखों इत्यादि के आधार पर राजपूतों के प्रारम्भिक इतिहास की सभी ज्ञातव्य बातों पर प्रकाश डाला है। राजपूत कौन थे, वे कहाँ से आये थे और उन्होंने बाहर से आकर आक्रमण करनेवाले अरबों तथा तुर्कों से पाँच सौ वर्षों तक दृढ़ता पूर्वक लड़कर किस तरह अपने देश तथा धर्म की रक्षा की, इत्यादि ऐसे ही तथा अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समुचित उत्तर इसमें है। तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक परिस्थिति का भी विवेचन किया गया है। अनेक परिशिष्टों तथा विस्तृत अनुक्रमणिका से युक्त साढ़े पाँच सौ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ३॥)रु०।

हिन्दू भारत का अन्त

(लेखक—श्री चिन्तामणि विनायक वैद्य एम० ए०, एल० ए० बी०)

इस ग्रन्थमें मध्ययुगीन हिन्दू, क्षत्रिय भारत का सन् १००० से १२५० ईसवी तक का हाल शिला लेखों, अलबेरूनी, ह्युनत्संग तथा अनेक अरब ग्रन्थकारों एवम् भारतीय तथा यूरोपीय विद्वानों द्वारा प्रस्तुत की गयी सामग्री के आधार पर लिखा गया है। इसमें दिखलाया गया है कि काबुल का विस्तृत हिन्दू शाही राज्य किस प्रकार नष्ट हुआ, शहाबुद्दीन गौरी द्वारा उत्तर भारत के पराभव का क्या

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कारण है और इस कालमें हिन्दू लोग क्यों बलहीन हो गये हैं। इस ।मेंसथ तहीत्कालीन सामान्य परिस्थित का भी विवेचन किया गया है और यह भी बताया गया है कि प्रधान जातियों के अन्तर्गत सैकड़ों उप-जातियों के उत्पन्न हो जाने से यहाँ की धार्मिक एकता किस प्रकार नष्ट हो गई। आठ सौ पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ४) रु० मात्र।

श्री भगवन्नाम—महिमा

लेखक—ठाकुर भगवतीप्रसाद सिंह

इस भगवद्भक्तिमय ग्रन्थ में गीता तथा अन्य कई प्रमाणिक ग्रन्थों के श्लोक तथा उन पर सुन्दर भाषा-युक्त टिप्पणी और आज तक होने वाले भक्तों की बानियाँ, दोहे, भजन आदि में, दो तिरङ्गे चित्रों सहित सुन्दर कागज़ पर छपी है, पुस्तक प्रत्येक ग्रहस्थ में रखने योग्य है पृष्ठ संख्या १८४, मूल्य केवल १)

पुस्तकें मिलने का पता—

आर० एस० तोमर एण्ड संस

ओपोज़िट फ़ोर्ट गेट, दिल्ली।

नोट—एजन्टों की हर जगह ज़रूरत है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ॐ

गौड़-इतिहास

गौड़ नाम के कई एक देश इसी नाम से प्रसिद्ध हैं, जिनका वर्णन उपलब्ध सामग्री से जो प्राप्य है, वह इस प्रकार है:—

सर्व प्रथम यह मालूम होना चाहिये कि वास्तव में "गौड़" नाम के कौन कौन देश हैं, उसके लिये स्कन्द पुराणीय "सह्याद्रि-खण्ड" इस बात की साक्षी देता है कि सारस्वत (सरस्वती तटस्थ वासी) कन्नौज, उत्कल, मिथिला और गौड़ के रहने वाले ब्राह्मणों को पञ्च गौड़ कहते हैं, उपरोक्त प्रमाण से मालूम होता है कि गौड़ नामक देश एक ही नहीं था, वरञ्च पाँच थे † । उनमें से प्रथम सरस्वती प्रवाहित कुरुक्षेत्र (थानेश्वर), द्वितीय अलाहाबाद (प्रयाग) और कान्यकुब्ज मध्य, तृतीय अयोध्या, चतुर्थ मिथिला और बङ्ग देशीय और पञ्चम उड़ीसा और मध्य-प्रदेश अन्तर्गत गोण्डावाना के मध्य में प्रसिद्ध थे । इन्हीं पांचों के अधिवासी ब्राह्मण वाद में सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल

---

† सारस्वताः कान्यकुब्जा उत्कला मैथिलश्च ये ।
गौडश्च पञ्चधा चैव गौड़ाः प्रकीर्तिताः ॥
सह्य० उत्तरार्द्ध अ० १ ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

और उत्कल नाम से प्रसिद्ध हुए, जैसे शब्द कल्पद्रुम ने भी सह्याद्रि खण्ड § की पुष्टि की है। परन्तु इसमें जो "विन्ध्यस्योत्तर-वासिनः ‡ पाठ दिया है वह असंगत प्रतीत होता है, क्योंकि इससे तो चेदी, मालव और बरार के सीमान्तवर्ती उत्कल और गोण्डवाना के मध्य का प्राचीन गौड़ देश कथित पञ्च गौड़ देश से भिन्न हो जाता है। ऐसा दशा में सह्याद्रि खण्ड का पाठ ही युक्तियुक्त प्रतीत होता है किन्तु ई० ९ वीं शताब्दी में उत्कीर्ण राष्ट्रकूट और चेदि राजाओं के ताम्रपत्र तथा शिलालेखों द्वारा जाना जाता है कि चेदी, मालव और बरार राज्यके सीमान्त में एक गौड़ देश था।

राजतरङ्गिणी में भी लिखा है कि-"काश्मीर राजा जयादित्य ने पञ्च गौड़के राजाओंको जीतकर अपने श्वसुर को उनका अधीश्वर बना दिया था ✝।

कवि कङ्कण के पूर्ववर्ती माधवाचार्य ने भी अपने "दुर्गा-महात्म्य में अकबर बादशाह का परिचय देते समय लिखा है कि

---

§ स्कन्द पुराणीय खण्ड जिसको J.E.De Cunha ने १८७७ में बम्बई से प्रकाशित किया जो अब अप्राप्य है, इसमें एतिहासिक और भूगोलिक सामाग्री है।

‡ सारस्वताः कान्यकुब्ज गौड़ मैथिलकोत्कलाः।
पञ्च गौड़ इति ख्याता विन्ध्यस्योत्तर वासिनः ।। शब्द कल्पद्रुम।
पृ० ३७

✝ पञ्च गौडाधिपान् जित्वाश्वशूराः तदधीश्वरम्।
रा० स० ४.४. ४६४.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पञ्च गौड़ नाम का देश पृथ्वी में सार है ।
अकबर नाम का राजा अर्जुन का अवतार है ।।

उपरोक्त पञ्च गौड़ों में मिथिला और बङ्ग देश के मध्य वाले गौड़ राज्य को प्रायः सब ही लोग जानते हैं । इतिहास में भी बहुधा यही गौड़ राज्य के नाम से प्रसिद्ध है, दूसरे गौड़ राज्यों का बहुत थोड़ा उल्लेख केवल नाम मात्र को ही कहीं कहीं अवश्य मिलता है। जिनका क्रमानुसार उल्लेख भी किया जावेगा।

उपरोक्त गौड़ के पूर्व दक्षिण का समुद्री भाग इसी प्रकार भग भूमिखण्ड के उदय से क्रमशः दक्षिण की ओर हट गया है और सम्भवतः उसी उन्नत भूखण्ड पर वर्तमान सुन्दर बन की तरह असंख्य नदी नाले होंगे, उन नदी नालों में मूल प्रवाह सर्वापेक्षा प्रबल जल धारा था। वह मूल प्रवाह आज भी पद्मा के आकार में तट भूमि को तोड़ कर प्रवाहित हो रहा है। फलतः समुद्र हट जाने से जब समुद्र गर्भ में प्रथम द्वीप उठा, तब गङ्गा का मूल प्रवाह भागीरथी का ख्यात होकर प्रवाहित हुआ था। इसी कारण बहुत दिनों से लोग गङ्गा सागर संगम को "गंगासागर संगम" कहते हैं । पद्मा और मेघना सम्भवतः पहले समुद्र की खाड़ी थी, पश्चात् नदी के रूप में परिणित हो गई।

पाणिनि अष्टाध्यायी और जैन हरिवंश के पढ़ने से मालूम होता है कि भारतीय युग के बाद पूर्व भारत

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

में "अरिष्टपुर✝" और "गौड़पुर"‡ नाम के दो प्रधान नगर थे। जैन हरिवंश में अरिष्टपुर और सिंहपुर का एकत्र उल्लेख पाया जाता है। अरिष्टनेमि या नेमिनाथ के नाम पर अरिष्टपुर का नाम पड़ा। इसमें कुछ सन्देह नहीं। इन तीन प्राचीन नगरों में गौड़ पुर पुण्ड्र देश में और अरिष्टपुर उत्तर राढ़ में था, ऐसा बोध होता है। गौड़पुर से ही पीछे गौड़ राज्य का नामकरण हुआ, ‡ किन्तु ७ वीं शताब्दी में बराहमिहिर ने लिखा है कि गौड़, पौण्ड्र, बङ्ग और वर्द्धमान सब पृथक २ जनपद हैं† । परन्तु ई० ११ वीं शताब्दी में कृष्णमिश्र ने अपने प्रबोध चन्द्रोदय नाटक में उनुपमा राढापूरी को भी गौड़ राज्य के अन्तर्गत लिखा है। वर्तमान वर्द्धमान और उसके दक्षिण भाग को लोग "राढ़ा" कहते हैं। ऐसा तो कृष्ण मिश्र के मतानुसार वर्द्धमान आदि स्थान भी गौड ✝ राज्य के अन्तर्गत समझे जाने चाहिये। बंगदेश से भुवनेश्वर की सीमा तक गौड देश कहाता है। और वहाँ के

✝ अरिष्ट गोड पूर्वे च। अष्टा. ६।२।१००

‡ Encycloeadia Indica Vol. XX, P. 467

† उदयगिरि-भद्र-गौड़क, पौण्ड्रोत्कल-काशि-मेकलाम्बष्ठाः।
बृहत्संहिता १४।६

एक पद-ताम्र लिप्तिक-कोशलकवर्द्धमानश्च ॥
अग्नेय्यां दिश कौशल कलिङ्ग-बङ्गापवङ्ग जठराङ्गाः।

✝ गौड़राष्ट्रमनुत्तमम् निरुपमा तत्रापि राढा-पुरो ॥
प्र. चन्द्रोदय नाटक।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लोग सब शास्त्रों में विशारद होते हैं‡। शक्ति संगमके अनुवर्ति हो कवि कङ्कण ने "धन्य राजा मानसिंह" विष्णु पदाम्भोज भृङ्ग, गौड़ बङ्ग—उत्कल अधिप" ऐसा लिख कर गौड़ राज्य को वंग और उड़िसा से पृथक बताया है।

प्राचीन कुलाचार्य्य हरिमिश्र की राढ़ीय कारिका में लिखा है कि—आदिशूर के वंशजों ने बहुत दिनों तक गौड़ में राज्य किया था, यह सब ही ब्राह्मणीय धर्मावलम्बी थे। इनके पश्चात् पाल वंशीय देवपाल राजा हुए थे। पालवंशीय राजाओं की ताम्र और शिला लिपियों से ज्ञात होता है कि—देवपाल के ताऊ धर्मपाल ने इन्द्र राजाको पराजय कियाथा, सम्भव है कि उन्होंने ई०सं० ८४० या ८४१ में गौड़ राज्य अधिकार किया हो सम्भवतः तभीसे आदिशूर वंश का अधःपतन हुआ हो। पालवंशीय राजाओं का राजधानी भी पौंड्रवर्द्धन में थी।

इससे प्रथम लिख चुके हैं कि आदिशूर पञ्च गौड़ के अधिश्वर हुए थे, उनके समय में बङ्ग और राढ़ भी गौड़ राज्य के अन्तर्गत था, परन्तु पाल वंशीयों के शेष समय में बंग और राढ़ या पौण्ड्रवर्धन राज्य के अन्तर्गत नहीं थे।

तिरुमलयगिरि के शिलालेख से ज्ञात होता है कि दिग्विजयी राजेन्द्रचोल के समय ई० १०वीं शताब्दी में उत्तरराढ़ बंग और पुण्ड्र भुक्ति यह सब पृथक २ स्वतन्त्र राज्य थे। उस

‡ वङ्ग देश समारभ्य भुवशातङ्गवे शिवे।
गौड़ देश समाख्याता सर्व शास्त्र विशारदः॥
शक्ति सगमू तन्त्रे सप्तम पटले।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

समय उत्तरराढ़ के राजा महीपाल, दक्षिण राढ़ के रणशूर *, बंग देश के गोबिन्दचन्द्र और पुण्ड्रभुक्ति ‡ या पौण्ड्रबर्धन के धर्मपाल राजा थे। महाराज राजेन्द्रचोल ने उक्त राजाओं को परास्त किया था। ¶

---

* यह रणशूर सम्भवतः आदि शूर के कोई राजा होंगे, तो आखाली के पास भुलूआ परगणा में एक प्राचीन कायस्थ राज वंश है, उनका कहना है कि आदिशूर वंशीय कोई राजा चन्द्र नाथ के दर्शन के लिये गये थे। उसी समय पाल वंशीयों ने गौड़ राज्य दखल कर लिया था, यह खबर जब लौटते समय गौड़ राज ने सुनी तो उसने दक्षिण वङ्ग देश में आश्रय लिया,

यदि यह बांतसच हो तो ई० १० वीं शताब्दी के आरम्भ में आदिशूर वंशीय और रणशूर दक्षिण राढ़ का राज्य करते थे, यह भी असम्भव नहीं है।

‡ सुप्रद्धि प्राचीन लिपिवित हुलट्ठुस साहब ने 'दण्डभुक्ति' पढ़ा है परन्तु सम्भवतः "दण्ड" न होकर "पुण्ड" शब्द होगा।

¶ Tkkana Ladam and uttira Ladam or Northern and Southern. Lata (Gujrat) the former was taken from a certain Ranasur. E. Hult Lach's South Idian. Inscriptions Vol. I., P. 9.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इसके थोड़े समय बाद सेनवंशीय प्रथम राजा विजयसेन राढ़ से आकर गौड़ाधिपति हुए थे। उनके वंश के राजा गौड़ेश्वर नाम से प्रसिद्ध हुये, गौड़ देश बहुत पुराना है, परन्तु उस समय भी उसका गौड़ ही नाम था, इसका कोई विशेष प्रमाण नहीं

उन्होंने मूल तामिल में "तक्काण-लाडम" और 'उत्तिर-लाडम' शब्द देख कर (गुजरात) दक्षिण लाट और उत्तर का निश्चय कर लिया, परन्तु यह अति शयोक्तिक जान पड़ता हैं। राजेन्द्र चोल ने किसी समय में गुजरात पर अधिकार किया था। उसका कोई विशेष प्रमाण नहीं मिलता, उक्त शिला लेख में "बङ्गालदेश" के साथ "तक्काणलाडम" और उत्तिर लाड़म का भी उल्लेख है। सिंहेज के प्रसिद्ध पाली ग्रन्थ "महावंश में बङ्ग राज्य के अन्तर्गत "लाड़" नाम के स्थान का वर्णन है। प्रथम लिखा जा चुका है कि ई० ११ शताब्दी में रचे हुये "प्रबोध चन्द्रोदय नाटक के मत से "राढ़पुरी" गौड़ राज के अन्तर्गत है, वङ्ग देशीय प्राचीन कुलाचार्य्य के ग्रन्थों में और वर्तमान वङ्ग समाज में उत्तर राढ़ीय, बंगजा, बारेन्द्र आदि स्थानानुसार श्रेणी विभाग प्रचलित है। इस देश के कुलाचार्य का विश्वास है कि गौड़ाधिप आदिशूर के समय से ही यह लोगो विभाग है कि चले आये हैं। इत्यादि कारणों से रजेन्द्र चोल के शिलालेख में लिखे हुये "तक्कण-लाड़म" और उत्तर लाड़म का अर्थ दक्षिण राढ़ जान यह बिना किसी सन्देह के प्रसङ्ग किये गये।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मिला। विजयसेन के पूर्ववर्ती राजा पौण्ड्रवर्धन, कर्ण सुवर्ण आदि नगरों में रहते थे।

विजयसेन के पुत्र बल्लालसेन ने गंगा के किनारे गौड़ नाम के नगर में अपनी राजधानी स्थापन की थी। उनके पुत्र महाराज लक्ष्मणसेन ने उस नगर का नाम लक्ष्मणावती रखा था। फिर उन्होंने नवद्वीप में दूसरी एक राजधानी स्थापित की थी। जिस प्रकार हिन्दू राजा अपने को गौड़ेश्वर कह कर परिचय देते थे, उसी प्रकार सेन राज के परवर्ती मुसलमान राजागण लखणौतिया या लक्ष्मणावती के अधिपति कह कर अपना परिचय दिया करते थे। उस समय के सब ही मुसलमानी इतिहासों में गौड़ का मुसलमान अधिकृत भूभाग लखनौती राज्य वर्णित हुआ है। परन्तु आज तक भी वह नगर गौड़ नाम से प्रसिद्ध है।

१२ वीं सदी में प्रसिद्ध मुसलमान एतिहासिक मिनहाज-सिराज ने लक्ष्मणावती राज्य का परिचय देते समय जो वर्णन किया है वह इस प्रकार है,-गगां के दोनों किनारांकी ओर (राल) (राढ़) है, इसी ओर लखनोर नगरी है। पश्चिम (वा उत्तर धार) बरिन्द (वरेन्द्र) कहलाता है। यहां देवकीट नगर स्थापित है ‡।

*मिनहाजके वर्णनसे मालूम होता है, कि उस समय लक्ष्मणावती और उसके चारों ओर अवस्थित याजनगर (याजपुर

---

* मिनाज तबकात-ई-नासिरी द्रष्टव्य।

‡ 20/8 vol. xiy 'p.49।

वा उत्कल को उत्तरांश), वङ्ग कामरूप और तिरहुत (मिथिला) यह सब देश मिला कर गौड़, कहलाते थे।‡

अभी मालदह जिले में गङ्गाके प्राचीन गर्भ में अक्षा २४° ५४′ उ० और ८८° ८′ पू० में वह प्राचीन गौड़ अवस्थित है, जो इस समय बाघ, भालूओं का जङ्गल हो रहा है।

हरिमिश्र की प्राचीन कारिका में उल्लेख है कि लक्ष्मणसेन के पुत्र राजा केशवसेन ने यवनों के भय से गौड़ राज्य छोड़ दिया था। इससे ज्ञात होता है कि केशव सेन के राजत्वकाल में ही मुहम्मद—ई—बखतियार ने गौड़ राज्याधिकार कर लिया था।

मुसलमानों के अत्याचारों से सेन राजाओं की प्रतिष्ठित यहां की सभी हिन्दू कीर्तियां नष्ट होगई थीं, गौड़में किस स्थानपर सेन राजागण रहते थे। मुसलमानों ने उनका चिन्ह तक नहीं छोड़ा। इस नगर के दक्षिणांश में "पाताल चण्डी" और उत्तरांश में "फूलवाड़ी दरवाजा" है। इन नामों को देख कर प्रत्नतत्त्वविद् कनिङ्हाम साहब ने अनुमान किया है कि, सेन राजाओं के समय की प्राचीन गौड़ राजधानी इस अंश में और उत्तर दक्षिण में करीब ४ वर्ग मील तक विस्तृत थी। इस में गंगा स्नानघाट लोड़गढ़, धर्म्मपुर, व्यासपुर और राजचन्द्रपुर आदि नामों के रहने से ऐसा प्रतीत होता है कि, यहां हिन्दुओं का वास था। फुलवाड़ी दरवाजा में एक पुराना दुर्ग है। आइन-ए-अकबरी में अबुलफजल ने लिखा है कि गौड़के दुर्गको बल्लालसेन ने बनवाया

‡ तबकात-ई-नासिरी २०-८ Vol XIX, P.49.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

था", फुलवाड़ी दरबाजे से ४ मील उत्तरकी ओर ऊंची दीवार है, सम्भवतः बल्लालसेन कभी कभी उसी स्थान पर भी निवास करते होंगे।

इस नगर में १६०० गज विस्तृत "बड़सागर" नामक एक ह्रद है, बहुतों का मत है कि इतनी बड़ी झील बंगाल में दूसरी नहीं है। यह भी सेन राजाओंकी एक पुरानी कीर्ति है, बड़सागर के अतिरिक्त चतुर्थांश कोस जाने पर कमलवाड़ी नामक एक ग्राम पड़ता है यहां पर गौड़ों की अधिष्ठात्री देवी 'गौड़ेश्वरी' का मंदिर है, पुण्यप्रदा द्वारवासिनी के नाम से यह स्थान प्रसिद्ध है, अभी तक प्रति वर्ष ज्येष्ठ मास में यहाँ मेला भी लगता है।

मुसलमानों के अधिपत्य के समय गौड़ बङ्गाल के सब नगरों से ज्यादा समृद्धिशाली था, उस समय गौड़ नगर उत्तर दक्षिण ७ मील—पूर्व—पश्चिम दो मील के लगभग था। कुल भूपरिमाण १३ वर्ग मील था, उपनगरों सहित यदि माप रक्खा जाय तो लगभग २० से ३० वर्ग मील तक विस्तृत था। यहां ६-७ लाख आदमियों का वास था। मिन्हाज की तबकात—ए—नासरी के मतानुसार ११९८ ई० में बखतियार पुत्र ने यहां शासन दण्ड स्थापन किया था, १२०५ ई० में उनकी हत्याकाण्ड के पश्चात् दिल्ली की अधीनता में मुसलमान नवाबों ने १२२६ ई० तक यहाँ रह कर मुसलमानाधिकृत गौड़-राज्य का शासन किया था, सम्राट बलवन की मृत्यु के पश्चात् नासीरउद्दीन बगरा खां ने यहाँ का स्वाधीन राज्य किया था, कुतबउद्दीन एबिक की मृत्यु के पश्चात हूसामउद्दीन ने अपना गियासउद्दीन नाम रखकर

Ac. Gunratnasuri MS　　　　　Jin Gun Aradhak Trust

स्वाधीनता से यहाँ का राज्य किया था, उन्हीं ने यहांकी फुलवाड़ी से एक कोस की दूरी पर दक्षिण की ओर देवकोट से कॉकजोल तक ऊँचा बन्ध बनाकर रास्ता बनाया था यह सड़क करीब २७ कोस तक गई है।

१३२६ ई० में दिल्लीश्वर मुहम्मद तुगलक ने लक्ष्मणावती पर आक्रमण किया था; उसी समय वहां के सुलतान बहादुरशाह को पुन: दिल्ली की आधीनता स्वीकार करनी पड़ी थी, इस समय में सुवर्ण ग्राम में और भी एक स्वाधीन राजधानी स्थापित हुई थी।

१३३९ ई० में हाजी इलियास स्वाधीन बन गये थे, दिल्ली के बादशाह फिरोजशाह ने उनके राज्य पर दो बार आक्रमण किया था; परन्तु कुछ कर नहीं सका, फिरोजशाह के आक्रमण करने के समय हाजी इलियास पाण्डुआ में रहते थे, उनके पुत्र सिकन्दर ने गौड़ को छोड़कर पाण्डुआ में राजधानी की थी, इसी कारण गौड़ में जन संख्या कुछ कम होगई थी।

१४४२ ई० में प्रथम महमूद ने पुन: आकर गौड़ में राजधानी स्थापित की थी, इसके पश्चात शेरशाह के आक्रमण काल तक बङ्गाल के मुसलमान राजा यहीं रहते रहे थे। शेरशाह के समय में गौड़ का दूसरा नाम जिन्नताबाद फिर हमायूं ने इसका नाम बख्ताबाद रखा था, इस समय में टेङ्गरा नामक स्थान में फिर राजधानी स्थानान्तरित हुई थी।

बङ्ग देशीय नवाबों का आपस में युद्ध होने के कारण धीरे २ गौड़ देश श्रीहीन हो गया था। और वहाँ की प्रजा भी घट गई

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

थी, इस पर भी अफगान वंशीय शेष स्वाधीन राजा दाऊदखां ने गौड़ राजधानी को नहीं छोड़ा था। १५७५ ई० में दाऊदखां के पूर्ण रूप से पराजित होने पर अकबर के सेनापति मुनिमखां ने गौड़ अधिकार किया था, यहींसे बङ्ग देशीय शासनदण्ड का मुख्य सदर बनाने की भी बात-चीत चली थी, मुग़लों के राज प्रतिनिधि सर्वदा गौड़ नगर में आकर रहते थे, पश्चात् १६३९ ई० में शाह सुजान ने जब राज महल में राजधानी स्थापित की, तब लोग धीरे-धीरे गौड को छोड़कर अन्यत्र जाने लगे। इस प्रकारसे बहुत दिनों का पुराना गौड़ महानगर क्रमशः जनहीन होगया।

गङ्गाके स्रोतसे इस नगर का पश्चिम भाग बिल्कुल धुल गया है। और दूसरे भाग में कदम-रसूल, कोतवाली दरवाजा, दाखिल दरवाजा, फिरोजमीनार, गुणमन्त, लत्तन, तांती पाड़ा और सोना नाम की बड़ी बड़ी मसजिदों तथा बड़ी बड़ी अट्टालिकाओं का भग्नावशेष अब भी पड़ा है। जो मुसलमानों की समृद्धि और बङ्ग देश के शिल्प नैपुण्य की पराकाष्ठा दिखला रहा है।

गौड़ का प्रसिद्ध दुर्ग बडी गङ्गा के किनारे के फुलवाड़ी किला और कोतवाली दरवाजेके बीचमें अवस्थित है। इसकी चारोंओर चार दीवारी और उसके पश्चात गहरी खाई है। यह प्राचीन ३० फुट ऊंची और नीचे १९० फुट चौडी है। खाई भर जाने पर २०० फुट विस्तृत होती है, प्राचीर पर अब बड़े २ जङ्गली पेड़ उत्पन्न हो गये हैं। खाई में काफ़ी सरकण्डे और बड़े २ मगर देखने में आते हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

किसी २ का अनुमान है कि प्रथम मामूद ने और उनके उत्तराधिकारियों ने यह दुर्ग बनवाया था, इस किले के दो प्रधान द्वार हैं, उनमें से उत्तर के प्रवेश द्वार का नाम दाखिल या सलामी दरवाजा है। यद्यपि इसका अधिकांश भाग नष्ट होगया है, पर तो भी जितना है उससे उस ईंट से बने हुए विलेकी कारीगरी का यथेष्ठ परिचय मिलता है।

किले के पूर्व के द्वार का नाम लक्षछिप्पि है, यहां की खोदी हुई लिपि से ज्ञात होता कि हिजरी सन ९१८ ई० सं० १५२१ में गौड़ाधिप हुसेन शाह ने उस दरवाजे को बनवाया था, उत्तर द्वार को जाते समय मध्य में चन्द—दरवाजा और नीम-दरवाजा नाम के दो प्राचीन द्वार मिलते हैं जो हि० स० ४७६ ई० स० १४६६ में सुलतान बारबक शाह के बनाये हुए हैं।

गौड़ के ध्वंस से आविष्कृत पारस्य भाषा के शिलालेख से ज्ञात होता है कि ६००—वर्ग गज ऊँचा फ़िरोज मीनार ८८५ हिजरी में, तांतीपाडा की मसजिद ८८० हि० में, नर्तन मसजिद ८८९ हि० में, गुणमन्त मसजिद ९३२ हि० में तथा बदसोना मसजिद और कोतवाली दरवाजा ६२२ हि० में बना।

फ़िरोज मीनार के दक्षिण-पूर्व में 'पियास बाडी' नाम की दो बड़ी पुष्करिणी हैं, इसका पानी खारा और बहुत ही गन्दा है। आइन—ए—अकबरी में ऐसा उल्लेख है कि प्रथम अपराधियों को केवल उसी तालाब का पानी पलाया जाता था, जिसको पीकर वह मृत्यु को प्राप्त हो जाते थे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गौड़ के पार्श्ववर्त्ती उप नगरों में भी मुसलमानों की काफी कीर्तियां मिलती हैं, उनमें से फिरोजपुर की (८९९ से ९२९ हि० की बनी हुई) छोटी सोना मसजिद और निजमतउल्ला की बारह द्वारी तथा सादुल्लपुर की (७५० की बनी हुई) शेख अखिसिराज की कब्र और (९४१ हि० की बनी हुई) फनफनियां मसजिद ही मुख्य है।

गौड़ नगर का अधिकाँश भाग जङ्गल हो गया था, थोड़े ही दिन हुए होंगे गवर्नमेंट ने उसे साफ कराने के अभिप्राय से वहां सामान्य कर में प्रजा बसा दी है, अब वहाँ खेत बोए जाते हैं और धीरे २ जगल भी साफ होता जाता है §

---

§ बिध्वंस्त गौड़ नगर का विस्तृत विवरण जानने के लिये निम्न लिखित्त पुस्तकें देखें।

H. Creighton's Ruins of Gaur,
Ravenshaw's Gaur
Martin's Eastern India Vol, II
Journal Bengal Asiatic Society Vol. XLI & XLII.
A. Cunnigham's A. S. R. Vol. XV, P. 39-76.
W. W. Hunter's I. G. Cal. Review Vol. LXIX, July.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गौड़ वङ्ग देशीय साम्राज्य

इतिहास अनुशोलन से पता चलता है कि जीवित गुप्त के मरने के बाद तृतीय कुमार गुप्त राजा हुये। इनका जीवन सुख से व्यतीत न हुआ क्योंकि गौड़ वंश से उन्हें अधिक कष्ट भोगना पड़ा था।

पश्चात् कुमारगुप्त के पोते माघगुप्त सिंहासन पर बैठे उन्होंने गौड़ राजासे मित्रता कर कन्नौज मौखरी घराने की राजधानी पर आक्रमण किया† ।

जब गुप्त सामराज्य का पतन होगया और प्रभाकर वर्द्धन की मृत्यु का समाचार मिला, उसी समय मालव से देव गुप्त ने सैन्य सहित कान्यकुब्ज की ओर धावा किया, और थोड़े ही परिश्रम से राज्य प्राप्त कर, राज्यश्री को लोहे से जकड़ कर कन्नौज के बन्दीघर में रक्खा‡ ।

उसी समय यह कुसम्वाद पाकर प्रभाकर वर्द्धन के ज्येष्ट पुत्र राज्य वर्द्धन ने दस सहस्त्र घुड़ सवार लेकर धावा किया, परन्तु उस विजय से भी शान्ति स्थापित न हो सकी और उस का एक प्रतिद्वन्दी खड़ा हो गया। यह प्रति द्वन्दी गौड़ाधिपति नरेन्द्र गुप्त (शशांक) थे इन्होंने अपने महलों में ले जाकर उस (राज्यवर्द्धन) को विश्वासघात से मार डाला ‖। यह

† वि, को, भा, ६, पृ, ४१० ।

‡ हर्ष चरित, उच्छ्वास ६, पृ, १८२-८३ ।

‖ हर्ष चरित्र, उच्छ्वास ६, पृ, १८६ ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

घटना वि० सं० ६६३ (ई० स० ६०६) में हुई। हर्ष वर्द्धन के दान पत्र में राज्यवर्द्धन का बौद्ध होना और देव गुप्त आदि अनेक राजाओं को परास्त करना तथा सत्य के अनुरोध से शत्रु के घरमें प्राण देना लिखा है §। सातवीं शताब्दी में नरेन्द्र देव भी मारे गये।

शशांक के पूर्व गौड़ाधिपतियों † का कोई उल्लेखनीय प्रमाण नहीं मिलता। इन्हीं शशांक को हर्षचरित्र प्रणेता बाण ने "गौड़ाधिपति, गौड़, गौड़ाधम, एवं गौड़ भुजग नामों से अभिदित किया है। सुएनं च्वांग ने इनको "कर्ण सुवर्ण राना" कहकर सम्बोधन किया है। इनकी राजधानी "कर्ण सुवर्ण" राढ़ देश (मुर्शिदाबाद से १२ मील व्यवधान) में रही। खोज से पता चलता

---

§ राजनो युधि दुष्टबाजिन इव श्री देव गुप्तादयं-
कृत्वा येन कशाप्रहारविमुखास्सर्वे समं संयताः
उत्खाय द्विषतो बिजित्य वसुधांकृत्वा प्रजानां प्रियं
प्राणानुज्झितवानरातिभवने सत्यानुरोधेन यः॥

Epi. I.ndi Vol. IV P. 210

† मञ्जू श्री मूलकल्प द्वारा ज्ञात होता कि शशांक ब्राह्मण था। गौड़ गुप्तों की अति निर्बलता के कारण यह शक्तिमान् हुआ। हर्ष ने शशांक पर चढ़ाई की! पुण्ड्रबर्द्धन के निकट उन दोनों में लड़ाई हुई जिसमें शशांक हार गया और हर्षबर्द्धन की शर्तोंको स्वीकार करके सन्धि कर ली। उसने अपने शेष जीवन भर पुण्ड्रबर्द्धन में रहना स्वीकार किया। इससे प्रगट है कि शशांक से प्रथम गुप्त गौड़ करके ही माने जाते थे। ना. प्र.प० भा. १४ पृ. ३५५

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

है कि यह कोई राजा के सामन्त थे। और सुअवसर पाकर राज्याधिकारी बन गये। एक सुवर्ण मुद्रा शाहबाद जिले के रोपस गढ़ में शशाँक‡ की पाई गई थी, परन्तु इस शशांक से वह मुद्रा छोटी थी इससे इसकी पुष्टि होती है। इस घटना के ४०० वर्ष बाद राज तरङ्गिणी में भी यह वर्णन है कि ललितादित्य ने सातवीं शताब्दी के अन्त में गौड़ राज्य को विजय किया था। और गौड़ राजा को अपने साथ काश्मीर लेगये ‡। उसके बाद आठवीं शताब्दी में काश्मीर राजा जयादित्य गौड़ राज्यमें आये। उस समय गौड़ के राजा जयन्त थे। और उनकी राजधानी पौण्ड्र वर्द्धन † में थी। राजतरंगिणी और सुएनच्याँग के भ्रमण वृतान्त

---

‡ गौड़ राजागण शशांक भी सम्भवतः गुप्त वंश के ही थे। बङ्गलार इतिहास भा, १; पृ. ८३। प्रा. मु. पृ; १८६।

‡ ललितादित्य काश्मीर के राजा ने गौड़ राजा को शपथ दे कर इनको अपने यहां ले चले, परन्तु मार्ग ही में परिहास पुर के निकट में उनका बध करा दिया, जब यह समाचार गौड़ पहुंचा तो यहां से योद्धा काश्मीर को रवाना हुये जहां पर मूर्तियां तोड़ी गई, युद्ध हुआ, और सभी एक२ कर मारेगये। इसके बाद ललितादित्य के पुत्र जयापीड़ ने आकर गौड़पुत्री के साथ शादी कर अपने ससुर को राज्याधिकारी बनाया। "गौड़ राजमाला"।

† पौण्ड्र—गौड़ देश बंगोत्तर वरेन्द्र भूमि।

पुण्ड्रक देश के एक राजा—यह जरासन्ध के सम्बन्धी थे। इनके पिता का नाम वासुदेव था, इस कारण यह अपने को वासुदेव

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

से ज्ञात होता है कि ई० सातवीं शताब्दी में यह गौड़ राज्य भी कई भागों में विभक्त था, परन्तु अठवीं शताब्दी में पौण्ड्र वर्द्धन के राजा जयन्त अपने दामाद की सहायता से समस्त गौड़ के अधिश्वर हुये थे। और उन्होंने एक छत्र होकर राज किया और आदिशूर‡ की उपाधि ग्रहण की थी।

कहा करते थे। राजसूय यज्ञ के समय भीम ने इन्हें परास्त किया था। श्रीकृष्ण के समान यह भी अपना रूप बनाए रहते थे। एक दिन नारद के मुख से श्रीकृष्ण की महिमा सुन कर यह बहुत बिगड़े और कहने लगे, मेरे अतिरिक्त और दूसरा वासुदेव है कौन? अतः इन्होंने एक लक्ष वीरों को लेकर द्वारका पर आक्रमण किया, उनके आक्रमणसे द्वारकावासी बड़े विह्वल हो गये। दोनों में घनघोर युद्ध आरम्भ हुआ, बहुत से यादव वीरों और बंगीय वीरों की जान गई। अन्त में कृष्ण के कौशल से पौण्ड्रक वासुदेव मारे गये।

हरिवंश, विष्णु पुराण, भागवत और ब्रह्म पुराण के अ० ६३ वासुदेव की दो पत्नियां सुतनु और नाराची थीं। सुतनु के गर्भ से पौण्ड्रक और नाराची से कपिल उत्पन्न हुए। —हरिवंश

‡ शूर—शूरयाति विक्रमातीति शर-अच यद्वा शरति-वीर्यां प्राप्नोतीति शु-शुसिचिमञां दीर्घश्च इति क्रन्, वीर, बहादुर, सूरमा, (महा. १। १०।६।४) सूर्य, सिंह, शुक्रादि वि०को० भा २३, पृ० १७४

प्राचीन कुलाचार्य हरिमिश्र की राढीय कारिका में लिखा है कि आदिशूर के वशंधरो ने बहुत दिनों तक गौड़ में राज्य किया था, यह सब ही ब्राह्मणीय धर्म्मावलम्बी थे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शूर वंश: का अभ्युदय देव खड्ग के समय में ही उत्तर राढ़ में या कर्ण सुवर्ण में आदिशूर का अभ्युदय हुआ। आदिशूर का प्रकृतनाम "जयन्त" था। वह कविशूर के पौत्र और माधव शूरके पुत्र थे। उन्हों ने थोड़े ही समय में पौण्ड्रवर्धन जय करके वहां राजधानी स्थापित की और ६५४ शाक में या ७३२ ई० में यथा रीति अभिषिक्त हुये।

महाराज आदि शूर के अभ्युदय काल में उनके अधिकार में नानाविध निरग्निक तथा जैन अथवा बौद्ध भावापन्न ब्रह्माणों का वास था। उनमें से राढ़ देश बासी सप्त शती ब्राह्मण लोग ही प्रधानथे। जबतक आदिशूर जीवत रहे, कनोजागत वैदिक ब्राह्मणों ने गौड़ मण्डलमें वैदिक सुयोग और सुविधा पाई थी, उनकी मृत्यु समय पश्चिमोत्तर गौड़ में और मगध में बौद्ध लोगों ने मिलकर बप्यट के पुत्र गोपाल को अभिषिक्त किया एवं उनके द्वारा फिर से बौद्ध धर्म्म की प्रधान्य स्थापनकी अयोजना होने लगी। किन्तु जब तक आदिशूर जीवत रहे, तब तक बौद्ध लोग कुछ भी न कर सके थे॥

आदिशूर गौड़ एवं बंग में ब्राह्मण्य धर्म की प्रतिष्ठा स्थापित करने वाला पराक्रान्त नृपति, बंगला कुल पञ्जिका नामक विभिन्न जातीय समाज के इतिहास से आभास मिलता है कि बढ़े हुए बौद्ध धर्म के प्रभाव को नष्ट कर वैदिक धर्म चलाने के लिए जिस वंशने प्रथम उपयुक्त आयोजना की उसी वंश के प्रथम

॥ वि० भा० २०, पृ ४७३

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

राजा आदिशूर नाम से प्रसिद्ध हुए, ६५४ शकाब्द को इन्होंने ही साग्निक ब्राह्मण बुला कर प्रथम अपने देश में बसाये, जिनकी प्रचलित कथा से ज्ञात होता है कि इसी राजा ने कन्नौज से† पांच ब्राह्मणों को बुलाकर ब्राह्मण्य धर्म को प्रतिष्ठा की थी, किन्तु यह बात सत्यता से बहुत दूर है जब कि निकट वर्ति भास्कर वर्म्मन के काम रूप देश में भिन्न भिन्न गोत्रों के ब्राह्मण रहते थे, ऐसे गांव सम्भवता विस्तः और करोतया नदी के मध्य में जहां पर काम रूप की पश्चिमी सीमा थी, गौडों के देश के निकट अवस्थित थे, जहां पर वर्तमान उत्तरी बंगाल का रंगपुर जिला है†

इससे यह निर्विवाद सिद्ध हो जाता है कि बुद्ध धर्म्म के समय से ब्राह्मणों के ‡कुछ परिवार अपरोक्त राजा आदिशूर के राज्य

---

† गौड़-क्षत्रिय इतिहास, पृ. ५७.

† रंगपुर के राजवंश में राजा गोपीचन्द का नाम पाया जाता है, यह पाल वंश के थे इनके गीत अब तक सर्वसाधारण तथा खास कर रंगपुर के योगी लोग वहुत गाते हैं।

बि० भा० १६७, पृ० ६८

‡ ई. सं. ६०४ वि. सं. ६६१ के लगभग राज्य वर्धन के बहनोई बैस वंशी राजा ग्राहवर्मा का मालवराजा द्वारा मारे जाने का सुन कर अपनी बहन का वदला लेने के लिये राज्य वर्धन को बोध भिक्षुक होने का विचार (जो इसके पिता प्रभाकर वर्धन के मर जाने से था) छोड़ राज्य भार ग्रहण कर १०००० सवारों की सेना लेकर मालवे के राजा पर चढ़ाई की,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

में भाग कर चले गये होंगे, क्योंकि इस राजा के यहां ब्राह्मणों की बड़ी प्रतिष्ठा थी* । तत्पर तद्वंशीय आदत्यशूर ✝ भी कहीं कहीं उत्तर राढी-कुल पञ्जी में आदित्यशूर के नाम से प्रसिद्ध हुये थे । पश्चात वैदिक धर्म का कई शताब्दियों तक गौड में ह्रास रहा, पाल वंश के बाद गौड़ाधिप सेन वंशीय बल्लाल सेन के पिता बिजय सेन ने अपने गौड़ाधिकार में वैदिक धर्म्म की प्रतिष्ठा कर आदिशूर नाम से कहाये, किन्तु वह आदिशूर न थे । आदिशूर वास्तव में शशांक थे, सेन वंशीयों के कई

जो थोड़े ही परिश्रम से उसे परास्त कर उसकी सम्पति लूट लाया । परन्तु उसी समय गौड़ (मध्य बङ्गाल) के राजा शशांक ने अपनी कन्या का विवाह इस के साथ करने का निश्चय किया फिर विश्वास घात कर इसे मार डाला । सम्भव है कि बोद्ध विरोद्ध शैव शशांक से वौद्ध धर्म्मावलम्बी राजा की विजय सहन न हुई हो इसी से उसने ऐसा किया । भा. प्र. रा., भा. २.

* Epi. Indi. Vol. XIX. P. 246.

✝ आदित्यशूर राढ़ देश के कोई शूर वंशीय प्रसिद्ध नरपति, इनका दूसरा नाम धरणाशूर था, सिंहेश्वर नामक स्थान में आदित्यशूर की राजधानी थी । प्रायः सन ८०१ से ६०५ ई० तक इन्होंने राज्य किया । इनके समय में भी अनेक ब्राह्मण और कायस्थ उत्तराढ़ में प्रतिष्ठित हुये थे ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लेखों द्वारा ज्ञात होता है कि यह लोग चन्द्रवन्शी थे§। सम्भवतः इसी कारण सेन रजपूत कहीं २ अपनेको गौड़, चन्द्रवन्शो बताते हैं जिनमें प्रधानता राजा मण्डी, सुकेत, राजपूताने तथा कश्तवार (काष्ठवाट) के राज वंश वास्तव में यह सेन वंशीय हैं, न कि गौड़ लोग आदिशूर जो शशांक वंशज है, सुर्य्यवंशो है। अतः इन गौड़ों का सम्बन्ध सूर्य्यवंश से मानना चाहिये। गोड़ राज्य पर अनेकों ने बीच बीच में हमले किये। जिसमें गुर्जर पति वत्सराज का नाम उल्लेखनीय है। उसने गौड़ औ बङ्गाल के

§ देवपाड़ा लेख J. S. B., Vol XXXIV. Part, P. 128, E. I. Vol. I. P. 307, बैरकपुरः– E. I. Vol. XV. P. 282., Bangali-Sahitya Vol. XXXI (1328 B. S.) P. 81, I. A. 1922 P. 157. V. R. S. Pub. III. P. 61. Insripion of Bengal Vol. III. मेहट्टीः–Banga-Sahitya-Prishad-patrika. Vol. XVII. P. 231 Bengli S. E. I. Vol. XIV. P. 109, I. B. Vol III. P.57, तारपन डिग्गीJ.A. S. B. Vol.XLIV.Part. P. 11,E. I. V. Appendix. No. 648. P. 87, E.I. Vol. XII P. VIII. अनोलियाः— एतिहासिक चित्र. भा. I. Part. 2. (राशाही १८६६)P. 77, J.A. S.B. Vol LXIX Part. P.62. मध्य नगरः–J. A.S.B. Vol V.P.471 I.B. Vol III. P. 109.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

राजाओं को विजय किया। गौड़ के राजा के साथ वाले युद्ध में उसका सामन्त मण्डोर का प्रतिहार कक्क× भी उसके साथ था। उस ने मुद्गगिरि (मुङ्गेर, बिहार) में गौड़ों के युद्ध में यश पाया था। जिस समय उसने मालवे के राजा पर आक्रमण किया उस समय दक्षिण का राष्ट्रकूट (राठोड़) राजा ध्रुवराज अपने सामन्त लाट देशके राठौड़ राजा कर्क्क§ सहित, जो इन प्रतिहारों का पड़ोसी था, मालव राजा की सहायता के लिये गया, जिस से वत्सराज को ध्रुवराज ने हरा कर मरु भूमि (मारवाड़) में भगा दिया, वत्सराज ने जो गौड़ राजा के दो श्वेत छत्र छीने थे, वह राठोड़ों ने उस से ले लिये। इतना ही नहीं किन्तु साथ ही

× जोधपुर से एक शिला लेख प्राप्त हुआ है। जो वि. स. ८९४ बाउक प्रतिहार राजा के समय का था, उसकी २४ वी पद्धति में लिखा है कि प्रतिहार वंश के सलुका राजा के प्रपौत्र कक्क ने मुद्गगिरि या मुङ्गेर में गौड़ों से युद्ध किया।
Epi. Indi. XVIII. P. 95ff., and J.R. A. S. 1894 P. PRS. WC. ,1906-07. PP. 30f. P.8.

§ गौड़ेन्द्रवङ्गपतिनिर्ज्जय दुर्व्विदग्धसद्गूर्ज्जरेश्वर दिगर्गलतां च यस्य। नीत्वा भुजं विहतमालवरक्षणार्थं स्वामी तथान्यमपि राज्य छ (फ) लानि भुङ्क्ते॥

Indi. Ant. Vol. XII. P. 160, J. A. S. B. Vol. VIII. P. 292 & Gaudajamala.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उसके दिगंत व्यापी यश को भी §। ध्रुव के तृतीय पुत्र गोविन्द राज ने वत्सराज को दबाने के लिये अपने भाई इन्द्रराज को दक्षिण गुजरात का सामन्त नियत किया था† इसी इन्द्रराज के पुत्र कर्कराज ने ही बड़ोदा का राज्य स्थापति किया.१३४शाका में गौड राज्य कमजोर होगया। इसके पश्चात गोपाल राजा ही एक प्रकार से उस राज्य का प्रथम राजा हुआ (अष्टम शताब्दी में) इसने समुद्र प्रयन्त अपने राज्य का विस्तार बढ़ाया, इन की मृत्यु के पश्चात इनका पुत्र धर्म्मपाल राज्य का अधिकारी हुआ। जो कार्य गौड पति शशांक न कर सके थे, उसे इन्होंने सहज ही में कर लिया। और भोज, मत्स्य, मद्र, कुरु, यदु, यवन, अवन्ति, गान्धार, कीर प्रभृति से अपनी प्रतिष्ठा प्राप्त की। इसने चौसठ वर्ष राज्य भोगा इन के राज्य का फैलाव पूर्व से समुद्र तक तथा पश्चिम में दिल्ली तक, उत्तर में जालन्धर होकर दक्षिण बिन्धया तक था। धर्म्मपाल की शादी राष्ट्रकुट तिलक श्री परबल§

---

§ हेलास्वीकृतगौड़राज्यकमलामत्तं प्रवेश्याचिराद् दुर्मार्गं
मरु मध्यम प्रतिव (ब) लैर्यो बत्सरो (रा) जं व (ब) लैः।
गौडीयं शरदिन्दुपादधवलं छत्र दूयं को (के) बलं,
तस्मान्नाहृत तद्यशोऽपि ककुभां प्रांते स्थितं तत्क्षनात्॥

† Ind. Ant. Vol. XI. P.157 & Epi. Indi. Vol. VI. P. 243. J. R. A. S., 1909. P. 252., 8–Epi. Indi. Vol. XVIII P. 104–5.

§ Indi. Ant. Vol. XXI, P. 250. हिन्दू भारत का उत्त्कर्ष पृ. २२४ में परवल का ही दूसरा नाम गोबिन्दराज लिखा है। इसकी कन्या धर्मपाल को ब्याही थी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दुहिता रणदेवी‡ से हुई थी (राष्ट्रकूट राजत्व काल ८६१ ।९। २७ खृष्टाब्द) धम्मपाल का राजत्व काल ८१६—८६४ तक) वत्सराज के पुत्र नागभट्टका अपने पिता की शत्रुता बस धर्म्मपाल से युद्ध करना अनिवार्य्य था और यह घटना घटी भी जिसमें धर्म्म पाल की विजय हुई। धर्म्मपाल की मृत्यु के पश्चात इनका पुत्र† देवपाल भी इन्हीं लोगों जैसा प्राक्रमी हुआ। इनके भाई जयपाल ने उत्कल पति को हरा कर अपना राज्य बढ़ाया। प्रागज्योतिष पति ने भी गौड़ाधिपति देवपाल के सामने नतमस्तक हो उन के राजत्व को स्वीकार किया। देवपाल ने हूण का गर्व चूर करके गुर्जर राजा का गर्व खर्व करके राज्य किया। दशम् शताब्दी के प्रारम्भ में देवपाल की मृत्यु के साथ साथ इनके राज्य की अवनिति भी होनी आरम्भ हुई। इनका राज्य हिमालय से लेकर

‡ 'Epi. Indi. Vol. XVIII. P. 305.

† देवपाल को भतीजा भी लिखा है J. A.S.B. Vol. XLVII. P.404., Indi.Ant. Vol. XL. PP.:305, God– PP. 56. किन्तु मुगेंर के देवपाल वाले लेख से ज्ञात होता है कि गोपाल की धर्मपाल जिसकी पत्नी रणदेवी जो राठौर प्रबल की पुत्री थी। उससे देवपाल उत्पन्न हुआ As. Res. Vol. I. PP. 123 ff., Indi Ant. Vol. XXI.PP. 254., Epi. Indi. Vol. XVIXI. .PP. 304., Gaudalekhamala PP. 35.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सेतुबन्ध रामेश्वर तक तथा समुद्र से लेकर दूसरे समुद्र तक था† ।

इसके बाद विग्रहपाल सिंहासन पर बैठे। इनकी रानी हैहय कुलोद्भव लज्जा नामकी थी❀। इनका ह्रास भी हुआ। इनकी मृत्यु बाद इन का पुत्र नरायणपाल उत्ताराधिकारी हुआ। यह बहुत ही न्याय हृदय और दयालु था। और उसने कहीं भी युद्ध नहीं किया। इनके बाद इनका पुत्र राज्यपाल राज्यारूढ़ हुआ। जिन्होंने अनेक धार्मिक कार्य किये। इनका विवाह राष्ट्रकूट राजतुङ्ग (जगतुङ्ग) की राजकुमारी भाग्यदेवी से हुआ✝। इनके बाद इनका पुत्र द्वितीय गोपाल राज्यारूढ़ हुआ। विग्रहपाल और इनके पुत्र पौत्र एवं पर पौत्र जब तक गौड़ में राज्य करते रहे उस समय जेजाभूक्ति (बुन्देलखण्ड) के चन्देल

---

† Gaudarajamala.

❀ J. A. S. B.Vol. XLVII. P. 404, Indi.Ant. Vol. XV. PP. 305 & Gaudalekhamala. PP. 56. किन्तु गौड राजामाला में इनकी शादी-का कानचूरी (कलचूरी) की राजकुमारी लज्जादेवो के साथ होना लिखा है।

✝ J. A. S. B. Vol.L XX. Pt. T. PP. 82, Vangiya–Sahitya–Prishad Patrika, Vol. V. PP. 164, Goudalekhamala, Vol. I. PP. 99 Epi. Indi. Vol. XIV PP. 326.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

राजा गण अपने प्राक्रम से अपनार ाज्य विस्तृत करते गये। इन लोगों को चन्देल राजा यशोवर्म्मा ने नीचा दिखाया। द्वितीय गोपाल के पुत्र द्वितीय विग्रहपाल के समय गौड़ राज्य की प्रतिष्ठा घट गई। द्वितीय विग्रहपाल के पुत्र महिपाल हुये।

नैपाल प्रचलित किम्वदन्ती अनुसार तिब्बत देश का नाम ही काम्बोज है। और यहीं से आकर इन राजा लोगों ने गौड़ाधिपति की उपाधि धारण की। (९६६ में इन्होंने शिव मन्दिर निर्माण कराया) काम्बोज वासी गौड़ लोगों ने ही आकर फिर ब्रजेन्द्र भूमि पर अधिकार किया और गौड़ाधिपति हुये। अब तक बङ्गाल में कुछ ऐसे लोग पाये जाते हैं। जिन की आकर्ति तिब्बतियों से मिलती है।

राजा महिपाल ने भी बहुत काल पर्यन्त राज्य किया। महिपाल ई० (१०२६) १०८३ तक जीवत थे। इन से चोल राज का युद्ध हुआ जिसमें कठिनतां से अपने राज्य की रक्षा कर पाये। इन्ही के समय में उत्तरापथ में तुर्कों का आक्रमण आरम्भ हो गया। यह अपने पुर्वजों शशाँक, देवपाल इत्यादि जैसे उच्च अभिलाषी नहीं थे।

इन का पुत्र नयपाल राजा हुआ इसने भी पिता की तरह राज्य का विस्तार बढ़ाया‡।

‡ A. S. I. R. Vol. III., J.A.S.B. Vol. LXIX. PP.193., Gaudalekhamala.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इनके पुत्र तृतीय विग्रहपाल राजा हुये। यह समर करने में बहुत बलवान औह चतुर थे। इन्होंने दिलाधिपति कलचूरि कर्ण को परास्त करके उसकी पुत्री के साथ पाणि ग्रहण किया। इन्हीं के राजत्व कालमें हैदराबाद स्थित "कल्याण" के चालुक्य राजा प्रथम आहवमल्ल सोमेश्वर के द्वितीय पुत्र विक्रमादित्य ने अपने पिता के आदेशानुसार गौड़ वंश को ध्वंस करने और दिगविजयी होने को आये-और अन्त में (१०४०-१०७१) तक गौड़ों पर विजयय भी पाई।

तृतीय विग्रहपाल अपने तीन पुत्रों को छोड़कर मर गये। महीपाल, सूरपाल, रामपाल,। महीपाल जब राजा हुये तो इन्हों ने कैवर्त वालों को हराकर बन्दी बना लिया और अपने कनिष्ट भ्राता रामपाल को राजा बनाया इनका केवर्तो से भीषण युद्ध हुआ

कुमारदेवी रामपाल की रानी के लेख से पाल राष्ट्रकूट और गाहडवाल इन तीनों कुलों के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है कि रामपाल के मामा अङ्ग देश के (मालिक) राजा महार, पीथी के राजा देवरक्षित को जीत कर रामपाल का उत्कर्ष कराया था‡।

---

‡ Epi. Indi. Vol IX. P. 319.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इन्होंने ग्यारहवीं के शेष तक १११४-११५४ तक राज्य किया —इन्होंने जयलाभकी खुशी में एक नूतन नगर का निर्माण किया जो कि रामा वती के नाम से प्रसिद्ध हुआ

रामपाल ने वरेन्द्र भूमि का निवारण करके कामरूप और कलिंग का राज्य अपने राज्यमें मिला कर गौड़ राष्ट्रका पुन:निर्माण किया—इनकी मृत्यु के पश्चात इनका ज्येष्ठ पुत्र कुमारपाल राज्य सिंहासन पर बैठा, इसने अपने कर्मचारियों के योग सम्बन्ध से कुछ काल तक गौड़ राष्ट्र को पतन से बचाया। इसके बाद इन का तृतीय पुत्र तृतीय गोपाल सिंहासन पर बैठा, यह शैशवकाल ही में स्वर्गवासी होगये और इसके स्थान पर रामपाल का मदन देवी के गर्भ से पैदा हुआ पुत्र मदनपाल राजा हुआ—इसने कोई वीरताका परिचय नहीं दिया। गोपालपालतृतीयका राजत्व काल १११४ ई० माना जाता है। मदनपाल का राजत्व काल (११३१) ई० माना जाता है इनके बाद गोविन्दपाल राजा हुए। ११६१ ई० में इनका राज्य क्षीण हो चुका था। विजयसेन के पुत्र बल्लाल-सेन द्वारा यह पदच्युत किए गए। यहीं से गौड़ वंश का ध्वंस हुआ। इसके बाद वर्मा वंश ने राज्य किया जिनमें आदिशूर, भवदेव प्रभृति राजा हुए। इसके बाद सेन वंश का प्रादुर्भाव हुआ। जिसमें विजयसेन, लक्ष्मणसेन ने राज्य किया इसके पश्चात तुर्कों का आधिपत्य हुआ और हिन्दुओं के राज्य का निशान मिट गया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाल राज्य वंशावली ।

दैत्य विष्णू
|
वप्यता
|
गोपाल† (७३५°)—(ई० सं० ७८०-८००
×
धर्मपाल (७८०°)—(” ८००-८२५

त्रिभुवनपाल देवपाल (८४°४) वाकपाल
| (८२५-८५०)|
(युवराज) राज्यपाल जयपाल
(युवराज) |
विग्रहपाल (सूर्यपाल)(८९२)(८५०-८७५)
‡ यक्षपाल | ×
|| नरायणपाल(९०६°)-(८७५-९००)
×
कुमारपाल (११३०°)मदनपाल राजपाल (९२४°) (९००-९२५)
| (११४०°) |
गोपाल (द्वि०)(११३६) | गोपाल (दूसरा) (९४४°) (९२५-९५०)
गोविन्दपाल | ×
११६१) विग्रहपाल (”) (९६°४) (९५०-९७६)
इंद्रद्युम्न |
| महीपाल (पहला) (९८०°) (१०२६)
महेन्द्रपोल |
(११८०°) नयपाल (१०३२) (१०३८)
विग्रहपाल (तृतीय) (१०५७°) (१०५९)

† J. A. S. B., Vol. XVVII. PL. I. P. 194.

‡ Indi. Ant. Vol. XXXVIV. PP. 1909. PP. 233; 244.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विग्रहपाल तृतीय

महीपाल (दूसरा) (१०८०) | शूरपाल (दूसरा) (१०८२) | रामपाल (१०८४) | यक्षपाल

रामपाल के पुत्र:

कुमारपाल ११३० — गोपाल (तीसरा) ११३६

मदनपाल (११४०) रानी चित्रमटिका — गोविन्दपाल ११६१ ई० लेख ११७५,७८ — महेन्द्रपाल ११८०, लेख ११९३ दन्त कथाओं से इन्द्रद्युम्न

लखनौती में सैन राज्य

सैन राजा यद्यपि बङ्गाल में तीन ही प्रधान हुए परन्तु इनके बारे में बहुत विवाद पैदा हो रहे हैं*। इतिहास लेखक व अन्य पुरातत्वज्ञ लोग इनको अपने २ मतानुसार भिन्न २ दृष्टि से देखते रहे हैं और मुसलमान इतिहासकारों ने तो अवश्य ही चन्द बातें, न्यूनाधिक की हैं। मुहम्मद बख्तियार खिलजी को ये लोग बहुत ही पराक्रमी और हिन्दू राजाओ को कायर व डरपोक बतलाते हैं। डा० डी० आर० भाण्डारकर के मतानुसार यह अनार्यों में से राजपूतों की उत्पत्ति बता देते हैं और इन लोगों का यह भी कहना है कि सैन परदेशी ब्राह्मण व पुजारी थे

* हिन्दू भारत का उत्कर्ष पृ० २१८।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बाद में क्षत्रिय हुए। वर्त्तमान बङ्गाल में सैन वैद्य होने के कारण यह लोग सैनों को वैद्य बताते हैं।

अतः हम लोगों को देखना चाहिये कि वास्तव में सैन कौन हैं? और इससे पहिले हम लोगों को सैन वंश का इतिहास लेना चाहिये जिसमें कोई वाद विवाद नहीं हैं:—

देव पाड़ा शिलालेख‡ में सैनों का प्रारम्भिक जीवनचरित्र स्पष्ट रूप से दिया है। इसमें निम्नलिखित बातें लिखी हैं कि सामन्तसैन नाम का एक दक्षिण का सरदार राजा कर्नाटक का मांडलिक था—इसने कर्नाटक को लूटने वाले अनेक शत्रुओं को स्वर्गधाम पठाया—जब यह वृद्धावस्था को प्राप्त हुआ तो बङ्गाल प्रान्त के अन्तर्गन्त एक काशीपुर नामक स्थान में छोटा सा राज्य स्थापित किया और गंगा तट पर आकर रहने लगा इस का एक पुत्र था जिसका नाम हैमन्तसैन था। यह बड़ा पराक्रमी व साहसी था—इसकी रानी यशोदादेवी के गर्भ से विजय सैन पैदा हुआ जो कि इस वंश का प्रभावशाली राजा हुआ। इसने कामरूप तथा गौड़के राजाओं को जीता और कलिंगके एक राजा को भी जीता। यह गौड़ राजा पश्चिम में बंगाल में मुंङ्गेर का पाल राजा है वह और कलिंग (उड़ीसा) के दो ही राजा इसके प्रतिस्पर्धी थे। विजयसैन हिन्दू धर्म का मानने वाला था तथा पाल राजा बौद्ध था। देवपाड़ा लेख में विजयसैन का

‡ Epi. Indi. Vol. P. 300.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बहुत से यज्ञ करना भी लिखा है। इस वंश का यह प्रथम राजा है जो कि स्वतंत्र था†। किन्तु इसकी स्वतंत्रता की तिथि जो कि १११९ ई० दी है वह ठीक न होगी, संभवतः वह पहले होनी चाहिये। लक्ष्मणसेन के आरम्भ का समय १११९ई०‡ लिखा है। अबुल फज़ल ने सैन संवत् का आरम्भ १०४१ शालिवाहन शक दिया है। और तिरहुत वासी सैन शकारम्भ १०२८ शक मानते हैं। कीलार्न§ के मतानुसार उनका ख्याल ग़लत है। यह प्रश्न हल होने पर भी सैन शक संवत में बहुत मतभेद हैं कि सामन्त हैमन्त और विजय इन तीन राजओं का राज्यारम्भ १०८०—११००—१११९—स्मिथ के मतानुसार है *

स्मिथ के कथनानुसार लक्ष्मणसेन ने अपने दादा विजयसेन के समय से संम्वत् शुरू किया। गौरीशंकर ओझा का कथन है कि विजयसेनके पुत्र बल्लालसेन ने मिथिला देश पर विजय प्राप्त करते समय अपने पुत्र लक्ष्मणसेन के जन्म का समाचार सुनकर सम्वत शुरू किया था †। श्रीयुत् डी० आर० बनरजी ने बल्लालसेन के एक नये लेखको छापते हुए लिखा है कि ÷ लक्ष्मणसेन ने

† Sir. Vecent. Smith.

‡ यह कीलाहार्न ने इस सम्वत् तथा शालिबाहन शक में दी हुई लेखों की तिथियों के आधार पर निश्चय किया है।

§ Epi. Indi. Vol. XIX. P. 7.

* Ancient Hist. of India. ED. 3. PP. 419.

† प्राचीन लेख माला पृ० ४२ और हिन्दी टाड पृ० ५३६।

÷ Epi. Indi Vol. XIV, P.169.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस शक को अपने राज्यारम्भ की स्मृति में शुरू किया। संभवतः ठीक हो क्योंकि : यह सम्वत आरम्भ करने की कल्पना के अनुसार भी है। लेकिन उस समय का मुसलमानी ‡ प्रमाण यह है कि बल्लालसेन की मृत्यु के समय उसकी स्त्री गर्भ से थी और लक्ष्मणसेन को गर्भस्थ में ही राजा घोषित कर दिया था। तबकात† ने जो असम्भ बातें लिखी हैं उनमें से यह भी एक है। कन्तु एतिहासिक दृष्टि से देखा जाय तो साबित होता है कि लक्ष्मणसेन का जन्म उसके पि बल्लालसेन की मृत्यु के पश्चात् १११९ ई० में हुआ और लक्ष्मण-सेन ने ही इस सम्वत् की स्थापना की। लक्ष्मणसेन के एक लेख में उसका राज्य ७ वर्ष करना लिखा है। और उसे परम वैष्णव कहा है। अगर उसने जन्म से ही राज्यत्व भोगा तो हम कह सकते हैं कि यह लेख सात साल के बाद उसके पालक ने लिखा है, लेकिन उसके बाप-दादा शैव थे, इसलिये यह भी शैव होना चाहिये, इसने अपने को परम वैष्णव किस तरह लिखा है। और कैसे होसकता है ? इसलिए यह सारी बातें अभी सन्देह जनक हैं। जब तक इन राजाओं का किसी लेख में शालि-वाहन शक, विक्रम सम्वत् का वर्ष एक साथ उल्लेख नहीं मिलता तबतक यह प्रश्न हल नहीं हो सकता। पाल राजाओं की तरह सेनराजाओंके दान लेखों में केवल दानो राजा का ही राज्य वर्ष

‡ तबकात-ए-नासरी।

† J. A. S. B. Vol. VII. Part. I. P. 7

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लिखा है। कई लेखकों ने लिखा है कि लक्ष्मणसेन एक ही था। और वह अपने ८० वर्ष की आयु में स्वर्ग सिधारा इन तिथियों की उलझनों को अलग करके जो कुछ सेन राजाओं का हम को मालूम हुआ है वह इस प्रकार है:—

पूर्व बंगाल का प्रथम स्वतंत्र राजा विजयसेन था और पश्चिम बङ्गाल में पाल लोग राज्य करते थे। विजयसेन का पुत्र बल्लालसेन अपने पिता से भी अधिक प्रभावशाली हुआ। उसने मिथिला देश को अपने राज्य में मिला लिया। मिथिला के कबर्तों ने बग़ावत करके दूसरे महीपाल अथवा रामपाल को कैद कर लिया था। इन कबर्तों का इसने जीता वह आस्तिक हिन्दू था। यह स्वयं विद्वान होने के कारण विद्वानों की बहुत प्रतिष्ठा करता था उसने एक ग्रंथ भी लिखा है जिसका नाम दानसागर है। दूसरे ग्रंथ को उसने लिखना शुरू किया था वह उसको मृत्यु तक पूरा न हो सका और उसके बाद उसके पुत्र लक्ष्मणसेन ने उसे पूरा किया। इस राजाने वृद्धावस्था में अपनी रानोके साथ प्राण जाकर प्राण त्याग किया ‡।

इसकी मृत्यु के पश्चात इसका पुत्र लक्ष्मणसेन गद्दी पर बैठा यह अपने पिता से भी ज्यादा पराक्रमी व साहसी था। सेन राजाओं की राजधानी गौर✝ थी। किन्तु लक्ष्मणसेन ने उसके

---

‡ गौरीशंकर, हरिचन्द ओझा

✝ यह नगर बङ्गाल के वर्तमान जिला मालदा में है यहां पर अब भी शाल चिन्ह दिखलाई देते हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पास ही एक दूसरा नगर बसाया था। जो कि लक्ष्मणावती (लखनौती) के नाम से प्रसिद्ध है। इसी भांति कर्ण को कर्णावती अथवा विक्रम के विक्रमपुर§ के अनुसार ही लक्ष्मणसेन ने भी अपने नाम का लक्ष्मणावती (लखनौती) नगर बसाया †। यह अनहिल बाड़ा के राजा जयसिंह और कल्याण के राजा विक्रमादित्य के तुल्य पराक्रमी था और उन्हीं की भांति अपना सम्वत् भी इसने चलाया। इस सम्वत्सर का वर्षारम्भ कीलहार्न के मतानुसार १११९ होता है। वर्तमान काल में भी उसके सम्वत् का उपयोग तिरहुत में किया जाता है।

अपने पिता की भांति यह स्वयं विद्वान और विद्वानों का आश्रयदाता था। इस के दरबार में बड़े बड़े विद्वान रहा करते थे। जिनकी रचित कीर्तियों का दिग्दर्शन इस काल रूपी सतह पर अब भी विद्यमान है, उनमें हलायुध, उमापतिधर, शरण, गोवर्धनाचार्य, धोरी, गीत-गोविन्द के लेखक जयदेव और श्रीधरदास प्रसिद्ध हैं। लक्ष्मणसेन स्वयं शैव मतानुयायी था। परन्तु अपने पूर्वजों के वैष्णव होनें की पुष्टि इसने अपने लेख में की है। हरि भक्ति करने वाले अर्वाचीन कवि उसके समय से बङ्गाल में होने लगे। इस के पिता बल्लालसेन से विवाह की कुलीनता और वर्णाश्रम की पुनः स्थापना की। भारतवर्ष की समाजिक अवस्था पर विचार करते हुये हमको लिखना पड़ेगा कि लक्ष्मण-

§ यह नगर प्राचीन राजधानियों त्रिपुर और कल्याण के समीप थे।

† Encyclopædia Bratanica (G) Vol. P. 75.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सेन बहुत ही विद्वान व उत्तम गुण संम्पन्न था। उसके राज्य में किसी के साथ अन्याय नहीं हुआ और वह राजा कर्ण के समान आदर्श पुरुष था*—इसके साथ ही साथ सम्पूर्ण बंगाल के सेन राजाओं की सत्ता नष्ट हो गई, और मुसलमानों ने देश को जीत लिया।

पूर्व बङ्गाल में चन्द्रसेन राजा १३वीं शताब्दी तक राज्य करते रहे। लक्ष्मणसेन के तीन पुत्र थे, माधवसेन, केशवसेन, विश्वरूप सेन यह तीनों विक्रमपुर में १३ वीं सदी के अन्त तक राज्य करते रहे। केशवसेन तथा विश्वरूपसेन के कुछ लेख भी मिलते हैं। अब हमको इस बात पर विचार करना चाहिये कि ये राजा किस जाति के थे। इसमें बहुतसे मतभेद हैं। डाक्टर भाण्डारकर का कथन है कि ये लोग ब्रह्म क्षत्रिय जाति के थे। लेकिन बङ्गाल के वैद्य उन्हें वैद्य कहते हैं। किन्तु यह स्पष्ट रूप से प्रगट है कि वह राजा आर्य क्षत्रिय और चन्द्रवंशी थे। न कि ब्रह्म क्षत्रि या वैद्य। क्योंकि देवपाड़ा के लेख द्वारा पूर्णतया स्पष्टीकरण हो जाता है कि सामन्तसेन का जन्म चन्द्रवंश में हुआ था। ऐसा शब्द केवल राजपूतोंके लिये ही प्रयोग किया जासकता है, ब्रह्म क्षत्रियों या वैद्यों के लिये नहीं। इसमें चन्द्र वंशी या सूर्य वंशी भेद रहा ही नहीं। श्री देवदत्त भाण्डारकर के कल्पित अर्थों के आधार पर स्मिथ ने जो अपने इतिहास में अनुमान के रूप से

* Sir Vecent. Smith's. Early. Histary P.400

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कल्पना लिख डाली कि यह बाहर से आये हुये लोगों के पुरोहित थे। जो बाद में हिन्दू समाज में सम्मिलित होने के प्रथम यह क्षत्रिय हो गये थे †। यह केवल उन की कल्पना ही है।

गोण्डा

अयोध्या के फैजाबाद विभाग का एक जिला। यह अक्षा० २६°४६ तथा २७°५० उ० और देशा ८१°३३ एवं ८२°४६ पू० में अवस्थित है। इसकी उत्तर की सीमा में हिमालय के नीचे की पर्वत श्रेणी है। पूर्व में बस्ती जिला, दक्षिण में फैजाबाद, बाराबाङ्की और घर्घरा नदी तथा पश्चिम में बराइच जिला है। भूमि का परिमाण २८१३ वर्ग मील है। लोक संख्या प्रायः १४०३३९३ है।

प्राचीन इतिहास श्रावस्ती नगर के पुरातत्त्व से सम्बन्ध रखता है। कूर्म और लिङ्ग पुराण में इस भूमि का गौड़ देश के नाम से उल्लेख मिलता है। सूर्य्य वंशीय श्रावस्ती के पुत्र वंशक ने यहां श्रावस्ती नगरी बसाई:—

श्रावस्तश्च महातेजा वंशकस्तु ततोऽभवत्।
निर्मिता येन श्रावस्ती गौड़ देशे द्विजोत्तमः॥ लिङ्ग० ६५।६४

ई० तीसरी शताब्दी में अयोध्या के राजा विक्रमादित्य के राजत्व काल में यह राज्य बहुत ही समृद्धिशाली था। परन्तु उनकी मृत्यु के कई वर्ष बाद गोण्डा का राज दण्ड गुप्त वंशीय राजाओं के हाथ में आया। ब्राह्मण और बौद्ध धर्म के परस्पर

† :Sir Vecent. Smith's. Hist. 3rd. Ed; P.420;

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

के विद्वेष से नगर क्रमशः नष्ट हो गया। चीन परिव्राजक जब श्रावस्ती और कपिलवस्तु नगर देखने के लिये आये थे, तब उन्होंने उक्त दोनों नगरों के बीच के रास्तों में जंगल देखा था। इतिहास के पढ़ने से ज्ञात होता है कि गोण्डा के जैन राजा सोहिलदेव ने गज़नी वाले मामूद के बहनोई सैयद सलार को सेना सहित मार डाला था। जिस समय महमूद गौरी ने भारत पर आक्रमण किया था, उस समय यहां डोम राजा राज्य करता था, और गोरखपुर के पास ही डोमनगढ़ उस की राजधानी थी। इस वंश के प्रसिद्ध राजा उग्रसैन ने महादेव परगणा के डुमरियादि ग्राम में एक छोटा सा किला बनवाया था। उन्होंने थारु, डोम, पासी आदि जातियों को बहुत से गांव दिये थे।

१४ वीं शताब्दी में यह डोम राज्य कलहंस, जनवार और बिसेन वंशीय क्षत्रियों के अधिकार में आगया था। कलहंस राजाओं ने हिसामपुर से ले कर गोरखपुर तक अपना आधिपत्य फैला लिया था। ऐसा प्रवाद सुनते हैं कि दिल्ली से किसी तुग़लक सम्राट की सेना के साथ कलहंसों के सरदार सहांजसिंह नर्मदा नदी की तरहटी से यहां आये थे। पीछे इनको सम्राट ने हिमालय और घर्घरा के मध्यवर्त्ती लोगों को वश करने के लिये नियुक्त किया। उन लोगों ने प्रथम वर्तमान के कुराशा नगर से २ मील दक्षिण की ओर जो कोयली जंगल है, उसे अपना निवासस्थान बनाया था। प्रत्येक सरदार को ३६ कोस की भूमि जागीर में मिली थी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गोण्डा—राजवंश के पतन के विषय में ऐसा प्रवाद है कि, राजा अचल नरायणसिंह किसी ब्राह्मण जमींदार की कन्या को बल पूर्वक हर ले गया। इससे उस कन्या के पिता ने उस अत्याचारी राजा के दरवाजे पर बिना कुछ खाये ही अपना प्राण त्यागा और मरते समय "छोटी रानी के गर्भस्थ पुत्र के अतिरिक्त समस्त राजवंश का शीघ्र ही नाश हो" ऐसा अभिशाप दे गये। उन का यह अभिशाप फल गया। शीघ्र ही सरयू नदी ने गढ़ और राज प्रसाद को डुबा दिया। राजा और उनका परिवार वर्ग भी उसमें डूब गया। केवल छोटी रानी सपुत्र बच गई। ई० १५वीं शताब्दी के अन्त में ऐसी दुर्घटना हुई थी। नभनोपाई के वर्तमान कलहंस जमींदार लोग उसी छोटी रानी के पुत्र के वंशज हैं। इससे कुछ दिन पहिले जनवारों ने इस जिले की तराई भूमि पर अधिकार जमाया था। सम्राट अकबर के समय में इकौना और उत्तरौला के सिवाय आयोध्या प्रदेश में और दूसरी जगह, दूसरा कोई बलवान सरदार नहीं था। बिसेन (विश्वसेन) और बन्धल गोत्री यह दो जातियाँ इस जिले के अवशिष्ट अंश में वास करती थीं। गोण्डा के बिसेन राजाओं की उन्नति के समय, उनका राज्य १००० वर्ग मील के लग-भग विस्तृत हो गया था, बलरामपुर, तुलसीपुर और मणिकापुर में भिन्न २ जनवार सरदार राज्य करते थे।

दिल्ली से आयोध्या तक स्वातन्त्र्य लाभ करनेसे प्रथम सआदत खां ने कुछ दिनों तक स्वाधीन भाव से राजत्व सुख का उप-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भोग किया था, बहराइच के प्रथम शासनकर्त्ता अजावल खां गोण्डा के राजा के विरुद्ध युद्ध करके मर गये थे। फिर गोण्डा राज के 'विरुद्ध में सेना भेजी गई थी। परन्तु इस बार भी उन्हों ने मुसलमानों को परास्त कर दिया था। इनके पश्चात लग-भग ७० वर्ष तक बिसेन राजाओं ने अपनी स्वाधीनता की रक्षा की थी और पैत्रिक राज्य गोण्डा, पहाड़पुर, दिगसार, महादेव और नवाबगञ्ज इन पांच परगनों का स्वतन्त्रता पूर्वक शासन किया था, अन्त में राजा इन्द्रपत्सिंह की मृत्यु होने पर पाण्डे ब्राह्मणों की सहायतासे गुमान सिंह ने गोन्डा राज्य पर आधिपत्य जमाया था, बलरामपुर और तुलसीपुर के सरदारों ने बहुत युद्ध करके अपनी स्वाधीनता की रक्षा की थी। परन्तु मणिकापुर और भवनिपाई के सरदार नाजिम को कर दिया करते थे। गोण्डा और उत्तरौला राज्य के अधःपतन के समय में नाजिम ने सहज में कर वसूल होने के लिये कुछ ग्रामों में जमींदार नियुक्त किये थे। उत्तरौला और गोण्डा के पदच्युत राजाओं ने उक्त जमींदारी को पाने के लिये प्रयास किया था। उत्तरौला के राजा ने कई वर्ष पश्चात जमींदारी पाई थी। और गोंडा के विसेन राजा विश्व-म्भरपुर की जमींदारी पाकर उसका उपभोग करने लगे थे। इस लिये वहां की प्रजा बहुत ही असन्तुष्ट थी। पीछे अयोध्या जब अंग्रेजों के हाथ में आई तब यह सब अत्याचार दूर हो गये। सिपाही विद्रोह के समय गोण्डा के राजा पहिले अंग्रेजो के पक्ष में थे। पीछे फिर विद्रोही होकर लखनऊ में जाकर अयोध्या

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

की बेगम के साथ मिल गये थे । बलरामपुर के राजा राजभक्त बन रहे थे । उन्होंने गोण्डा और बहराईच के कमिश्नर विङ्गफिल्ड तथा अन्यान्य अंग्रेज कर्मचारियों को अपने गढ़ में आश्रय दिया था, गोण्डा राजा ने सेना सहित जाकर यमनाई के तीरवर्ती लम्पती नगरी में तम्बू गाड़े थे। थोड़ा सा युद्ध करके यह अपनी सेना सहित नेपाल की ओर भाग गये थे—जमींदारों ने इस राज विद्रोह के लिये क्षमा मांगी थी। परन्तु गोण्डा राज और तुलसीपुर की रानी के क्षमा न मांगने पर उनका राज्य जब्त कर लिया था। फिर सरकार ने वह राज्य बलरामपुर के महाराज दिग्विजय सिंह को और शाहगञ्ज के महाराज सर मानसिंह को बांट दिया था।

श्रावस्ती

यह एक प्राचीन जनपद और उस की राजधानी है इस का दूसरा नाम श्रावस्ती पुरी है। वर्तमान काल में इस समृद्धिशाली नगर का ध्वंस विशेष मात्र द्रष्टिगोचर होता है। और लोग इसे सोत महेहेत कहते हैं। यह स्थान बौद्ध धर्म्मावलम्बियों का एक पवित्र तीर्थस्थान है। एक समय भगवान् बुद्ध ने यहाँ आकर वास किया था। अध्यापक लासेन ने बहुत गवेषणा के पश्चात् वर्तमान सहेत महेत से थोड़ी दूरी पर नदी के उस पार प्राचीन श्रावस्ती पुरी का अवस्थान निर्णय किया है। प्रत्नतत्वविद् डाक्टर कनिङ्हम उसकी मीमांसा एवं चीन परिव्राजकों का ग्रन्थानुसरण करके सहेतमहेत ग्राम को ही प्राचीन श्रावस्ती पुरी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बताते हैं। यहां जो विस्तृत ध्वंस्त स्तूप राशि गिरी पड़ी दृष्टि गत होती है वही श्रावस्तीपुरी की प्राची कीर्ति और वैभव का एक मात्र निदर्शन है *।

हरिवंश ग्रन्थ पढ़ने से ज्ञात होता है कि सूर्य वंशीय राजा युवनाश्व के पौत्र श्राव तनय श्रावस्तने गौड़ देश में पहले श्रावस्ती की स्थापना की थी। पश्चात् राम पुत्र लव ने अयोध्या के बाद यहां श्रावस्तीपुरी नाम से दूसरी राजधानी बसाई। विष्णु पुराण के तीतृय अंश में महाभारत बनपर्व में, पाणिनि ४।२।९७ एवं भागवत पुराण के ९।६।२१ श्लोक में श्रावस्ती राजधानी का उल्लेख है। त्रिकाण्ड के अन्त में (२।१।१३) श्रावस्ती का दूसरा नाम धर्म्मपत्तन लिखा है। वासवदत्तादि प्राचीन संस्कृत ग्रन्थ में श्रावस्ती का वर्णन है। और उसके बीच होकर बहने वाली राप्ती नदी ऐरावती के नाम से उल्लिखित है। बौद्ध पालि ग्रन्थ विनच में श्रावस्ती नाम पाया जाता है। इस समय भी राप्ती का पार्वत्य स्रोत पालि नाम के बदले अहिरवती के नाम से परिचित है।

शाक्य बुद्ध के जन्म से प्रथम श्रावस्ती नगर की समृद्धि कैसी थी, उपरोक्त ग्रन्थों में उसका कोई विशेष परिचय नहीं है। किन्तु रामायण से इतना पता चलता है कि उस समय यह उत्तर कौशल की राजधानी थी। भगवान् श्री रामचन्द्र जी आपनी मृत्यु के समय यह जनपद अपने पुत्र लव को दे गये थे। शाक्य

* A. S. R. VOL. I. P. 330— 32

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बुद्धके जन्मकालमें अर्थात् ई० सन्से ६०० वर्ष पहले श्रावस्तीपुरी मध्यदेश के ६ प्रसिद्ध जनपदों के मध्य एक गिनी जाती थी। उस समय इस के दक्षिण में साकेत (अयोध्या) और पूर्व में वैशाली (वाराणसी और बिहार) राज्य विद्यमान थे। इस से अनुमान किया जाता है कि वर्तमान बहराईच, गोण्डा, बस्ती तथा गोरख-पुर जिले ले कर प्राचीन श्रावस्ती जनपद संगठित था।

बुद्धदेव के आविर्भाव के समय श्रावस्ती नगर में व्यापार पूर्ण रूप से उन्नत था, उस समय अरणेमि ब्रह्मदत्त के पुत्र प्रसेनादित्य यहाँ राजा थे। उनकी वर्षिका नामी क्षत्रिय स्त्री से जेत नामक धर्म्मशाल पुत्र का जन्म हुआ। इसके पश्चात् कपिल वस्तु निवासिनी मल्लिका नामी ब्राह्मणी कुमारी से पाणिग्रहण किया, उस के गर्भ से क्रमशः बिरुदक और सागरसान्दोलित नामक पुत्र उत्पन्न हुये। इन दोनों में से जेष्ठ विरुदक ने बौद्ध धर्म्म बिरोधी बन शाक्य कुल के संहार करने का सङ्कल्प किया। सागरसान्दोलित ने तिब्बत का राज्य पाया, बौद्धोंने वहाँ बौद्धधर्म का प्रचार किया था।

चीन परिव्राजक फाहियान ५ वीं शताब्दी में यहां आया तो केवल ध्वसरूप श्रावस्ती के खण्डर देखे, फिर अर्द्धशताब्दी के पश्चात् यूयनसियांग ने श्रावस्ती में पदार्पण किया तो उस समय सभी रही सही अटालकायें विध्वस्त हो गई थीं। वहां लोगों का पता नहीं था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ई० सं० ४ शताब्दी के पूर्व बौद्ध सम्राट अशोक ने इसे बौद्ध कीर्तियोंसे सजा दिया था, और समृद्धिशाली भी बनाया था। ई० सन् से पूर्व २ शताब्दी यहां बौद्धाचार्य रोहुलता का स्वर्गवास हुआ था। आगे फाहियान के गमन पर्यन्त कोई विरोध परिचय प्राप्त नहीं।

प्रथम और द्वितीय शताब्दी में यह नगरी गान्धार के शक राजाओं के आधीन रही, कारण कि राजा कणिष्क और हुविष्क के राजत्वकालमें उत्कीर्ण शकाब्द संख्या-समन्वित शिलालिपि युक्त बुद्ध मूर्ती ही उसका प्रमाण है। पश्चात् स्थानीय किसी राज वंश का प्रभाव फैला था। सिंहलीय बौद्ध ग्रन्थ के प्रमाण से जाना जाता है कि राजा खिराधार और उनके भ्रातुष्पुत्रों ने यहां २७५ से ३१२ ई० तक राज्य किया था, इसके प्रश्चात् यह नगरी मगध के गुप्त राजाओं के आधीन चली गई। महाराजा द्वितीय चन्द्रगुप्त को ही यूएनच्वांग श्रावस्ती के राजा विक्रमादित्य बता गए हैं। यह बौद्धों के शत्रु थे। इनके राजत्व काल में ही ब्राह्मण धर्म्म के मन्दिरों का निर्माण हुआ था।

गुप्त वंशी राजाओं के समय बौद्ध धर्म बिल्कुल लोप नहीं हो गया था। वहां की ईंटें गले हुये सिक्के, भग्न मूर्तियों के मध्य गुप्ताक्षरों में तथा ७ वीं और ८ वीं शताब्दी के देवनागरी अक्षरों में उत्कीर्ण बौद्ध का सुविख्यात धर्म मन्त्र "धर्महेतु प्रभाव इत्यादि" खोदा हुआ देखा जाता है, अधिक आश्चर्य का विषय यह है कि १७ वीं शताब्दी की उत्कीर्ण एक पत्थर की शिलालिपि

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाई गई है। उससे हमें वहाँ के उस समय के बौद्ध प्रभाव का परिचय मिलता है। वह शिला फलक ११७६ सम्वत् (१२१९ ई०) में उत्कीर्ण हुई थी, उसमें लिखा है कि श्रावस्तव्य वंशीय विल्व-शिव के पौत्र तथा जनक के पुत्र विद्याधर ने बौद्ध पतियों के निवासके लिये जावृष नगर में एक सँघराम निर्माण किया था। जनक गाधिपुर (कन्नौज) के राजा गोपाल के मन्त्री थे। पीछे उनके पुत्र विद्याधर भी राजा मदन के मन्त्री हुये। किम्वदन्ती है कि यह अजावृष नगर सूर्य वंशी राजा मानधाता द्वारा प्रतिष्ठित हुआ था।

महम्मुद गौरी के भारत विजय के बाद श्रावस्ती का कोई उल्लेख नहीं पाया जाता।

कुरुक्षेत्र

"कुरु कृष्टंक्षेत्रम्" एक अति प्राचीन पुण्यस्थान है। प्राचीन काल में कुरु नामक राजर्षि ने उक्त क्षेत्र को कर्षण किया था, जिस कारण इस स्थान का नाम कुरुक्षेत्र विख्यात हुआ *।

बलराम ने कहा कि:—हे तपोधन! यह श्रवण करने योग्य मेरी वासना है कि कुरु राजा ने यह क्षेत्र कर्षण किया था। आप कृपा करके मुझे सुनाइये।

महर्षि ने कहा—"पूर्व काल कुरु के क्षेत्र का कर्षण आरम्भ करने से देवराज इन्द्र ने उनके समीप उपस्थित हो कर पूछा—

* पुरा च राजर्षि वरेण धीमता, बहूनिवर्षाण्यमितेन तेजसा।
प्रकृष्टमेतत् कुरुणा महात्मना, ततः कुरुक्षेत्र मितीह पप्रथे॥
भारत, शल्य, ५३।२

राजन् ! आप किस अभिप्राय: से यत्न के साथ इस भूमि को कर्षण करते हैं" । कुरु राजा ने उत्तर दिया—"हे पुरेन्द्र ! हमारे भूमि कर्षण करने का यही उद्देश्य है कि जो व्यक्ति इस क्षेत्र में कलेवर परित्याग (देहत्याग) करेंगे वह अनायास हो स्वर्ग लोक पहुँच सकेंगे । सुरराज उनका उपहास कर चल दिये । इधर कुरु राज इन्द्र के उपहास से अणुमात्र भी दु:खित न हो, एकान्त मन से भूमि कर्षण में संलग्न रहे । परिशेष में सुरराज भूपति के दृढ निश्चित अध्यवसाय दर्शन से भीत हो । देवों को उनकी इच्छा कह सुनाई, फिर वह देवों के वाक्यानुसार कुरुराज के निकट उपस्थित हो कहने लगे कि—हे राजर्षि ! अब तुम्हें कष्ट करने की आवश्यकता नहीं, जो इस स्थान में आलस्य शून्य हो अनाहार प्राण परित्याग करेगा अथवा युद्ध में वीरता पूर्वक प्राण त्यागेगा, वह निश्चय ही स्वर्ग को पहुँचेगा" "कुरुराज इन्द्र के वाक्य सुन सन्तुष्ट को क्षान्त (शान्त) पड़े और सुरपति ने भी सुरलोकको प्रस्थान किया‡ ।

कुरुक्षेत्र भारतीयों का एक तीर्थस्थान है । उक्त स्थान में देव यज्ञ करते थे† । जिसे अविमुक्त क्षेत्र और देवताओं की यज्ञ भूमि तथा ब्रह्म सदन का वर्णन भी आर्य ग्रन्थों ने इसी पवित्र स्थान के लिये करा है§ । महाभारत में उसका दूसरा नाम

---

‡ भारत, शल्य ५३ अ०

† कुरुक्षेत्रऽमीदेवा यज्ञं तन्वते । शतपथ ब्राह्मण ४।१।५।१३

§ अविमुक्तं वै कुरुक्षेत्र देवनां देवि यजनं सर्वेषां भूतानांब्रह्म सदनम् ।
जाबालोपनिषद ॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

समन्तपञ्चक भी कहा है कि हे राम ! समन्तपञ्चक ब्रह्मा की उत्तर वेदि कहाता है । वहां पहले महावरप्रद देवगणने यज्ञ किया था §। और वह पवित्र कुरुक्षेत्र की जो सीमा वर्णन की है कि दृषद्वती के उत्तर और सरस्वती नदी के दक्षिण पुण्यप्रद राजर्षि सेवित ब्रह्मवेदी कुरुक्षेत्र है । जहाँ पर निवास करने वाला प्राणी मरने पर स्वर्गवास करता है । तरन्तुक, अरन्तुक, रामह्रद और मचक्रक समुदाय का मध्यवर्ती स्थान ही कुरुक्षेत्र समन्तपञ्चक है ‡ । किन्तु किसी किसी पुरातत्वविद् के विचारानुसार ब्रह्मवेदी कुरुक्षेत्र मनुप्रोक्त ब्रह्मावर्त देश है ♣ । किन्तु यह नितान्त भूल है । मनुसंहिता में स्पष्ट उल्लेख है कि ब्रह्मावर्त और कुरुक्षेत्र एक नहीं क्योंकि इसकी सीमा का यह उल्लेख है कि सरस्वती और दृषद्वती देवनदी का जो अन्तर आता है वह ब्रह्मावर्त कहाता है । ब्रह्मावर्त देवनिर्मित देश है ‡ फिर कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पञ्चाल और

---

§ प्रजापतेरुत्तर वेदिरुच्यते सनातनो राम समन्तपञ्चकम् ।
समीजिरे यत्र पुरा दिवौकसो वरेण सत्रेण महावर प्रदाः ॥

महाभारत शल्य, ५३।१

‡ तरन्तुकारन्तुकयो र्यदन्तरं रामह्रदानाञ्च मचक्रकस्य च ।
एतत् कुरुक्षेत्र समन्तपञ्चकम् ॥ (बनपर्व, ८३, २०५, २०८.)

♣ Archeaological. Survey. Report. Vol. II, P. 215; Vol. XIV. P. 87.

‡ सरस्वती दृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम् ।
तं देवनिर्मितं देशं, ब्रह्मावर्त प्रचक्षते ॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शूरसेनक ब्रह्मर्षि देश है‡। ब्रह्मर्षि देश ब्रह्मावर्त से कुछ भिन्न है†।

महाभारतकार ने कुरुक्षेत्र के अन्तर्गत ब्रह्मावर्त तीर्थ का उल्लेख करते हुये भी पुनः दूसरे अध्याय में कुरुक्षेत्र से ब्रह्मावर्त न्यारा कहा है॥। प्रथम ब्रह्मावर्त अतिक्रम करके यमुनाप्रभव नामक पुण्यतीर्थ को जाते थे¶। महाभारत का शेषोक्त ब्रह्मावर्त ही मनुप्रोक्त ब्रह्मावर्त से मिलता है। वह कुरुक्षेत्र के आगे उत्तर की ओर अवस्थित है। कुरुक्षेत्र का परिमाण द्वादश योजन (४८ कोस) है†।

कुरुक्षेत्र-तीर्थ-निर्णय के मत से कुरुक्षेत्र के ईशान कोण में तरन्तुक‡ वा रत्नयक्ष, वायुकोण में अरन्तक, नैऋत्य कोण में

‡ कुरुक्षेत्रञ्च मत्स्याश्च पाञ्चालाः शूरसेनकाः।
एव ब्रह्मर्षि देशो वैब्रह्मावर्तादनन्तरम्। मनु अ० ०२ श्लो ०१७-१८

† अभिधान चिन्तामणि; ४।१-१६

॥ महा० बन० ८३.५२

¶ ब्रह्मावर्त ततो गच्छेद् ब्रह्मचारी समाहितः।
अश्वमेधमवाप्नोतिस्वर्गलोकञ्चगच्छति॥
यमुना प्रभवं गत्वा समुपस्पृश्य यामुनम्।
महाभारत बन० ८४, ४३-४४

† धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्रं द्वादश योजनावधि। हेमचन्द्र कोश ४।१६

‡ तरक्कारवयोर्यदन्तरं रामह्रदानासचक्रकस्य च।
कोई २ ऐसा पाठ कहते हैं किन्तु महाभारत के किसी मुद्रित प्रति व हस्त लिखित में उक्त पाठ नहीं है। A. S. R. Vol. II. P. 218.,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कपिल (उसी के पास राम ह्रद) और: अग्निकोण में चक्रक अवस्थित है। महाभारतोक्त तरन्तुक का वर्तमान नाम रत्नयख है। वह सरस्वती नदी के तीर पिपरी नामक स्थान के निकट है। अरन्तुक को वर्तमान काल में "बहेर" कहते हैं यह कैथल के उत्तर-पश्चिम में है।

रामह्रद और कपिलातीर्थ जींद से ढाई कोस वर्तमान रामराय नामक स्थान में है।

मचक्रक--वर्तमान "सींख" नामक स्थान का नाम है। वह पानीपत और जीन्द के बीच में है।

उपरोक्त स्थान निर्देश के अनुसार कुरुक्षेत्र का भू परिमाण इस प्रकार निर्णय होता है:—

पूर्व में तरन्तुक से मचक्रक	२७ कोस
पश्चिम में रामह्रद अरन्तुक	२० ,,
उत्तर में अरन्तुक से तरन्तुक	२० ,,
दक्षिण में मचक्रक से रामह्रद	१२ ,,

कुरुक्षेत्र महात्मय के मतानुसार उक्त सीमा के मध्य ३६५ तीर्थ हैं। महाभारत में भी कुरुक्षेत्र के अनेक तीर्थों और पुण्य स्थानों का विवरण उल्लेख है। अब अकारादि क्रम से उन का संक्षिप्त वर्णन निम्नाङ्कित लिखते हैं:—

१ अग्नि तीर्थ--वर्तमान में अग्निकुण्ड विख्यात है। यह थानेश्वर से सात कोस पश्चिम पृथूदक नामक प्राचीन नगर के पार्श्व में अवस्थित है। हुताशन भृगु के शाप से भयभीत हो वहां

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

से भी गर्भ में जाकर छिपे थे। अग्नि तीर्थ में स्नान करने से अग्निलोक प्राप्त होता है†।

२ अमरहृद—थानेश्वर से पांच कोस दक्षिण-पश्चिम चन्द्-लान ग्राम में अवस्थित है। वर्तमान काल में उसे अमरकूप कहते हैं। वहाँ स्नान और इन्द्र की पूजा करने से स्वर्गलोक प्राप्त होता है§ ।

३ अम्ब जन्म—कुरुक्षेत्र महात्म्य में "धन्यजन्म" नाम से वर्णित है वह सकरतीर्थ के पूर्व है, अम्बाजन्म का वर्तमान नाम दोरखेगी है। वहां स्नान और प्राणत्याग करने पर तीर्थ यात्रियों को नारदेव के आदेशानुसार उत्तम लोक प्राप्त होता है‡ ।

४ अम्बु मती—एक क्षुद्र नदी है। वह वृद्ध यमुना की एक शाखा मानी है। कुरुक्षेत्र प्रदी[illegible] में उसे अंशुमती लिखा है। संभवतः वही ऋग्वेदोक्त अंशुमती हो हो। दस सहस्र सैन्य सह-द्रुत गमन कारी कृष्ण अंशुमती नदी तीर अवस्थान करते थे†।

रामानुज ने रामायण के टीका में अंशुमती का सूर्य तनाया का अर्थ प्रयोग किया है‡ । सूर्यतनया यमुना का एक

---

† शल्य, ४७, १६, बन ८३, १३८।

§ बन पर्व ८३। १०५

‡ बन पर्व ८३--८१।

† अथ द्रप्सी अंशुमतीमतिष्ठदियानः कृष्णो दशभिः सहस्रैः।
ऋक् संहिता ८। ६६। १२॥ साम १।४।१।४।१॥

‡ रामायण, २। ५५। ६

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

नाम है। सम्भवतः बूढ़ी यमुना की एक शाखा रहने से अंशुमती भी यमुना के तुल्य विवेचित की हो। ऋक् और सामवेद के मतानुसार इन्द्र ने वहां कृष्णासुर विनाश किया था। इसी के तीर महाभारतोक्त सुतीर्थ का तीर्थ भी है† ।

५ अरन्तुक—कुरुक्षेत्र के एक द्वार की भाँति विख्यात है उसका वर्तमान नाम बाहेर है। वह थानेश्वर से १८ कोस पश्चिम सरस्वती नदी के तीर अवस्थित है। वहीं कुण्ड भी है। अरन्तुक तीर्थ में स्नान करने से अग्निष्टोम का फल प्राप्त होता है‡ ।

६ अरुणातीर्थ (अरुणासङ्गम) —अरुणा और सरस्वती नदी के सङ्गम पर पहेवा नगर से डेढ़ कोस उत्तर —पूर्व उच्च-स्तुप के पास अवस्थित है। नमुचि का शिरश्छेदन करने से इन्द्र ब्रह्महत्या में लिप्त हुये थे। ब्रह्मा के आदेश से वह अरुणा—सरस्वती सङ्गम में यज्ञानुष्ठान पूर्वक स्नान और दान करके पाप से छूट गये* । वहां स्नान करने पर तीर्थ यात्री, ब्रह्महत्या के पाप से मुक्त होते हैं† ।

---

† बन पर्व २८ । ५५

अपक्रम्य तु देवेभ्यः सोमो वृत्र भयार्दितः ।

नदीमंशुमती नामाभ्यतिष्ठत्कुरून्प्रति ॥ बृहद्देवता ६ । ६१८

‡ बन ८३ । ५१

* शल्य ४३ । ३७ । ४५

† बन ८३ । १५० ।

७ **अर्ध कील**—अरुणातीर्थ के पास है। उसका वर्तमान नाम समुद्रक तीर्थ है। दर्भि ने विप्रगण के मङ्गलार्थ चार सागरों का जल मंगा कर अर्धकील तीर्थ निर्माण किया था† ।

८ **अश्वनीतीर्थ**—वर्तमान असनीपुर थानेश्वर से आधकोस पश्चिम औजसघाट के पास अवस्थित है। इस तीर्थ में अवस्थान करने से रूपवान होता है* ।

९ **अहस्तीर्थ**—आपगा का विवर्ण देखो।

१० **आदित्यतीर्थ**—सारस्वती तीर्थ के पास है। वहां जैगीषव्य और देवल ने यज्ञानुष्ठान करके महाप्रभाव लाभ किया था‡ । आदित्य तीर्थ में स्नान करके सूर्य देव की अर्चना करने से कुल उद्धार और आदित्य लोक लाभ करते हैं ǁ ।

११ **आपगा**—वर्तमान छुटंग नदी की एक शाखा है। ऋग्वेद में आपगा नदी 'आपया' नाम से वर्णित की गई है† कि—हे अग्नि ! सुदिन लाभ के लिए इलारूप पृथिवी के उत्कृष्ट स्थान में तुम्हें रखते हैं। तुम दृषद्वती, आपया और सरस्वती

---

† वन ८३। १५३।

* वन ८३। १७

‡ शल्य ५९।

ǁ वन ८३। १८४,

† निस्त्वा दधेवरआ पृथिव्यइलायास्पदे सुदिनत्वे आहुां। ऋ ३। २३। ४

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तीरस्थ मनुष्यों के गृह में धनशाली हो दीप्ति प्रदान करो।

आश्चर्य का विषय है कि उक्त मन्त्र में 'पृथिवी' 'इलास्पद' 'सुदिन' 'अहं' 'दृषद्वती' 'मानुष' 'आपया' और सरस्वती जो कई शब्द हैं, महाभारत में उनके प्रत्येक नाम का एक स्वतन्त्र तीर्थ के नाम पर वर्णन हुआ है—

उसके अनन्तर लोक प्रसिद्ध 'मानुष' तीर्थ को जाना चाहिये। कितने ही कृष्ण मृग व्याध के शर से पीड़ित हो वहां स्नान करने को गए और स्नान करते ही मानुषत्व को प्राप्त हुए। मानुषतीर्थ में स्नान करने से मनुष्य विशुद्धात्मा और सब पाप विमुक्त हो स्वर्ग लोक में प्रशंसा पाता है। मानुषतीर्थ से एक कोस पूर्व सिद्ध सेवित 'आपगा नदी' † है फिर रुद्र कोटी, रुद्रकूप और रुद्रह्रद में

---

† "ततो गच्छेत राजेन्द्र ! मानुषं लोक विश्रुतम् ।
यत्र कृष्ण मृगा राजन् ! व्याधेन शरपीडिता: ॥६४
विगाह्य तस्मिन् सरसि मानुषत्वमुपागता: ।
तस्मिन् तीर्थे नर: स्नात्वा ब्रह्मचारी समाहित: ॥ ६५
सर्ब पापे विशुद्धात्मा स्वर्ग लोके महीयते !
मानुषस्य तु पूर्ब क्रोशमात्रे महीयते ! ॥ ६६
आपगा नाम बिख्याता नदी सिद्ध निषेबिता ।"
रुद्रकोट्यां तथा कूप ह्रदेकु च महिपते ! ।
इलास्पदञ्च तथैव तीर्थे भारतसत्तम् ॥ ७६
तत्र स्नात्वा चैयित्वा च देव तानि पितनथ ।
न दुर्गत्यिवाप्रोति वाजपेयञ्च बिन्दर्ति ॥" ७७

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

'इलास्पद तीर्थ' अवस्थित है। वहाँ स्नान करके देवता और पितृगण अर्चना करने से मनुष्य कभी दुर्गति को प्राप्त नहीं होता और वाजपेय यज्ञ का फल लाभ करता है। 'अहं' और 'सुदिन' दोनों लोक प्रसिद्ध तीर्थ हैं। वहां स्नान करने से सूर्यलोक प्राप्त होता है। (वर्तमान पेहवा नगर के पूर्व और आपगा नदी के पश्चिम मानुषतीर्थ है। पेहवा के पास शेरगढ़ नामक स्थान में इलास्पद तीर्थ और सोहन नामक स्थान में सुदिन तथा अहस्तीर्थ अवस्थित है।)

१२ इन्द्र तीर्थ—थानेश्वर और पेहवा के ठीक मध्यस्थल में सरस्वती नदी के तीर पड़ता है। उसका वर्तमान नाम इन्द्र वारि है। देवराज इन्द्र ने वहाँ यज्ञानुष्ठान किया था। इसी से उसे इन्द्र तीर्थ कहते हैं। वह सर्व पाप नाशक है। उपरोक्त तीर्थ में इन्द्र ने भारद्वाज कन्या श्रवावती की भक्ति परिक्षा ली थी ‡।

१३ इलास्पद—आपगा के विवरण में देखो।

१४ एकरात्रतीर्थ—थानेश्वर के पास है। वहां नियत सत्य वादी हो एक रात्रि यापन करनेसे ब्रह्मलोक लाभ करते हैं †।

"अहश्च सुदिनश्चैव द्वेतीर्थे लोक विश्रुते।
ततोः स्नात्वा नर व्याघ्र! सूर्य लोकमवाप्नुयात्॥" ९६

बन-पर्व० ८३

‡ शल्य पर्व ४८। १८

† बन पर्व, ८३। १८३

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

१५ **एकहंसतीर्थ**—किसी किसी के मतानुसार वर्तमान डुण्ढिग्राम में यह 'एकहंसतीर्थ, अवस्थित है। वहाँ स्नान करने से सहस्र गोदान का फल प्राप्त होता है† ।

१६ **ओघवती**—प्रत्नतत्वविद् कनिङ्हाम के विचारानुसार यह आपगा नदी का दूसरा नाम है। उसे वर्तमान काल में छुटङ्ग कहते हैं। किन्तु महाभारत में आपगा और ओघवती दोनों न्यारी न्यारी नदियों के नाम से वर्णित हैं* । कुरुराज ने कुरुक्षेत्र में यज्ञ किया। उस यज्ञ में सरस्वती महर्षि वशिष्ठ कर्तृक समाहूत हुई। उन्होंने उपरोक्त पवित्र स्थान में जाकर ओघवती नाम धारण किया था‡ ।

१७ **औशनसतीर्थ**—सरस्वती उत्तर कूल पहेवा नगर से कुछ दूर पर है। उसका दूसरा नाम कपालमोचनी है । उपरोक्त तीर्थ में दैत्यगुरु शुक्र ने तपस्या की थी, इसीसे उसका नाम औशनस पड़ गया है पूर्वकाल में रामचन्द्र ने एक राक्षस का मस्तक छेदन इसी स्थान पर किया था। वही छिन्न मस्तक महर्षि

---

† वन पर्व ८३

* ,, ,, ८३ । ६७, शल्य, ३८ । २८

‡ "करोश्च यजमानस्य कुरुक्षेत्रे महात्मनः ।
आजगाम महाभागा सरित श्रेष्ठा सरस्वती ॥
ओघवत्यपि राजेन्द्र वशिष्ठेन महात्मना ।
समाहूत दिव्यतोया सरस्वती ॥ शल्य ३८।२७-२८

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

महोदर की जङ्घा में संलग्न हुआ। महर्षि के उस तीर्थ को जाकर अवगाहन करते ही जङ्घालग्न मस्तक स्खलित हो सलिल में छिप गया। राक्षस का कपाल विमुक्त होने से उसका नाम 'कपाल मोचन' प्रसिद्ध हुआ। वहां आर्ष्टिषेण ने कठोर तपस्या की और सिन्धुद्वीप, देवापि तथा विश्वामित्र ने ब्राह्मणत्व प्राप्त किया ‡। वर्तमान कुरुक्षेत्र माहात्म्य में आर्ष्टिषेण प्रभृति उक्त ऋषियों के नामानुसार एक एक विभिन्न तीर्थों का उल्लेख किया गया है। कपाल मोचन के चारों ओर ही उक्त सकल तीर्थ अवस्थित हैं।

१८ **कन्यतीर्थ**—'वृद्ध कन्यक तीर्थ' कहाता है।

१९ **कन्याश्रम**—सन्निहतीतीर्थ के पास है। वहाँ ब्रह्मचारी हो तीन रात्रि उपवास करने से तीर्थ यात्री शत कन्या पाते और स्वर्ग गमन करते हैं *।

२० **कपालमोचन**—औशनस तीर्थ के विवरण में है।

२१ **कपिलातीर्थ**—सूर्यतीर्थ और श्रीतीर्थ के समीप है। उसको वर्तमान काल में 'केलत' कहते हैं। वहां स्नान करके देवता और पितृगण की अर्चना करने से सहस्र कपिला दान का फल प्राप्त होता है §।

‡ शल्य पर्व, ४०-४१ अ०

* वन पर्व, ८३।१९०

§ ,, ,, ८३।४६

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

२२ कलसीतीर्थ—वर्तमान काल में भी यह कलसी के ही नाम से विख्यात है। उसका जल स्पर्श करने से अग्निष्टोम यज्ञ का फल प्राप्त होता है ‡।

२३ काम्यक वन—कामोद ग्राम के पास है। उसे वर्तमान काल में 'काम बन' कहते हैं। काम्यक वन अनति दूर सरस्वती प्रवाहित है। साधारण लोग उसे 'द्रोपदी का भण्डार' कहते हैं। प्रवाद है कि द्रोपदी वहाँ पाञ्च पाण्डव को रन्धन करके खिलाती थी*।

काम्यक वन में कामेश्वर महादेवी का मन्दिर भी बना हुआ है।

२४ कायशोधन—आज कल 'कासोयन' के नामसे प्रसिद्ध है। वहां स्नान करने से शरीर शुद्ध होता है। पुनः मृतक प्राणी को उत्तम लोक की प्राप्ति होती है*।

---

‡ बन पर्व ८३। ७६

* पाण्डवास्तु बने वासमुद्दिश्य भरतर्षभाः।
प्रययुर्जाह्नवीकूलात् कुरुक्षेत्रं सहानुगाः॥
सरस्वतीदृषद्वत्यौ यमुनाञ्चनिषेव्यते।
ययुर्वने नैव वनं सततं पश्चिमां दिशम्॥
ततः सरस्वती कूले समेषु मरुधन्वसु।
काम्यकं नाम ददृशुर्वनं मुनिजन प्रियम्" ॥ बन-५। १-४

* बन ८३। ४२

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

२५ कारवपन—प्लक्षप्रस्रवण से थोड़ी दूर पर है। बलराम सरस्वती के प्रवाह और प्लक्षप्रस्रवण तीर्थ दर्शन करके कारवपन गए थे। वहाँ उन्होंने स्नान-दान एवं देवता पितृगण तर्पण करके ब्राह्मणों सहित एक रात्रि वास किया था‡।

२६ काशीश्वरतीर्थ—वर्तमान 'कासान' के नाम से प्रसिद्ध है। इस तीर्थ में स्नान करने से शरीर निरोग होजाता और मृत्योपरान्त प्राणी ब्रह्म लोक प्राप्त करता है॥।

२७ किन्दत्तकूप—वर्तमान में 'वास्थलीं' नामक ग्राम के पार्श्व में है। उक्त कूप में तिलप्रस्थ प्रदान करने से ऋण मुक्त होते और परम सिद्धि लाभ करते हैं ♣।

२८ किन्दान—कलसी तीर्थ के पास में है। उसी के पार्श्व में किंजप्यतीर्थ भी है। उभय तीर्थ में दान और जय करने से अशेष पुण्य प्राप्त होता है ‡।

२९ कुरुतीर्थ—वर्तमान में 'कुरुध्वज' नाम से प्रसिद्ध है। वह तैजसतीर्थ के पूर्व में है। वहां ब्रह्मचारी और जितेन्द्रिय हो स्नान करने पर सभी पापों से मुक्त हो ब्रह्मलोक प्राप्त करते हैं *।

---

‡ शल्य—५४। १०—१२

॥ वन पर्व—८३।५६

♣ बन पर्व—८३। ६७

‡ बन पर्व—८३। ७८

* बन पर्व—८३। १६७

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

३० कुब्जतीर्थ—वर्तमान 'वनपुर' स्थान में है। इस तीर्थ में स्नान करने से अग्निष्टोम का फल प्राप्त होता है✝।

३१ कुलम्पुन—केथल से २ कोस उत्तरमें करान नामक ग्राम में अवस्थित है। इसको वर्तमान काल में "कुल तारण तीर्थ" के नाम से कहते हैं। (कैथल और किमांच ग्राम के पास कुलोद्धार नामक और भी दो तीर्थ हैं।) कुलम्पुन में स्नान करने वाले का कुल पवित्र होजाता है ‡।

३२ कृतशौच—यह हंस तीर्थ के पास है इस में स्नान दान करने से अनन्त फल पाते हैं *।

३३ कपिलकेदार तीर्थ—ओघवती नदी के तीर थानेश्वर से ५॥ कोस दक्षिण- पश्चिम में है। आज कल 'कपिल मुनि तीर्थ' के नाम से प्रसिद्ध है। उसमें स्नान करने से ब्रह्मलोक प्राप्त होता है ‡।

३४ कोटि तीर्थ—दो हैं। प्रथम पञ्चनद के अन्तर्गत है। जिसमें स्नान करने वाले को अश्वमेध के समान फल प्राप्त होता है। द्वितीय गङ्गाह्रद के पास है। उसमें स्नान करने से बहु सुवर्ण

✝ बन पर्व—८३। १०६

‡ बन पर्व ८३। १०३

* बन पर्व ८३। २०

‡ बन पर्व ८३। ७२

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लाभ करते हैं ‖ ।

३५ कौबेर तीर्थ—थानेश्वर के पास है। उसका वर्तमान नाम 'कुवेर' प्रसिद्ध है। महात्मा कुवेर ने वहां तपस्या की थी। फिर वहीं वह धनाधिपति और महादेव के सखा भी हुए। कौवेर में कुवेर का एक मनोहर कानन भी है। समस्त देवगण वहां कुवेर को अभिषेक करके पुष्पक रथ प्रदान किये थे ‡ ।

३६ कौशिकीसङ्गम—कौशिकी और दृषद्वती का सङ्गम स्थान है। वह करनाल से साढ़े चार कोस पश्चिम वर्तमान बालू नाम के ग्राम में है। कौशिकीसङ्गम में स्नान करने वाले मनुष्य सकल पापों से मुक्त होते हैं † ।

३७ गङ्गाह्रद—नागदू से तीन कोस दक्षिण पश्चिम दुसेन नाम के ग्राम में है। जिसका वर्तमा नाम 'गङ्गातीर्थ' है। इसमें स्नान करने से स्वर्गलोक प्राप्त होता है ‡ ।

३८ गोभवन— वर्तमान काल में यह 'गोहन, नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ यथा क्रम स्नान दानादि करने से सहस्त्र गोदान का फल प्राप्त होता है।

‖ वन पर्व ८३ । १७, २०१

‡ शल्य ४७ । २२-२४

† वन पर्व ८३ । ६४

‡ „ ८३ । १७७

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

३९ जयन्ती—जीन्द का नाम है। वहां सोमतीर्थ है। सोमतीर्थ में स्नान-दान करने वाले अनन्त फल प्राप्त करते हैं *।

४० तैजसतीर्थ—वर्तमान में इसका नाम 'औजसघाट' है। वह थानेश्वर से आध कोस पश्चिम की ओर है। उक्त तीर्थ में ब्रह्मा ने देव और ऋषियां सहित कार्तिकेय को देव सेनापति के पद से विभूषित किया था। वहां स्नान दान करने वाले को अनन्त फल प्राप्त होते हैं ‡।

४१ दधीचतीर्थ—थानेश्वर के पास है। यह तीर्थ अति पवित्र और पवित्र कारी है। यहीं पर तपोनिधि अङ्गिरा ने जन्म ग्रहण किया था। यहां स्नान-दान करने से अश्वमेध यज्ञ के तुल्य फल प्राप्त और सरस्वती लोक की भी प्राप्ति होती है। दधीच तीर्थ ही वेदोक्त शर्यणावत सरोवर ज्ञात होता है† कि प्रति द्वन्द्वि रहित इन्द्र ने दधीच ऋषि अश्वाकृति मस्तक की अस्थि द्वारा वृत्रगण को ९९ बार बध किया था। गिरिगह्वर में लुक्कायित दधीचि के अश्वमस्तक को ढूण्ढने पर इन्द्रने शर्यणावत्

---

* बन पर्व ८३। ६४

‡ ,, ८३

† "इन्द्रो दधीची अस्थभि वृजाणम् प्रतिष्कुत:।
जघान नवतीर्नव" ऋक् १। ८४। १३
"इच्छन्नश्वस्य यच्छिर: पर्वतेष्वमश्रितं।
तद्विदच्छर्यणावति" ऋक् १। ८४। १४

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

में पाया था * । महाभारत से ज्ञात होता है कि दधीच के पास ही सोम तीर्थ भी है ‡ । जिसके लिये लिखा है कि तीर्थ सेवीयों को सोम तीर्थ में स्नान करने से सोमलोक प्राप्त होता है । इसके आगे महात्मा दधीचि का पुण्यतम तीर्थ है ।

ऋक्वेद में भी इसका उल्लेख है कि जो सकल सोम रस अति दूर वा अति निकट अथवा शर्यणावत् प्रस्तुत हुए हैं ऐसा जो शर्यणावत् में सोम है, उसे वृत्त संहार कारी इन्द्र पान करें ✝ ।

सम्भवतः शर्यणावत् के पास जिस स्थान में सोम रहा अथवा जहाँ इन्द्र ने सोम पान किया हो महाभारत में उसी स्थान को सोमतीर्थ की भांति उल्लेख किया गया हो ।

---

* "शर्यणा नाम कुरुक्षेत्रे वार्तिनो देशाः ।
तेषाम दूरभवं सरः शर्यणावत्" सायणाचार्य ऋ भा० ८ ।६ ३९
शर्यणावद्ध ह्वै नाम कुरुक्षेत्रस्य जघनाधेसरः स्यन्दते ।"
शाट्यायन ब्राह्मण

‡ "सोमतीर्थे नरः स्नात्वा तीर्थ सेवी नराधिपः ।
सोमलोकमवाप्नोति नरो नास्तयत्र संशय : ॥
ततो गच्छत धर्मज्ञ दधीचस्य महात्मनः ।
तीर्थ यात्री पुण्यतमं राजन् पावनं लोक बिश्रुतम्" ॥
बन० ८३ । १८६–८७

§ "ये सोमसः परावति ये अर्वावति सुन्विरे ॥
ये बादः-शर्यणावति" ॥ ऋ० ६ । ६५ । २२

✝ शर्यणावति सोममिन्द्रः पिवतुवृत्रहा" ऋक० ६ । ११३ ।१

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

४१ दशाश्वमेधतीर्थ—सलोन ग्राम के पास है। इस में स्नान करने वाले व्यक्ति सहस्त्र गोदान का फल प्राप्त करते हैं * ।

४२ दृषद्वती—वर्तमान में इसका नाम 'राखी, प्रसिद्ध है इसमें स्नान करने से अग्निष्टोम और अतिरात्र यज्ञ का फल प्राप्त होता है ✝ ।

४३ देवीतीर्थ—मधवटी के विवर्ण में लिखा है

४५ नरकतीर्थ—थानेश्वर से एक कोस दक्षिण, सरस्वती नदी के तीर है। इसको वर्तमान में 'नरकतारी' या 'अनरद' कहते हैं। ब्रह्मा नारायण प्रभृति देवगण सहित निवास करते हैं। तीर्थसेवी नरक तीर्थ-में स्नान करके दुर्गति से मुक्त हो जाते हैं यहां विश्वेश्वर, नारायण और रुद्र पत्नी की अर्चना करने से विष्णु लोक की प्राप्ती होती है ‡ ।

४४ नागतीर्थ—पृथूदक से थोडी दूर पर सपिदान ग्राम में है। इसमें स्नान करने तथा अर्चना करने से नाग लोक की प्राप्ति एवं अग्निष्टोम यज्ञ के समान फल प्राप्त होता है ४।

---

* वन पर्व ८३ । १४

✝ ,, ८३८६

* ,, ८३ । ७१-७२

‡ ,, ८३ । १४

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

४६ नागोद्भेद—थानेश्वर से पांच कोस दक्षिण की ओर है। उसका वर्तमान नाम 'नागदू' प्रसिद्ध है। नागोद्भेद के लोग कहते हैं कि वहां भीष्म का सत्कार हुआ था। इस में स्नान करने वाले प्राणी नागलोक को प्राप्त करते हैं ‡।

४७ पञ्चनदतीर्थ—यह तीर्थ वर्तमान के हाट नामक ग्राम में है। इस तीर्थ में यथा नियम स्नानादि करने से अश्वमेध यज्ञ के तुल्य फल प्रप्त होता है ♠।

४८ पञ्चवटी—यह तीर्थ थानेश्वर से एक कोस दक्षिण-पश्चिम की ओर 'कापर' ग्राम में है। इन्द्रिय-संयम और ब्रह्मचर्य अवलम्बन करके पञ्चवटी में वास करने वाले ब्रह्मादि उत्कृष्ट लोक को प्राप्त होते हैं। यहां योगेश्वर नामक शिव है। इनकी अर्चना करने वाले की इच्छा पूर्ण होती है ※।

४९ पवनह्रद—यह तीर्थ छुटङ्ग नदी के तीर पर है। इसको वर्तमान में 'पवनाव' कहते हैं। उपरोक्त ह्रद में यथा नियम स्नान करने वाले वायु लोक और उसका अनिर्वचनीय सुख भोगते हैं ‡।

५० पाणिखात—छुटङ्ग नदी के तीर वर्तमान फरल ग्राम

---

‡ बन ८२। ११३

♠ ,, ८३। २६

※ ,, ८३। ६१–६२

‡ ,, ८३।४

में है। उपरोक्त तीर्थ में स्नान कर पितृलोक का तर्पण और देवतागण की अर्चना करने वाले को अग्निष्ठोम एवं अतिरिक्त राजसूय यज्ञ का फल प्राप्त कर तीर्थयात्री ऋषिलोक का गमन कर सकता है† ।

५१ परीणाह—यह कुरूक्षेत्र के अन्तर्गत एक अति प्रचीन पुण्यस्थान, कात्यायनश्रोत सूत्र में भी इसका उल्लेख मिलता है।

५२ पारिप्लव—यह मङ्कण से दक्षिण को ओर कुछ अन्तर पर है। यह त्रिभुवन विख्यात है। उस में स्नान दान करने वाले अग्निष्ठोम और अतिरात्र का फल प्राप्त करते हैं‡।

५३ पुण्डरीकतीर्थ—यह फरल ग्राम से तीन कोस दक्षिण को ओर है। उसका वर्तमान नाम "पुण्डरी" प्रसिद्ध है। शुद्ध चित्त हो इसमें स्नान करने से अन्तरात्मा पवित्र हो जाता है*।

५४ पुष्करतीर्थ—यह पृथूदक के समीप है। वर्तमान इसका नाम 'पुष्करवेदो' है। उपरोक्त तीर्थ में स्नान कर पितृलोक और देवतागण की अर्चना करने वाले तीर्थ यात्री चरितार्थ हो अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त कर सकता है। महात्मा परशुराम ने पुष्कर तीर्थ बनाया था ‡।

† बन ८३।८८-८९

‡ बन ८३।२१

* बन ८३।२१

‡ बन पर्ष ८३। २५

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

५५ पृथिवीतीर्थ—यह तीर्थ पारिप्लव तीर्थ के समीप है। उसमें स्नान करने से सहस्र गोदान का फल प्राप्त है* ।

५६ पृथूदक—वर्तमान में इसका नाम 'पहिवा' है। उपरोक्त तीर्थ सर्व लोक विख्यात है। उसमें स्नान करके पितृ-लोक और देवता गण की अर्चाना करना चाहिये। स्त्री किंवा पुरुष ने अज्ञान या ज्ञान पूर्वक जन्म जन्मान्तर में जिस किसी पाप कार्य का अनुष्ठान किया है, उपरोक्त तीर्थ में गमन व स्नान करने मात्र से वह विनष्ठ होते हैं। और अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त कर तीर्थ सेवो स्वर्ग लोक जा सकता है। इस मही मण्डल में कुरुक्षेत्र अतिशय पुण्यमय स्थान है। सरस्वती कुरुक्षेत्र से अधिक पुण्यमयी है। सरस्वती का तीर्थ सरस्वती नदो से भी अधिक पुण्य जनक है। पृथूदल समस्त तीर्थों के मध्य श्रेष्ठ-तम है। उस में शरीर त्याग करने से प्राणी फिर जन्म मरण से मुक्त हो जाती है। सन्तुकुमार और व्यासदेव ने कहा है कि पृथू-दक के समान कोई तीर्थ नहीं! भूमण्डल में वह पवित्र और पुण्यमय है। नितान्त दुराचार करे हुआ व्यक्ति भी स्नान मात्र से स्वर्ग को गमन कर सकता है ‡ ।

५७ फलकीवन—वर्तमान इसका नाम 'फरल' प्रसिद्ध है। यह देवगण की तपस्या का स्थान है † ।

---

* बन, ८३ । १३

‡ ,, ८३ । ४०-४७

† बन पर्व—८३ । ८५

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

५८ मङ्कणक—यह वर्तमान काल में 'मङ्कना' नाम से प्रसिद्ध हैं। वहाँ सप्त सारस्वत तीर्थ है।

५६ मधुवटी—यह तीर्थ फरल ग्राम से दो कोस दक्षिण की ओर है। इसे वर्तमान में "मधुवन" या "मोहन" भी कहते हैं। उपरोक्त स्थान में देवी तीर्थ है, जिसमें स्नान करने से देवी, यात्री पर सन्तुष्ट होती है। पुनः सहस्त्र गौ दान करने का फल प्राप्त होता है ‡।

कूर्म पुराण के मतानुसार मधुवनतीर्थ को गमन करने से इन्द्र का अर्धासन प्राप्त होता है †।

६० मधुस्रवतीर्थ—यह तीर्थ भी पृथूदक के समीप ही है। उसमें स्नान करने से सहस्त्र गोदान का फल प्राप्त होता है ‖।

६१ मातृतीर्थ—स्नान करने वालों के सन्तति और श्री वृद्धि होती है ‡।

६२ मानुषतीर्थ—आपगा तीर्थ में वर्णित है।

६३ मिश्रकतीर्थ—यह पाणिखात से अनति दूर पर है। व्यासदेव ने ब्राह्मणों के उपकारार्थ उपरोक्त स्थान में समस्त तीर्थ

---

‡ बन पर्व—८२ । ६३-६४

† कूर्म पुराण २।३५।९

‖ बन पर्व—८३ । ४०

‡ बन पर्व—८३ । ५७

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मिश्रण कर दिये। जिससे उसका नाम मिश्रक विख्यात हुआ। अकेले मिश्रक तीर्थ में स्नान करने से सकल तीर्थों के स्नान का फल प्राप्त हो जाता है †।

६४ **मुञ्जवट**—यह थानेश्वर का ही नाम है। यहाँ पर यक्षिणी कुण्ड है। मुञ्जवट महादेव का अवास स्थान है। यहां उपवास धारण कर एक रात्रि रहने से गाणपत्य प्राप्त होता है। उपरोक्त तीर्थ में एक यक्षिणी निवास करती है। उसकी आराधना करने से कामना सिद्ध होती है। मुञ्जवट कुरुक्षेत्र का द्वार कहलाता है ❀।

६५ **मृगधूम**—यह हुसैन ग्राम के समीप है। वहां जाकर गङ्गातीर्थ में स्नान और महादेव की अर्चना करने से सहस्र गोदान के तुल्य फल प्राप्त होता है ‡।

६६ **यमुनातीर्थ**—यह लुप्त प्रायः ज्ञात होता है। कारण कि उसका कोई सन्धान नहीं जानता। महर्षियों ने उपरोक्त तीर्थको स्वर्गद्वार बताया है। महाराज भरत ने यहाँ अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान किया था। जिससे इन्होंने ससागरा पृथ्वी का अधिपत्य प्राप्त किया था। मरु राजा ने भी यहीं यज्ञ किया था। यमुना तीर्थ स्नान करने वाले सकल पापों से विमुक्त हो सद्गति को प्राप्त

---

† बन पर्व ८३। ९०-९१

❀ बन पर्व ८३। २२-२४

‡ बन पर्व ८३। १००

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

होते हैं। यमुनातीर्थ में जलाधिपति वरुण ने समस्त देवताओं के साथ एकत्रित हो, एक बृहत यज्ञ का अनुष्ठान किया था। उस समय देव गण सहित असुरकुल का संग्राम भी हुआ था ‡।

६७ **यायाततीर्थ**—पृथूदक परिक्रमण का शेष तीर्थ है। वर्तमान में इस का नाम "ययातितीर्थ" है। राजा ययाति ने यहाँ एक बृहत यज्ञ किया था। सरस्वती ने मूर्ति मत हो महाराज के लिये सकल यज्ञीय द्रव्य जोड़े थे। इसी लिये उक्त तीर्थ 'यायात' नाम से विख्यात है। उपरोक्त स्थान में स्नानादि करने से अक्षय पुण्य प्राप्त होता है *। यायात तीर्थ को भी कुरुक्षेत्र का द्वार कहा है ‡।

६८ **वकाश्रम**—वक नाम के एक प्रसिद्ध ऋषि हुए हैं। नैमिषारण्य वासी महर्षियों के द्वादश वार्षिक यज्ञानुष्ठान काल में वक महर्षि ने अपना गोवत्स सकल उन को अर्पण कर दिया। उन्होंने महाराज धृतराष्ट्र के निकट उपस्थित हो गो को मांगा था। धनान्ध धृतराष्ट्र ने कटुवाक्य प्रयोग कर कई मृत गो प्रदान करने की अनुमति दी। महर्षि उनके असद्व्यवहार से रोषाविष्ट हो उन्होंने धृतराष्ट्र का राज्य विध्वंस करने के अभिप्राय से उक्त स्थान में एक अभिचारिक यज्ञ का अनुष्ठान किया।

‡ वन पर्व १२६ । १३—१७

* शल्य पर्व ४१ । ३०—३२

‡ वन पर्व १२६।१२

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पुनः धृतराष्ट्र ने बहुविध विनय कर मुनि को रिझा लिया, इसी से वाकाश्रम नाम से प्रसिद्ध हुआ ‡ ।

६६ राम तीर्थ—यह तीर्थ थानेश्वर के समीप इन्द्र तीर्थ से अनित दूर पर है । महात्मा परशुराम ने एक विंशति बार पृथ्वी निःक्षत्रिय कर उक्त स्थान में शत अश्वमेध-यज्ञ समापन्न किये थे । जिस से आज इसे रामतीर्थ कहते हैं । यहां स्नान दान करने का अनन्त फल है * ।

७० रामहृद— इस एक नाम के पांच तीर्थ स्थान हैं प्रथम जींन्द से ढाई कोस दक्षिण-पश्चिम रामराय नामक स्थान में । द्वितीय—थानेश्वर के समीप परशुराम ने क्षत्रिय राजाओं को निधन कर पाञ्च ह्रद उन के शोणित से भरे थे । फिर उसी शोणित से उन्होंने पितृ पितामह गण का तर्पण किया । पूर्व पुरुष सातिशय सन्तुष्ट हो उनके पास पहुंचे थे । परशुराम ने उन से प्रार्थना की कि वह पांचों ह्रद तीर्थ स्थान बन जांये । उन्होंने वहां स्वीकार किया था । ह्रद तीर्थ बन गये । जो राम ह्रद में स्नान कर पितरों का तर्पण करता है, उस के मन की इच्छा पूरण हो जाती और चरम को स्वर्ग प्राप्त होता † ।

७१ रेणुका तीर्थ—थानेश्वर से थोड़ी दूर पर उर्णायच नाम स्थान में है । यहां स्नान—दान और पितृ तर्पण और देव

‡ शल्य०, आ, ४१

* शल्य०, ४९ । ७८

† वन ८३ । २६—४९

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अर्चना करने वाले सर्व पापों से मुक्त हो अग्निष्टोम का फल प्राप्त करते हैं। प्रति ग्रह के भी सभी दोष निवृत्त हो जाते हैं ‖।

७२ लोकोद्धार तीर्थ—इस समय यह तीर्थ 'लोधर' के नाम से प्रसिद्ध है। लोधर ग्राम है। इस में ही यह तीर्थ है। यहां स्नान करने से पितृ लोक का उद्धार होता है *।

७३ वट तीर्थ—सोम तीर्थ में एक वट वृक्ष है जिस के तल में देवताओं ने कार्तिकेय के सेनापति पद का अभिषेक किया था, इसी कारण वह स्थान तीर्थ माना जाने लगा। इसे वटाश्रम भी कहते हैं ‡।

७४ बदरी पाचन तीर्थ—थानेश्वरसे अठाराह कोस और पृथूदक से ११ कोस पश्चिम को ओर बेर नामक ग्राम में सरस्वती के तीर पर है। वहां अद्यापि विस्तर बदरी बन दृष्टि होता है। महर्षि भारद्वाज की श्रुवावती नामक एक कन्या रही। उसने इन्द्र को पतित्व में वरण करने के निमित्त घोर तपस्या की थीं। उस की तपस्या से सन्तुष्ट हो कर देवराज वशिष्ठ का वेष धारण कर उसके निकट उपस्थित हो कहने लगे—सुन्दरि! हम तुम्हें यह पाँच बदरी फल प्रदान करते हैं, तुम पका कर इन्हें तैयार करो, हम आते हैं। श्रुवावती ने उन के आदेशा-

---

‖ बन ८३। १५९।

* बन ८३। ४४

‡ बन ९० । ११ शल्य ४३। ४९

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

नुसार बदरि पाक बनाना आरम्भ किया, कि दिवा अवसान समय हो गया। परन्तु वह बदरी फल पक ही नहीं सका। श्रुवावती चिन्तित हो रही थी। जो लकड़ी संग्रह की थी, वह सब जल गई।

अन्त में उसने लकड़ी न रहने पर अपने हाथ पैर लकड़ी ही के स्थान जला पाक बनाने में संलग्न रही। तब इन्द्र सातिशय सन्तुष्ट हो पुनः अपने रूप में उपस्थित हुये और कहने लगे कि—'श्रुवावती ! हम तुम्हारे प्रति सन्तुष्ट हुये हैं। यह तीर्थ बदरी पाचन के नाम से लोक में प्रसिद्ध होगा'। इन्द्र ने वहाँ से प्रस्थान किया और थोड़ी देर में ही श्रुवावती का पाणिग्रहण कर लिया ‡।

७५ वाराह तीर्थ—बारा नामक ग्राम में है। भगवान् ने वाराह रूप धारण कर वहां अवस्थान किया था। बराह तीर्थ में स्नान करने से अग्निष्टोम का फल प्राप्त होता है *।

७६ वाशिष्ठापवाह तीर्थ—थानेश्वर के समीप है यह स्थाणु तीर्थ के भी समीप ही है। वशिष्ठापवाह तीर्थ का प्रवाह अति भीषण है। वशिष्ठ और विश्वामित्र में परस्पर वैमनस्य रहा एक दिन विश्वामित्र ने वशिष्ठ को अपने पास उपस्थित करने के नमित सरस्वती को अनुमति दी थी। सरस्वतीने देखा कि विषम

‡ शल्य ४८ अ०

* वन ८३। १८

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सङ्कट पड़ गया । महाक्रोधी विश्वामित्र का आदेश पालन न करके निस्तार कहां । वह महर्षि वशिष्ठ को किस प्रकार ले जातीं । परिशेष को उन्होंने वशिष्ठ के पास उपस्थित हो कातर स्वर से आद्योपान्त सभी वृत्तान्त निवेदन किया । वशिष्ठ ने कहा-भद्रे ! तुम हमको ले चलो, नहीं तो विश्वामित्र के हाथ से तुम्हारा निस्तार कैसे होगा, । सरस्वती ने उसे ले जाकर विश्वामित्र के समीप वशिष्ठ जी को उपस्थित कर दिया । विश्वामित्र के उनको, विनाश के अस्त्रानुसन्धान में प्रवृत्त होने पर उन्हों ने पुनर्वार वशिष्ठ को यथास्थान पहुँचाया था । विश्वामित्र ने सरस्वती की चातुरी देख शाप दिया । उसी शाप के कारण एक वर्ष तक सरस्वती का जल शोणित रहा । इसी प्रकार वशिष्ठापवाह तीर्थ की प्रसिद्ध हुई † ।

७७ **वंशमूल**—यह तीर्थ वर्तमान के 'बरशोला' ग्राम में है । इसमें स्नान-दान करने से वंश का उद्धार होता है ‖ ।

७८ **वामनक**—विष्णु पद्दहृद स्थान में है । यहां स्नान करके वामन की अर्चना करे तो अनन्त फल प्राप्त हो ‡ ।

७९ **विश्वामित्र तीर्थ**—पृथूदक के समीप ही सरस्वती के दक्षिण कूल ४० फीट ऊंचे स्तूप पर है । वहां शिल्प और कारु

---

† शल्य अ० ४२

‖ वन—८३ । ४०

‡ ,, ८३ । १०२

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कार्य विशिष्ट एक मन्दिर का ध्वंसावशेष देख पड़ता है। मन्दिर एरावत परिवृत इन्द्र मूर्ति और उसी के पार्श्व में नवग्रह तथा अष्टनायिक मूर्ति शोभित है। नीच जाति भी उसमें स्नान करने से ब्राह्मण जन्म ग्रहण कर शुचि और पवित्रात्मा हो जाते हैं। चरम में उन्हें ब्रह्मलोक प्राप्ति और उनका सप्तम कुल पर्यन्त पवित्र हो जाता है ‡।

८० विष्णु पद (विष्णु स्थान)—यह इस समय 'थान' के नाम से प्रसिद्ध है। वह परिप्लव तीर्थ का समीपवर्ति है। विष्णुपद में भगवान विष्णु सर्वदा सन्निहित रहते हैं। उपरोक्त स्थान में स्नान करके विष्णु को नमस्कार करने से अश्वमेध का फल और अन्त में स्वर्गलोकप्राप्त होता है †।

८१ वेद्वती—वर्तमान में यह तीर्थ शीतला मठ के पार्श्व में है। इसी का दूसरा नाम 'वेदी तीर्थ' है। वेद्वती छिन्दत्त कूप से अनति दूर पर है, उस में स्नान करने से सहस्र गोदान का फल प्राप्त होता है *।

८२ वैतरणी—यह तीर्थ वर्तमान में 'धोधा' ग्राम के पार्श्व में प्रवाहित छुटङ्क नदी है। सर्व पाप विनाशिनी वैतरणी में स्नान करके पितृ लोक और महादेव की अर्चना करने से सभी पाप नष्ट

---

‡ ८३ वन पर्व ३७-३९

† ८३ ,, ११-१३

* वन-८३। ६७

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हो जाते हैं। और वह प्राणी मुक्ति प्राप्त करते हैं ‡ ।

८३ **वृद्ध कन्यक तीर्थ**—यह तीर्थ थानेश्वर के समीप है। कुणि गर्ग नामक किसी महर्षि ने तपोबल से एक मानसी कन्या की सृष्टि की थी। वह अपने अनुरूप पति के अभाव में उक्त स्थान पर तपस्या करने लगी। क्रमशः उसका वार्धक्य उपस्थित हुआ, चलने-फिरने की शक्ति जाती रही। फिर परलोक गमन करने की इच्छा से वह कलेवर परित्याग करने पर कृतसङ्कल्प हुई। उसी समय नारद ने उपस्थित हो कहा कि—'कल्याणि! अनूढ़ा कन्या को सद्गति मिलने की सम्भावना नहीं' तुम कैसे परलोक गमन करोगी, ! वृद्धकन्या चिन्तित हुई और कहने लगी—'यदि कोई हमारा पाणिग्रहण करना स्वीकार करे, तो मैं उसको अपनी तपस्या का अर्धांश प्रदान करुंगी, । शृङ्गवान ने वृद्ध कन्या का पाणिग्रहण किया था। वृद्ध कन्या ने एक रात्रि उनका सहवास करके कलेवर छोड़ दिया। इसी से उपरोक्त स्थान का नाम वृद्ध कन्यक तीर्थ प्रसिद्ध हुआ * ।

८४ **व्यासवन**—वर्तमान वासथली ग्राम की दक्षिण पार्श्वस्थ भूमि है। उसमें मनोज्ञ नामक ह्रद विद्यमान है। उसमें स्नान करने से सहस्र गोदान का फल प्राप्त होता है† ।

---

‡ बन पर्व ८३ । ८३

* शल्य पर्व ४२ अ०

† बन ,, ८३।१५ । ६

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

८५ ब्रह्मतीर्थ—वर्तमान रसालू ग्राम में है वह कन्या तीर्थ से अधिक दूर नहीं। उसमें स्नान करनेसे नीच वर्ण भी ब्राह्मणत्व प्राप्त करता है। ब्राह्मण को स्नान करने से सद्गति प्राप्त होती है ‖।

८६ ब्रह्मयोनि—पृथूदक तीर्थ के समीपस्थ है। ब्रह्मा ने उक्त तीर्थ को निर्माण किया था। इसमें स्नान करने से ब्रह्म लोक प्राप्ति और सप्तकुल का उद्धार भी होता है ‡।

८७ ब्रह्मावर्त—वर्तमान में इसे 'ब्रह्मदत्त' कहते हैं। इसमें स्नान करने से ब्रह्म लोक प्राप्त होता है *।

८८ शङ्खिनि—गोभवन स्थान में है। यहां स्नान दान करने से अनन्त फल प्राप्त होता है †।

८९ शक्रावर्त—वर्तमान काल में इसे 'शकरा' कहते हैं। यह पृथूदक से थोड़ी दूर है। वहाँ स्नान कर देवता और पितृलोक की अर्चना करने से उत्कृष्ट लोक को प्राप्त कर सकते हैं ‡।

९० शतसहस्र—साहस्रक नामक एक दूसरे तीर्थ के समीपस्थ है। उक्त दोनों तीर्थों में स्नान करने से सहस्र गोदान का

‖ वन पर्व ८३।११२

‡ वन ,, ८३।३८-३९

* वन ,, ८३।५२

† वन ,, ८३।५३

‡ वन ८४।२९

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

फल प्राप्त होता है। शत सहस्र तीर्थ में दान उपवास प्रभृति जो अनुष्ठान किया जाता है, उसका सहस्र गुण फल प्राप्त होता है॥।

९१ शीतवन—वर्तमान में इसे 'सिवन' कहते हैं। उपरोक्त स्थान में और भी कई तीर्थ हैं। एक बार शीतवन अवलोन किंवा अवगहन करने से तीर्थ सेवी परम पवित्र लाभ प्राप्त करता है*।

९२ श्रीतीर्थ—इस स्थान में पितृ अर्चना किंवा देव पूजा करने से उत्कृष्ट कान्ति और विपुल धन प्राप्ति होती है ‡।

९३ श्वाविल्लोमपह वा श्वाविल्लोमपनयन—शीतवन मध्यवर्ती है। इस प्राणाथा करके प्रयाग की भांति गात्रलोम परि-त्याग करने पड़ते हैं। इसके फल में अतिशय पवित्रता और परिणाम में मुक्ति प्राप्त होती है †।

९४ सन्निहिती—थानेश्वर से साढ़े चार कोस दक्षिण की ओर है। इसका वर्तमान नाम 'सनवत' विख्यात है। ब्रह्मादि देव ऋषि और तपोधन प्रति मास उपरोक्त स्थान में उपस्थित होते हैं। सूर्य ग्रहण को उपरोक्त तीर्थमें स्नान करने से शत अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता हैं मुनियों के कथनानुसार 'पृथिवी किंवा अन्तरिक्ष के सकल पवित्र नद, नदी, हृद, तड़ाग, प्रसवण,

---

॥ वन पर्व ८३।१५६-५७

* बन पर्व ८३।५८

‡ ,, ,, ८३।४५

† बन पर्व २८।६०-६२

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वापी प्रभृति प्रति मास को अमावस्या को यहां सन्निहित होते हैं। सूर्य ग्रहण और अमावस्या को सन्निहित श्राद्ध करने से शत अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है। परिणाम में तीर्थ सेवी पद्म वर्ण रथ पर आरोहण कर ब्रह्म लोक को गमन करता है। समस्त तीर्थ सन्निहित होने से ही उसका नाम सन्निहित प्रसिद्ध हुआ ‡।

९५ सप्त सारस्वत—वर्तमान में यह तीर्थ मंगना नामक स्थान में है। वह सोमतीर्थ का समीपवर्ती है। मङ्कण नाम के एक प्रसिद्ध ऋषि थे। उन्होंने एक दो अपने हस्त के क्षत स्थान में शाक रस निःसृत होते देख आनन्द में नृत्य करना आरम्भ किया उनके विशाल नृत्य से चराचर मोहित और एकान्त विचलित हो गये। देवगण ने महादेव के निकट जा उसकी सूचना दी थी। रुद्रदेव ने मङ्कण के समीप जाकर कहा- हे तपोधन! तुम किस निमित्त नृत्य करते हो? तुम्हारे इस प्रकार के हर्ष का कारण क्या है। महर्षि ने उत्तर दिया कि-'अपने हस्त से शाक रस निःसृत होते देख मैं आह्लाद और विस्मय में नृत्य करता हूं'। ज्ञानपाणि ने हास्य करके कहा 'यह आश्चर्य का कारण नहीं'। पुनः महादेव ने नखाग्र से अंगुष्ठ पर अघात लगाया था। अंगुष्ठ से तुषार सदृशाधवल भस्म निर्गत हुआ। मङ्कण उसे देख लज्जित हुआ और विस्मित चित्त से देव-देव पिनाकपाणि का स्तव करने

---

‡ वन ८३।९१-१००

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लगा। रुद्र सन्तुष्ट होकर बोले कि—"आजसे यह स्थान तीर्थ हो गया। हम तुम्हारे साथ सदैव यहां अवस्थान करेंगे।" सप्त सारस्वत में स्नान कर महादेव की अर्चना करने से अभीष्ट सिद्धि होती और चरम में सारस्वत लोक मिलता है ‡।

९६ सरस्वती सङ्गम—इस स्थान में चैत्र मास की शुक्ल चतुर्दशी के दिन ब्रह्मादि देव तपोधन और महर्षि गमन करते हैं। सरस्वती संङ्गम में स्नान करने से तीर्थसेवी बहुतर सुवर्ण प्राप्त करते और सर्व पापों से मुक्त हो ब्रह्मलोक प्रस्थान करते हैं *।

९७ सरक—वर्तमान में यह 'शेरगढ़' के नाम से प्रसिद्ध है कृष्ण पक्षीय चतुर्दशी को उपरोक्त स्थान में यदि महादेव की अर्चना की जावे तो सर्व कामनाये सिद्ध होती हैं। पुनः तीर्थ सेवी उससे स्वर्ग लाभ भी प्राप्त करता है। उपरोक्त स्थान में अनेक और भी तीर्थ हैं। उनमें इलास्प्रद ही सर्वमान्य है ‖।

९८ सर्पदेवी—इस समय यह 'सर्पदान' के नाम से प्रसिद्ध है। इस का दूसरा नाम नाग तीर्थ है। नाग तीर्थ में स्नान करने से नागलोक और अग्निष्टोम के समान फल प्राप्त होता है†।

---

‡ शल्य ३८ अ०, बन, ८३। ११४। १३१

* बन। ८२। २५। २७

‖ ,, ८३। ३४। ३६

† बन पर्व ८३। १४—१५

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

१०० सर्पदेव तीर्थ—यह फलकी वन का मध्यवर्ती क तीर्थ है। जहां स्नान करने से सहस्र गोदान का फल प्राप्त होता है। देवगण के इस स्थान में यज्ञ का अनुष्ठान करने से सर्पदेव तीर्थ प्रसिद्ध हुआ है। ‖

१०१ सुतीर्थ—यह ब्रह्मावर्त का समीपवर्ती है। यहां देव गण और पितृगणसर्वदा अवस्थित रहते हैं। सुतीर्थ में देवगण और पितृगण की अर्चना करने से अश्वमेध यज्ञ का फल और पितृलोक प्राप्त होता है ‡।

१०२ सुदिनतीर्थ--का विवरण आपगा तीर्थ में देखो।

१०३ सूर्यतीर्थ—यह कपिल तीर्थ का समीपवर्ती है। वहाँ उपस्थित हो उपवास करना चाहिये। सूर्यतीर्थ में भक्ति पूर्वक देवता और पितृलोक अर्चना करने से अग्निष्टोम का फल तथा सूर्य लोक की प्राप्ति होती है ✝।

१०४ सोमतीर्थ—दो हैं। एक सप्त सारस्वत का समीपवर्ती और दूसरा दधी तीर्थ से अनति दूर पर है। इन तीर्थों में स्नान करने वाले चन्द्रलोक की प्राप्ति करते हैं।

१०५ सोमतीर्थ—में द्विजराज चन्द्र ने राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान किया था। यज्ञ के अवसान में देवगण के साथ राक्षस

‖ बन पर्व ८३। ८७

‡ बन पर्व ८३। ५३—५४

✝ बन ,, ८३। ४७—४८

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गण का घोर युद्ध हुआ था। उसी युद्ध में कार्तिकेय ने सेनापति का पद ग्रहण कर समस्त राक्षस दल और तारासुर का नाश किया था। सोमतीर्थ में एक वट वृक्ष है। सेनापति कार्तिकेय उस के नीचे निरन्तर अवस्थान करते थे ‡।

१०६ स्थाणु तीर्थ—इसका ही वर्तमान नाम थानेश्वर है और इसी का दूसरा नाम मुञ्जवट भी प्रसिद्ध है *।

पञ्चवटी के अन्तर्गत किसी स्थान पर योगेश्वर नामक एक स्थाणु (शिव) है। उसे भी स्थाणुतीर्थ कहा जाता है ‖।

१०७ स्थाणुवर—बदरीपाचन तीर्थ का समीपवर्ती है। उपरोक्त स्थान में यथानियम स्नान करके एक रात्रि वास करने से रुद्रलोक प्राप्त होता है †।

१०८ स्वर्ग द्वार—यह स्थान वर्तमान थानेश्वर से अनति दूर पर है। आज कल जन समूह में यह 'स्वर्गद्वारो' के नाम से विख्यात है। यह नरक तीर्थ का समीपवर्ती है। संयतेन्द्रिय हो उपरोक्त स्थान को गमन करने से स्वर्ग लोक किंवा ब्रह्मलोक प्राप्त होता है ‡।

---

‡ शल्य० अ० ४४ बन ८३। ११३—११६

* बन, ८३। २२

‖ ,, ८३। १६२

† ,, ८३। १८०

‡ ,, ८३। ६८

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

१०६ स्वस्तिपुर—वर्तमान समय में यह 'अस्तिपुर' नाम से प्रसिद्ध है। किसी किसी के मतानुसार कुरुक्षेत्र महासमर के निहत वीरगण का अस्थि वहां रक्षित होने से ही उसका अस्थिपुर नाम प्रसिद्ध हुआ। किन्तु पाण्डव पक्षीय वीरगण के मृत देह का केवल उसी क्षुद्र ग्राम में सञ्चित होना किसी प्रकार प्रमाणित नहीं होता। स्वस्तिपुर में स्नान और प्रदक्षिणा करने से सहस्र गोदान का फल प्राप्त होता है †।

उपरोक्त तीर्थ और पुण्य स्थान व्यतीत नारद पुराणोपरिभाग खण्ड के ६४ तथा ६५ अध्याय, माधवाचार्य विरचित कुरुक्षेत्र महात्म्य, रामचन्द्र सरस्वती प्रणीत कुरुक्षेत्र तीर्थ निर्णय, कुरुक्षेत्र रत्नाकर और भट्टोजी दीक्षित के शिष्य कृष्णदत्त रचित कुरुक्षेत्र प्रदीप प्रभृति ग्रन्थों में दूसरे भी अनेक तीर्थों का विवरण लिखा है। उनके मध्य कुरुक्षेत्र के युद्ध में निहत वीरगण के नामानुसार वर्तमान अनेक तीर्थों का नाम करण किया गया है। आज भी कुरुक्षेत्र की सीमा में सर्व तीर्थ विद्यमान हैं।

पुरु वैदिक काल में ही बहुत प्रसिद्ध होगये थे। इससे महाभारत में पुरु को ययाति से आशीर्वाद प्राप्त होने का उल्लेख है। पौरवों का भारतवर्ष में इतना अधिक विस्तार हो गया था कि उनके सम्बन्ध में यह लिखा गया है कि चाहे सूर्य चन्द्र से रहित पृथ्वी होजाय, किन्तु पौरवों से रहित नहीं हो सकती‡। वह

---

† वन ८३। १७५

‡ अपौरवा तुहि मही न कदाचिद्भविष्यति

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रथम सरस्वती तट पर बसे थे, यह ऋग् वेद सूक्तों में भी कहा गया है। वहां से धीरे धीरे पूर्व, दक्षिण और पश्चिम की ओर उन्होंने अपनी सत्ता प्रस्थापित की और पाण्डवों के समय में वह सार्व भौम हो गये थे। पौरवों का प्रथम यहां के आदि निवासियों से झगड़ना पड़ा था। इसका उल्लेख ऋग्वेद में है ‡।

पौरवों ने अनार्यों से अनेक युद्ध कर विजय प्राप्त की, और सरस्वती तट पर अपना प्रभुत्व जमा लिया। प्रथम पञ्जाब में आकर बसे हुये आर्यों से लड़ कर वह परास्त हुये, किन्तु कुरुक्षेत्र में उनका अच्छा उत्कर्ष हुआ था। पौरवों के राजा अजमीढ़ का उल्लेख ऋगवेद में है। और बहुवचन में है। इससे स्पष्ट है कि अजमीढ़ का कुल विस्तृत होगया था। पौरवों का दूसरा पुराण प्रसिद्ध राजा दुष्यन्त का पुत्र भरत हुआ, उसका उल्लेख ऋग्वेद में नहीं, किन्तु शतपथ ब्राह्मण में है । उसमें लिखा है कि उसने गङ्गा यमुना और सरस्वती के तटों पर अनेक अश्वमेध यज्ञ किये थे। उसका राज्य पूर्व और दक्षिण में फैल गया था। शतपथ में उसे सर्वत्र दौष्यन्त भरत लिखा है; इससे आदि भरत और इस भरत का पार्थक्य स्पष्ट होता है। भरत के बाद प्रसिद्ध राजा कुरु हुआ, जिसके नाम से यह देश प्रसिद्ध हुआ है, इसका नाम भी ऋगवेद में न होने के कारण नहीं कहा जा सकता कि भरत और कुरु, देव काल के पश्चात हुये। ऋगवेद स्तुति ग्रन्थ है

‡ देखो ऋग् वेद सूक्त १--५८, १३१, १७४; ४--२८, ६, २०; ७-५ और ८--९६।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उसमें इन राजाओं का उल्लेख होना अनिवार्य नहीं है। ब्राह्मण कालमें इनकी विशेष ख्याति हुई। ब्राह्मण ग्रन्थोंमें जहां तहाँ कुरु-पाञ्चालों का संयुक्त उल्लेख हुआ है। क्योंकि महाभारत के समय दोनों कुल एक हो गये थे। उस समय के पश्चात् ब्राह्मण ग्रन्थों की रचना हुई थी। ब्राह्मण ग्रन्थों में जनमेजय परीक्षित और उनके किये हुये अश्वमेध यज्ञ का वर्णन कई स्थानों पर उल्लेख किया हुआ है। यह बात सत्य प्रतीत होती है कि कृष्ण द्वैपायन व्यास ने ऋग्वेद की रचन अर्थात सङ्घटना की थी। ऋग्वेद की रचना के पश्चात् भारती युद्ध हुआ और उसके पश्चात् ब्राह्मण ग्रन्थ बने। कालक्रम से यह ही स्पष्ट है।

महाभारतोक्त तीर्थों के अपभ्रंश नामों पर वर्तमान के कई ग्राम विद्यमान हैं

महाभारत में नाना स्थानों पर कुरुक्षेत्र का महात्म्य वर्णित हुआ है। महाभारत और पूर्व वर्णित नारद पुराणादि ग्रन्थ व्यतीत कूर्म, अग्नि, नृसिंह प्रभृति पुराणों में भी कुरुक्षेत्र परम पवित्र स्थान जैसा विवृत हुआ है *।

---

* 'कुरुक्षेत्र' गमिष्यामि कुरुक्षेत्रे वसाम्यहम।
य एवं सततं ब्रूयात् सोऽमलः प्राप्नुयाद्दिवम् ॥
तत्र विष्णुदयो देवस्तत्र वासाद्धरिं व्रजेत्।
सिरस्वत्यां सन्निहितः स्नानकृद ब्रह्मलोकभाक् ॥
पांशवोऽपि कुरुक्षेत्रे नयन्ति परमां गतिम्।"

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आदि जगतके ऐतिहासिक ग्रन्थ ऋग्वेद के प्रमाण द्वारा प्रमाणित है कि कुरुक्षेत्र पाण्डवों की युद्ध घटना से बहुत पूर्व में ही प्रसिद्ध हो चुका था।

भागवत के मतानुसार सम्वरण के और सूर्य तनया तपती के गर्भ में कुरु नामक एक राजा ने जन्म ग्रहण किया था। वही कुरुक्षेत्र पति की भाँति प्रथम वर्णित हुआ है‡।

थानेश्वर गौड़

संस्कृत में थानेश्वर को स्थानेश्वर लिखा है। इसका उल्लेख चीनी यात्री युएन चुअङ्ग के प्रवास भारत भ्रमण से ज्ञात होता है कि सातवीं शताब्दी में थानेश्वर (स्थानेश्वर) एक स्वतन्त्र राज्यों में से था। चीन परिव्राजक ने लिखा है कि यह राज्य प्राय: ५८३ कोस विस्तृत था। इस के बाद अल्बेरुनी ने भी थानेश्वर† का निर्देश अपनी यात्रा विवर्ण में किया है। वह थानेश्वर देश का नाम गौड़ देता है§। और उसके राज्य का विस्तार मीलों हुआ था। इसी कारण कुरुक्षेत्र अन्तर्गत तीर्थों का वर्णन आवश्यकिय जान संग्रह किया गया है। कन्नौज तथा श्रावस्ती श्री हर्ष के समय उसी के अन्तर्गत थी। बाण के श्री हर्षचरित में उल्लेख है

---

‡ पत्यां सूर्य कन्यायां कुरुक्षेत्र पतिः कुरः। भागवत, ६। २२। ४

† अल्बेरुनी दो थानेश्वरों का उल्लेख करता है एक तो गङ्गा यमुना के बीच, दूसरा वर्तमान, प्रथम वाला मानने योग्य नहीं।

§ Edward's, Albruni's, Vol. 1; P. 300.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कि राज्यवर्द्धन और हर्षवर्द्धन के समय में गौड़ नरेन्द्र गुप्त नामक राजा था। चीनी परिव्राजक युएन चुयाङ्ग ने बौद्ध द्वषी शशाङ्क के नाम से राजा का उल्लेख किया है। कर्ण सुवर्ण में शशाङ्क की राजधानी थी ‡।

उसके पश्चात सम्भवतः कुरुक्षेत्र तद्वंशीय राजागण के अधिकार में रहा। महायुद्ध के अनन्तर कौरवाधिकृत विपुल जनपदों के साथ उपरोक्त स्थान में भी पाण्डवों का अधिकृत हो गया। सम्भवतः क्षेमक अवधि कुरुक्षेत्र चन्द्रवंशीय राजागणों का अधिकार भुक्त था। यह समझने का प्रकृत उपाय नहीं, उसके पश्चात कुरुक्षेत्र किसके हाथ लगा। मक दुनियां के वीर अलकसेन्दर (सिकन्दर) घर्घरा नदी के तट पर्यन्त आ पहुंचे थे। उस समय घर्घरा नदी के पूर्व तट से समस्त पूर्व भारत मगध राजाओं के अधिकार में था। कुरुक्षेत्र भी उसी के अन्तर्गत था। मगध के बौद्ध राजाओं का प्रभाव खर्व होने पर कुरुक्षेत्र और उसका समीपवर्ती समस्त प्रदेश कान्यकुब्ज के हिन्दू राजाओं के अधिकार भुक्त होगया था।

बाणभट्ट के श्री हर्षचरित द्वारा जाना जाता है कि हर्षदेव के पिता प्रभाकार-वर्धन स्थाण्वीश्वर में और उनके जामाता (दामाद) ग्रहवर्म्मा कान्यकुब्ज में राज करते थे।

---

‡ Vaidya's Mediavel Hindu India P. 11. Harsha. P. 30

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मधुवन से प्राप्त हर्षवर्धन के प्रदत्त (२५ सम्वत्) ताम्र पत्र में उनके वृद्ध पितामह (परदादा) नरवाहन से राजाओं के नाम लिखे हैं † । सम्भवतः उपरोक्त नरवाहन (ईसाकी पांचवी शताब्दी के शेष भागमें हुआ हो ।) से श्री हर्ष पर्यन्त छः राजाओं ने कुरुक्षेत्र में राज भोगा ।

श्री हर्षचरित और चीन—परिव्राजक युएनचुयाङ्ग के भ्रमण वृत्तान्त में लिखा है कि हर्षदेवके ज्येष्ठ भ्राता (स्थाणिश्वर राज) राज्यवर्धन ने मालव राजा देवगुप्त को पराजय करके कान्य कुब्ज को अधिकार में लिया था । उनके मरने पश्चात हर्ष स्थाणीश्वर और कान्यकुब्ज के चक्रवर्ती राजा हुये ।

हर्ष के राज्य काल (ई० षष्ठ शताब्द के शेष भाग) में चीन परिव्राजक युएन-चुयाङ्ग कुरुक्षेत्रस्थ स्थाणीश्वर (स-त-नि-श-फ-लो) देखने आया था* । उस समय स्थणिश्वर का राज्य (सम्भवतः कुरुक्षेत्र) ५०० कोस से अधिक (७००० लि०) विस्तृत रहा हो । उसमें तीन बौद्ध सङ्घाराम, हीनयानमतावलम्बी ७०० बौद्ध याजक और प्रायः शताधिक (हिन्दू) मन्दिर थे । चीन-परिव्राजक के समय में भी थानेश्वर का चतुःपाश्वस्थ सोलह कोस स्थान (२०० लि) धर्मक्षेत्र नाम से अभिहित होता था ‡ ।

---

† Epigraphia Indica Vol. I, P. 68.

* La. Vie de Hiouen-Thsang. Per Stanislas gulien; P. 64.

‡ Beal's Si-Yu-Ki, Vol. I. P. 184.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

चीन-परिव्राजक के वर्णन से ज्ञात होता है कि उस समय भी धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में मृत वीरगण का अस्थिराशि विद्यमान रहा। उन्होंने थानेश्वर से उत्तर-पश्चिम अनति दूर पर बौद्ध राज अशोक निर्मित ३०० फीट ऊंचा एक स्तूप देखा था।

उसके पश्चात् बराबर कुरुक्षेत्र, कान्य-कुब्ज के राजाओं के अधिकार में रहा। कान्यकुब्ज के राजाओं के समय में पृथूदक से प्राप्त खोदित शिलाफलकादि द्वारा उक्त विषय समझा जा सकता है ‡।

महम्मूद-गजनवी ने थानेश्वर पर आक्रमण करके कुरुक्षेत्र से चक्रस्वामी नामक विष्णुमूर्ति का ध्वंस किया था। उसके पश्चात् ११४३ ई० में दिल्ली के राजा पृथ्वीराज ने मुसलमानों के कवल से पुण्य क्षेत्र को छुड़ा लिया। ११९२ ई० में दिल्लीश्वर पृथ्वीराज का गौरव रवि अस्तमित होने पर कुरुक्षेत्र और सरस्वती-प्रवाहित विस्तीर्ण भूभाग मुसलमानों के अधिकार में पड़ गया। हिन्दू विद्वेषी मुसलमानों के अधिपत्य काल में कुरुक्षेत्र के अनेक पुण्य तीर्थ लुप्त और अधिकांश देवालय विध्वंस्त हुये, किन्तु धर्म परायण हिन्दू कुरुक्षेत्र का महात्म्य भूल न सके। उस दारुण सङ्कट के समय भी शत सहस्र (लाखों) तीर्थ यात्री जीवन को तुच्छ समझ बहु दूर देश से कुरुक्षेत्र के सर्व पवित्र तीर्थों के दर्शन करने जाते थे। 'तारीखदाऊदी' में उल्लेख है कि 'सिकन्दरलोदी के सिंहासनारूढ से प्रथम कुरुक्षेत्र में स्नान

---

‡ Epigraphia Indica. Vol. I. P. 106, 244.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

करने के लिये एक बहुसंख्यक यात्रियों का समागम हुआ। सिकन्दर ने उन सबके विनाश का संकल्प किया था'। तबकातए नासरी से मालूम होता है कि सम्राट अकबर थानेश्वर जब पहुँचे। उस समय कुरुक्षेत्र के सरोवर तट पर ग्रहण के उपलक्ष में स्नानार्थ बहुत से योगी और संन्यासी एकतृत थे। तीर्थ यात्री स्वर्ण और मणिरत्नादि ब्रह्मणों को दान करने लगे। संन्यासी और योगी दोनों दल में विवाद आरम्भ हुआ। बादशाह की अनुमति को प्राप्त कर उन्हीं के समक्ष उभय दल में घोर तर युद्ध हुआ, अन्त में संन्यासियों ने जय पाई।

हिन्दू विद्वेषी औरङ्गजेब ने कुरुक्षेत्र में उक्त सरोवर के * मध्यवर्ति द्वीपाकार स्थान पर मुगल पाड़ा नामक एक दुर्ग बनाया

* उपरोक्त बृहद् सरोवर थानेश्वर के समीप अवस्थित है। वह दैर्ध्य में ३५४१ फीट और प्रस्थ १६०० फीट है। एक समय उस सरोवर का प्रायः द्विगुण आयातन रहा। वह महाभारतोक्त दधीची तीर्थ और ऋग्वेदोक्त शर्मणावत् अनुमित होता है। उसके मध्य ५०० फीट परिमित एक द्वीप है। सरोबर से द्वीप को जाने के लिये उत्तर और दक्षिण दो सेतु हैं। कुरुक्षेत्र महात्म्य में वर्णित चन्द्रकूप उसी द्वीप के मध्य पश्चिमांश में अवस्थित है। द्वीप और सरोवर चारों ओर इष्टक-प्राचीर से वेष्टित है। प्राचीर और सेत दोनों अकबरप्रिय वयस्य राजा बीर (वर) बल के व्यय से निर्मित हुये थे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

था। उसी दुर्ग से मुसलमान समागत तीर्थ यात्रियों को गोली से मार दिया करते थे।

सिक्खों के अभ्युदय काल में हिन्दुओं के तीर्थों और प्राचीन देव मन्दिरों का मुसलमानों के वश से उद्धार हुआ था। पूर्व काल की भांति पुनः सहस्रों तीर्थ यात्री कुरुक्षेत्र के स्नानार्थ जाने लगे वर्तमान समय में भी भारत के अनेक स्थानों सेतीर्थ यात्री कुरुक्षेत्र पहुंते हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गौड़ जातियों का वर्णन

गौड़ ब्राह्मण

गौड़ † उत्तरी ब्राह्मणों की पांच जातियों में से एक जाति पञ्च गौड़ के नाम से प्रसिद्ध है। जो कि दक्षिण के पञ्च द्रावड़ों की भाँति है। यह नाम क्यों प्रसिद्धि में आया, अनुसन्धान बताता है कि बङ्गालकी राजधानी किसी समय गौड़ या लखनौती थी जो कि मालदाह में है। यह लोग पाण्डवों के समय दिल्ली की ओर आगये। दूसरे प्रमाण से सिद्ध होता है कि वह बङ्गाल में प्रसृत हो गये जब कि राजा उग्रसैन जो कि अग्रवाल वैश्यों का पूर्वज था। परन्तु कई लोग उक्त कथा में सन्देह करते हैं। उनका पूर्व से पश्चिम का जाना कुछ नियम विरूद्ध प्रतीत होता है। क्योंकि इस प्रकार जो दूसरी जातियाँ जो सरवरिया और कन्नौजिया हैं। उनसे इनका किस प्रकार सम्बन्ध हो सकता था। कोलब्रूक का कथन हैं कि गौड़ पटने के निकट कोई देश था। कैम्पबिल का यह विचार है कि यह नाम उनके निवास से पड़ा है। जोकि दरियाये घाघरा के तट पर था। वह सरस्वती नदी की एक शाखा है। कनिङ्घम ‡ का कथन है कि यह उत्तरी कौशल की एक जाति है। और श्रावस्ती

---

† पण्डित रामगरीब चौबे डिपुटी इन्सपेक्टर स्कूल बिजनौर, चौधरी ध्यानसिंह मुरादाबाद के मतानुसार।

‡ A. S. R. Vol. I. P. 324, Original Inhabitant of Bharta Varsa, 114.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

के भग्नावशेष गौण्डा में पाए गये हैं । कूक का कथन भी कनिङ्गम की पुष्टि करता है । यह लोग अयुध्या, जाहाँगीराबाद पाखपुर और जैसनी जिला गौंडा और गोरखपुर के कई भागों में पाये जाते हैं, गत मनुष्य गणना से पता चलता है कि यह मेरठ डवीजन में अधिक पाये जाते हैं । और रोहेलखण्ड की ओर, और गङ्गा यमुना के दोआब में इनकी शाखें बहुत पेचीदा हैं । और इस जाति के व्यक्ति विद्याहीन हैं । डा० जे० विल्सन ने इनकी ग्यारह शाखें निम्न-लिखित वर्णन की हैं ‡

१—केवल गौड़ यजुर्वेदी हैं और हरिद्वार की ओर रहते हैं ।

२—आदि गौड़ शुक्ल ,, इनकी उपजातियाँ—स्मारत्ता शक्ता और वल्लभाचार्य हैं । इनके गोत्र प्रवर निम्न लिखित हैं—

आदि गौड़ ब्राह्मणों के गोत्र प्रवर ।

गोत्र प्रवर

१ भारद्वाज—अङ्गिरा, बृहस्पति, भारद्वाज ।

२ उपमन्यु—वसिष्ट, इन्द्रप्रमद, भपद्वसु ।

३ वशिष्ट—वशिष्ट ।

४ कश्यप—काश्यप, आवत्सार, नैध्रव ।

---

‡ Indian Caste, Vol. II, 159, Sqq.

किन्तु सर्वसाधारणमें इनकी निम्न लिखितप दबियां भी प्रचलित हैं—मिश्र, दीक्षित, वेदिये, चौबे, जौषी, व्यास, पाठक, शुक्ल, स्वामी, भागवती, श्रोत्रिय, भट्ट, पांडे, तामडायत, तिवाड़ी थकाव्यास,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

५ मौद्गल्य—अङ्गिरा, भार्ग्यश्व, मौद्गल्य।

६ जात्तुकर्ण्य—वशिष्ट, अत्रि, जातुकर्ण्य।

७ शांडिल्य—शांडिल्य, असित, देवल।

८ कौंडिन्य—अङ्गिरस, बार्हस्पत्य, भारद्वाज।

९ गौतम—अङ्गिरा, आयास्य, गौतम।

१० अघमर्षण—विश्वामित्र, कौशिक, अघमर्षण।

११ वत्स—भार्गव, च्यवन, अप्नुवान।

१२ वामदेव—अङ्गिरस, वामदेव, बार्हदुक्थ्य।

१३ ऋक्ष—अङ्गिरस, वृहस्पति, भारद्वाज, वान्दन, मातवचस।

१४ लौगाक्षि—कश्यप, आवत्सार, वसिष्ट।

१५ वच्छस—भृगु, च्यवन, आप्तवान।

१६ गविष्ठर—अर्चनानाश, अत्रि।

१७ षिद्—जामदग्न्य, आप्तवान, और्वत, भार्गव, च्यवन।

१८ दीर्घतमस—अङ्गिरस, उतथ्य, दीर्घतमस।

३—शुक्लवाल यह आदि गौड़ों की एक शाख है उनका निकास जयपुर से है। इनकी वहाँ दो शाख ऊझ और जोषी नाम से प्रसिद्ध हैं।

४—सनाढ्य यह १८९१ की मनुष्य गणना से न्यारी गणना में लिखे हैं।

५—श्री गौड़—इनका व्यवसाय पान आदि बेचना है। और भी एक आदि श्री गौड़ हैं जो कि मथुरा, बृन्दावन और दिल्ली की ओर रहते हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

६—गुर्जर गौड़ या गूज्जर गौड़

७—तेकबारा गौड़

८—चमर गौड़—यह चमारों की पुरोहिताई करते हैं।

९—हरियाना गौड़—यह हिसार, रोहतक की ओर रहते हैं।

१०—कीर्तन्य गौड़—जो राजपूताना आदि में गायन का कार्य करते हैं।

११—शुक्ल गौड़—यह ब्राह्मणों के अतिरिक्त क्षत्रिय वैश्य का दान नहीं लेते।

एलियट साहब उल्लेख करता है कि बड़ी गौर जातियां इन प्रान्तों में आदि गौड़, जुगाद गौड़, कैथलगौड़, गूज्जर गौड़, धर्म गौड़ और सिद्ध गौड़ हैं। मिर्जापुर के एक लेखानुसार यह प्रगट होता है कि वह गूजर गौड़ दधीची, या दाइमा सिक्खवाल, पारीक, खण्डेलवाल या आदि गौड़ और सारस्वत में विभाजित किए गए हैं। इन में से दधीची को विल्सन ‡ ने गूजर ब्रह्मणों में कहा है। पारीक ब्राह्मण राजा जयपुर के परोहित हैं। वह अपने को वासिष्ठ की सन्तति मानते हैं। उसके सौ पुत्रों को विश्वामित्र ने मार दिया था, परन्तु उन में से एक पुत्र सव (Sava) था; उसका पुत्र पराशर, उसका व्यास। सारस्वत इन से भिन्न हैं। ऐसा मनुष्य गणना रिपोर्ट तथा अन्य साधनों द्वारा प्रतीत होता है।

दधीची अपने को दधीची की सन्तान मानते हैं। उस के एक

‡ Indian Caste II, 117, 190.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

स्त्री सत्यप्रभा नामक थी, सत्यप्रभा अपने स्वामी की मृत्यु के समय गर्भवती थी, उसने अपने स्वामी कि मृत्योपरान्त अपना पेट चीरा और बच्चे को निकाल कर पिप्पल वृक्ष के मूल में रख कर आप सती हो गई, कुछ कालोपरान्त स्वर्ग में सत्यप्रभा को अपने बच्चे का स्मरण हुआ तो उसने मूल देवी (शक्ति) से प्रार्थना की तो देवी ने विश्वास दिलाया कि तेरा बच्चा जीवित है और पिप्पल वृक्ष का समर्पण करने से वह पिप्पलायन नाम से प्रसिद्ध हुआ जिसके बारह पुत्र हुए। वह बारह गोत्रों के कर्ता हुये। पुनः इन सब के बारह २ पुत्र हुये। इनसे १४४ शाखें चलीं। उनके गोत्र और अल्ल निम्न प्रकार हैं:-

गौतम गोत्र और उसकी शाखायें:—

पतोदया, पलोद, नाहवाल, कुम्भया, कण्ठ, बदाधरा, खतोड, बदसरान, बगदया, वेदवन्त, बनारसोदरा, लोडोडया, ककराह, गगवारी, भूवाल, देसिल, मसया, मङ्ग।

वत्स गोत्र—रताव, कोलीवाल; बलदव, रोलरयान, चोलङ्खिया, जोपन, इथोदया, पोलगल, नासर, नामवाल, अजमेरा, कुकरान, ताराराबान, अबदेग, दिदेयाल, मुसया, मौग।

भारद्वाज गोत्र—पेदवाल, शुक्ल, मलोदया, असोपदियाकी, बरमोता, इन्दोखवाल, हलसार, भाटलया, गोडिया, सोल्यारिन।

भार्गव गोत्र—इनरयान, पाथरयान, कासलप, सीलरोनद्या,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कुरारवा, जगोदया, खेचर, नेसाव, लद्‌रावान, बरागे-
रान, कद्‌लावा, कपरोदया।

कवच गोत्र—दिद्‌वारयान, मलोदया, घावरोदया, जातलया, दोमा,
मुरेल, मौरजवाल, सोसी; गोटेचा, कोदाल, तरीतवाल।

कश्यप गोत्र—चोरेदा, दिरोलया; जमवाल; शेरगोटा; राजथला
बरवा; बालया; चौलङ्गया।

शाण्डल्य गोत्र—रारवा, विद्या, वेद, गोथरवाल, दाहवाल।

अश्रय गोत्र—सुलवाल, यर्जोदय, दुबरया, शुकलय।

पाराशर गोत्र—भेरा, पाराशर।

कवल गोत्र और उसकी शाखें:—छिपरा।

गर्ग ,, ,, ;; तालच्छया।

ममर्क ,, ,, ,,

गुर्जर गौड़ों की मिर्जापुर से प्राप्त सूची में गोत्र और अल यह
दिये हैं:—

कौशिक गोत्र और उसकी शाखें (अल):—जाखीमो,
कुरक्यो, लादुक्यो, कारदोलया, सुरोलया, मोघरायान,
सरसू, प्रहद्र, कटसल, जैरावलिया, कौशिक गोत्र
चाहधोता, गोबलया, नागवालया, कैथ, कालैथ,
तेतरवा, वैलसन्दा, केथुरयान, दुदु।

वशिष्ठ गोत्र—बघलीदा, दुघहासया, सुरारयान, अकोद्रा, झुम्म-
रोदयान, रिद्रोलिया, पण्डूरया, शाखवत, अचरौन्दिया,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लैवाल, पोपरोद्यान, रच्छतीनरी, खियरयान, फगूरयान।

शाण्डल्य गोत्र—नौशलय, पचसव, गालस्व, जजपुरा, ननेरा, कथरोईवाल, साँप, झमकोलय, करौरीवाल, कुसूम्भीवाल।

कौशिक गोत्र—भैर्जवाल, कानोलिया, नौगर, दुघदोल्य, गुम्तरयान, अधरूप, जोधा, हरखाही, जस्तरयान।

भारद्वाज गोत्र—पेस, गौरयान, जाव्ल, गौरिङ्गा, बप्रोन्धा, लाद, कलबाद्र, सलोरा, जिगारयान, चित्रयान, गुगौरयान, पेजुरयान, कजौर, गौहण्डय, बगद,

गौतम गोत्र--भवानल्य, जाजाद, बेजर्यान, थिङ्कसर, विलोवर्यान, पण्डैत, दीन्नत, बेलू, उम्तर्यान, मण्डोवस्या।

कश्यप गोत्र--बरारैल, रीवल, गुणवाल, सांभरी, बजणो, थरीवाल, लोहदोली, ऐमली सजीगण्त, दवली, जाजण्डो मतारयान, रिजदोली, रेहदोल्य।

वत्स गोत्र—कान्तर, बच्छ, कैमाल्य, चतस्व, डोडवाद्र, व्यास, थिल, गुतराद्य, पैवाल, चन्वाद्रा, दिद्वार्यान, छिछावता, पालहट, चुलहट, सुरौली, रैनहट, ससूंदा, खींवसर, छदक, बगद।

अत्रीम—वर्दुन्ध्या, बथेरवाल, अकोद्रा, करौदीवाल, प्रियलौज, बभेरवाल, दाभद्र, कुछोद्रा, इच्छरमवा।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मुहरिल--सुर्तरयान, भुतारयान, धामौत्या, थावल्या, लोहका, बम्हौर्या, कुन्देर, गडूयान, रैसवाल, कुञ्जोद्रा, मुठ, पिपल्या ।

पाराशर गोत्र--खटोंद, देगी, पहाद्र, नरारयान, कुचिल, बैमुरा, कचरोदिया, दवलिया, दुबरहट्टा, गुमतरयान ।

गर्गगोत्र--गुडनाद, कचरी, लदरियान, लहवाल, भङ्गदोली, उखेखाल,

गौड़ ब्राह्मण अपने मत में कनौजियों की निस्बत स्वतन्त्र होते हैं । और वह सारस्वतों के साथ विवाह सम्बन्ध कर सकते हैं । अन्य बातों में वह कट्टर पन्थी हैं । जब बहू घर में आती है वो दुधाभाती की रस्म होती है ।

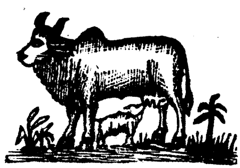

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गौड़ (गौर) क्षत्रिय

गौड़ क्षत्रिय एक प्रसिद्ध राज कुल है‡ जिसका उल्लेख प्रसिद्ध चन्द बरदाई ने भी स्व रचित "पृथ्वी राज रासो" और कर्नल जेम्स टाड ने अपने "राजस्थान" नामक ग्रन्थ में तथा और भी कई सूचीयों, शिलालेख और प्राचीन बौद्ध धर्म्म ग्रन्थ आर्य्य मंजुश्री इत्यादि में पाया जाता है। गौड़ और गौर नामक क्षत्रिय कुल एक ही है। और जन साधारण में भी वह एक ही माना जाता है। परन्तु अभी ओझाजी के अनुसन्धान ने ऐतिहासिक संसारमें यह भ्रम उत्पन्न कर दिया है कि गौर नामक अज्ञात क्षत्रिय वंश है❀। उसके प्रमाण में आपने दो शिला लेखों को प्रमाणस्वरूप उद्धृत किया है जो निम्न लिखित हैं:—❀

वि० स० ५४७, ई० स० ४९१ का नूतन शिलालेख:—

१—तस्याः प्रणम्य प्रकरोम्यहमेव···जन्म् ।

[कीर्तिशु] भां गुण गणौघम [यीं नृपाणाम्] [२]

·········कुलो [द्भ] व व [ङ् श] गौराः

क्षात्रे प [दे] सतत दीक्षित·······शौंडाः ।

···

···धान्यसोम इति क्षत्रगणस्य मध्यो [४]

···

---

‡—तारीख क्षत्रिय कुल गहलोत पृ० १३१

❀—नागरी प्रचारिणी पत्रिका भा० ३, पृ० ७-११

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

.........किल राज्य जित प्रतापो

यो राज्य वर्द्धण (न) गुणैः कृतनाम धेयः

....[५]

....

जातः सुतो करिकरायत दीर्घ बाहुः ।

नाम्ना स राष्ट्र इति प्रोद्धतपुन्य (एय) कीर्तिः [६]

सोयम् यशो भरण भूषित सर्व गात्रः ।

प्रोत्फुल्लपद्मः......तायत चारु नेत्रः ॥

दक्षो दयालुरिह शासित शत्रु पक्षः ।

क्षमां शासति......यश गुप्त इति क्षितीन्दुः [८]

तेनेय भूतधात्री क्रतुभिरिह चिता [पूर्व] शृङ्गे व भाति ।

प्रसादैरद्रितुङ्गैः शशिकर वपुषैः स्थापितैः भूषिताद्य ॥

नाना दानेन्दु शुभ्रैर्द्विज वरभवनैर्येनजदमोत्विभक्ता ।

......स्थित यशवपुषा श्री महाराज गौरः [११]

यातेषु पंचसु शतेष्वथ वत्सराणाम्

द्वेविशंती समधिकेषु ससप्तकेषु

माघस्य शुक्ल दिवसे त्वगमत्प्रतिष्ठाम्,

प्रोत्पुल्ल कुन्द धवलो ज्वलिते दशम्याम् [१३] ❀

मूल लेख की छाप से ।

वि० स० १५४५, इ० सं० १४८८ का शिलालेख

२—तन्वानं तुमुलं महासिहतिभिःश्रीचित्र कूटे गल-

❀ नागरी प्रचारिणी पत्रिका भा० १३, पृ० ६-१०

द्रवंग्यासशकेश्वरं व्यरचयत् श्री राजमल्लो नृपः ॥ ६८ ॥
कश्चिद्गौरो वीरवर्यः शकौघं युद्धेमुष्मिन् प्रत्यहं संजहार।
तस्मादेतन्नाम कामं बभार प्राकारांशश्चित्रकूटैक शृङ्गम् ॥६९
योधानमुत्र चतुरश्चतुरो महोच्चान्,
गौराभिधान् समधि शृंगमसावचैषीत्।
श्री राजमल्ल नृपतिः अतिमल्ल गर्व-
सर्व स्वसंहरण चंडभुजानिवाद्रौ ॥ ७० ॥
मन्ये श्रीचित्रकूटाचलशिखरशिरोध्यासमासाद्य सद्यो,
यद्योधो गौर संज्ञो सुविदितमहिमा प्रपादुर्बैर्नभस्तात्।
प्रध्वस्तानेक जाग्रच्छविगलदसृक पूरसंपर्क दोषं।
निः शेषीकर्तु मिच्छुर्व्रजति सुरसरिद्वारिणि स्नातुकामः ॥७१॥*

भावनगर इंस्क्रिपशंस, पृ० १२१

यथार्थतः दोनों लेखों में गौड़ों का उल्लेख गौर नाम से हुआ है, जिसके आधार पर ही श्री ओझा जी ने गौड़ों से यह गौर जाति का न्यारो अनुमान किया, परन्तु इसकी पुष्टि के लिए उन्होंने और कोई साधन का अनुसन्धान नहीं किया। आर्य मञ्जुश्री मूलकल्प ग्रन्थ जिसका समय उपर्युक्त प्रथम शिला लेख से प्राचीन माना गया है। उसमें गौड़ स्थान स्थान पर गौड़ शब्द से ही उल्लेख किया गया है। इसके पश्चात् ओझा जी द्वारा लेखोंके मध्य तथा पश्चात् कालमें कई स्थानोंपर गौड़-गौर शब्दका

---

* नागरी प्रचारिणी पत्रिका भा० १२ पृ० ७-८।

एकसा उलेख मिलता है १ । परन्तु गौड़ वंश इस समय में एक ही गौड़ या गौर नाम से प्रसिद्ध है । दूसरा पृथक् वंश नहीं और ना ही श्री ओझा जी ने उसका न्यारा सम्बन्ध होना या विद्यमान होना लिखा है, अतः युक्तियुक्त सिद्ध है कि उच्चा-रण मात्र के भेद ने ही यह 'ड़' को कभी 'र' का स्वरूप दिया हो। अब भी प्रायः बहुतसे गौड़ अपने को गौर कहते हैं। हाँ

---

१ तिनक्कै भयो पुत्र नरसिंघ राजा ।
लई जीति माहिष्मती गौड़ भाजा ।।८६।।
चन्द्रब्रह्मोत्पत्तिखण्ड

चाहुवान राठौर गौर कूरम बडबारिय ।।
गुहिलौत बघलैय बागरिय मोरिय बड़गुज्जर मिल्यब ।
तौवर पहार खीची मल्हन दाहिमार हाड़ा चल्यब ।।
१०० मलखान मंजायन बर्णन खण्ड ।

आल्हा कनवज गवन खण्ड

अवर बत्त सुनियै चहुवानह । गहबसिंघ सों करों बषानह ।।
कीरत ब्रह्म बुद्धि घर तौलह । गौड़ गढ़ापति ररयों करौलह ।।४।।
क्रिय करौल नृपसिंघ कह, बहु मृगया चितुलाय ।
फिरत अकिल्लब गौड़ सब, जन अपनो बिसराय ।।५।।
[२३] जगनिक्कराय—बधखण्ड ।
उत के सब गौड़ बिसाल बली । जतपाव के सीच में सांगदली ।।
जयपाल कुमार धरत्रि परं । चहुवान के बीरन को पकरं ।।१५।।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गौरवाह वंश जो कि राजपूतों में निकृष्ट वंश समझा जाता है, क्योंकि यह नाम उन लोगों पर लागू है जो विधवा विवाह करते हैं। यह लोग जयपुर को सौ वर्ष पूर्व त्याग कर यमुना के पश्चिम की ओर आ अवस्थित हुये। मथुरा में यह अपने को कच्छवाहा, जसावत और दूसरे सिसोदिया कहते हैं†। दिल्ली की ओर के झगड़ालू और स्वतः बलवान होते हैं‡। तीसरी गौराहर राजपूतों की एक छोटी खांप है, जो रुहेलखण्ड और अलीगढ़ की सीमा पर है। सम्भवतः यह चमर गौड़ों के वशंज हैं। उनमें आहीररक्त का कुछ मिश्रण प्रतीत होता है*।

हमारे विचार, अनुसन्धान और जातीय अन्वेषण द्वारा सिद्ध है कि श्री० ओझा जी की अज्ञात गौर वंश वह वर्तमान का गौड़ वंश एक ही है।

गौड़ों को ठाकुर बहादुरसिंह जी ‡ महामहोपाध्याय हर-

---

† Tribes & Castes of N. W. P. & Oudh. Vol. II. P. 404.

‡ Elliot Supplementary glossary, S. V. Growse Mathura, 12; Ibbetson, Punjab Ethnography Para 446.

* E. S. Glossary. S.V. Gazetteer N. W. P. VI. 410 Vol 1.

‡ क्षत्रिय जाति की सूची पृ० ७४ तृतीयावृति।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रसाद शास्त्री ने चन्द्रवन्शी लिखा है,[1] किन्तु महाराजा रणजोर सिंह जू अजयगढ़[2] और पुस्तक रचयिता[3] तथा पं० शिवप्रसाद त्रिपाठी[4] ने सूर्य्य वंशी माना है। वास्तव में वह सूर्य्य वंशी हैं। किन्तु ठाकुर प्रह्लादसिंह परिहार का मत और भी अनोखा यह है कि गौड़ ऋषि वंश है। इनकी उत्पत्ति शुक्राचार्य से लिखते हैं[5] जिसका कोई प्रमाण आपने उद्धृत नहीं किया।

उत्तर पश्चिमी प्रान्त और अवध के गोड़ों की सर एच० एम० इलियट के कथनानुसार तीन शाखाएं हैं—(१) भट्ट गौड़ (२) ब्राह्मण गौड़ (३) चमर गौड़। इन शाखाओं के नाम इस तरह किसी प्रकार भाट, ब्राह्मण और चमार के संसर्ग से पड़े हैं। "इन गौड़ शाखाओं में कभी २ कठेरिया भी सम्मिलित होते हैं जो कि कठेर यानी बढ़ई से उत्पन्न बताते हैं। वास्तव में कठेरिया के गौड़ होने में सन्देह है, गौड़ों की कन्याएं कठेरिया वंश में ब्याही जाती हैं। परन्तु इससे कोई परिणाम नहीं निकलता है।

चमर गौड़ और ब्राह्मण गौड़ों की शादियां भी कठेरियों में होती हैं। कठेरिया कहते हैं कि उनका निकास कटेहर से है जो कि रोहेलखण्ड का प्राचीन नाम है। "चमर गौड़ राजा और राय

---

1 Preliminary Report on the operation in search of Mss. of Bardic Chronicles. 1923 P. 21-22.

२ क्षत्रिकुल वंशावली।

३ रुद्रक्षत्रिय प्रकाश पृ० ५२।

४ गौड़ क्षत्रिय इतिहास पृ० १६, ६२

५ क्षत्रिय वर्तमान पृ० १८४

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दो शाखाओं में विभक्त हैं जो कि इनमें सर्वोच्च हैं" यह दन्त कथा जो कि अन्यत्र लिखी हुई है। फरुखाबादी में यह लोग अपने को राठौरिया कहते हैं और यह भी कहते हैं कि शाहजहाँपुर से दो भाई साढ़े और बाढ़े आये थे। हर एक भाई को वहाँ चौरासी चौरासी ग्राम मिल गये। बाढ़ेके बंशज वर्तमान में परगना शमसाबाद के पश्चिमी हिस्सेमें आबाद हुए, और साढ़े के वंशज शमसाबादके पूर्वी हिस्से और भोजपुरमें आबाद हुए थे। इटावा[1] के रहने वाले कहते हैं कि हम शौपरसे ई० स० ६५० में आये और वहां से मेवों को निकाल कर आप बस गये और उनका कहना है कि फिर उन की शक्ति को आल्हा-ऊदल बनाफर वीरों ने बारहवीं शताब्दी में नष्ट कर दिया[2]।

अवध के गौड़ों की प्रचलित कथा के विषय में हरदोई[3] में एक लोकोक्ति यों कही जाती है कि कन्नोज के राजा जयचन्द ने कुवेर शाह गौड़ को ठठेरों से कर वसूल करने को नियत किया था। जब यह कन्नौज में था तो उसके दो जुड़वाँ पुत्र उत्पन्न हुये। ब्राह्मणों ने ठठेरा सरदार से यह बात कही कि यह बालक बड़े

---

1 Settlement Report, 13.

2 Census Report, 1865, 1. App, 84.

शेरपुर का आबाद होना १५३५ ई० लिखा मिलता है Imp. G. सम्भव है कि ४६१ ई० के शिला लेख के अनुसार जो उधर गौड़ राज्य करते थे, उनकी वह सन्तति हो।

3 Settlement Report 100.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वीर और प्रतापी होंगे और उसको राज्यच्युत कर देंगे। ठठेरा सर्दार ने इस विघ्न को टालने के लिये उन दोनों बच्चों को मार देने के लिए हुक्म दिया। ब्राह्मणों ने सोचा कि जब कुबेरशाह लौटेगा और बच्चों की हालत को देखेगा या सुनेगा तो मर जायेगा। इसलिये उन्होंने उन बच्चों को जीता ही जमीन में गड़वा दिया। कार्य समाप्त होने ही पाया था कि कुबेरशाह लौट आया और उसने यह कुसम्वाद सुने और बच्चों को खुदवा कर निकलवाया। दोनों बच्चे अभी तक जीवित थे। उनमें से एक बच्चे की आँख जाती रही थी। इसलिए उसका नाम "करण" पड़ गया और दूसरे का नाम "अनाय" या "पखिन" (अर्थात् दीवार के अन्दरसे निकले हुए) पड़ा। इन्हीं के वंशजों से 'कारण' 'अनाई' और पखनी गौड़ों की शाखायें निकली है उन्नाव * में कुछ गौड़ हैं जिनके पास जमीनें हैं। उनका कहना है कि उनको वह जमीनें बाबर बादशाह ने बख्शी हैं। ये ब्राह्मण गौड़ हैं और इनका मोद्गल गोत्र है।

परगना हरवा में कुछ गौड़ हैं जो कहते हैं कि दूसरे गौड़ उन्हीं से निकले हैं। यह भी ब्राह्मण गौड़ हैं और इनका गोत्र भी वही है। परन्तु वह लोग अपनी उत्पत्ति का वर्णन और प्रकार से करते हैं कि "बन्थर गाँव" में "गद्दी" नामक एक जाति रहती थी जो एक प्रकार से गडरिये की श्रेणी से थी और उनका पेशा चरवाहों का था। वह अपना राज्यकर बादशाह को घी

* Elliat, Chronicles, 52.

के रूप में दिया करते थे। एक साल उन लोगों ने(या तो धोखा देने के विचार से या विद्रोह करने के विचार से) कर स्वरूप में जो घी भेजा करते थे उन बर्तनों में गोबर भर दिया ऊपर थोड़ा घी भरकर ढक दिया। जब यह धोखा बादशाह के दरबार में प्रगट हुआ तो बादशाह ने "गोरप देस गौड़" को जो दिल्ली की सैना में उच्चपदाधिकारी था उन विद्रोहियों को दमन करने के लिये आज्ञा दी। उसने आकर यहाँ के विद्रोहियों को दमन किया औ पुरस्कार में उसको वही गांव मिल गये। फिर वह अपने कुटुम्ब सहित वहाँ घर रहने लगा।

चमर गौड़—राजपूतों की एक शाखा है, जिसके विषय में सर एच० एम० इलियट लिखते हैं*—"गौड़ राजपूतों में चमर गौड़ की एक शाखा है। चमर गौड़ की भी उच्च शाखायें हैं जो राजा और राय कहलाते हैं जिनकी कथा निम्न प्रकार हैं:—

जब गौड़ वंश पर विपत्ति आई तो उस समय उस वंश की एक स्त्री गर्भवती थी। उसने एक चमार के घर में आकर शरण ली। चमार की सेवा के उपकार से वह इतनी कृतज्ञ हुई कि उसने चमार से प्रतिज्ञा की कि उसके जो संतान होगी उसका नाम उसी चमार के वंश से रखेगी। आश्चर्य का विषय है कि जिन दूसरे गौड़ वंश के लोगों ने भाट और ब्राह्मणों के घर में जाकर शरण ली। उन भाटों और ब्राह्मणों ने उनके साथ इतनी सहानुभूति नहीं दिखलाई, जितनी कि उस चमार ने दिखलाई

---

* Supplementary Glossary S. V. Gaur Rajput.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

थी। इसी कारण यह वंश फिर चमर गौड़ कहलाने लगा। कहा जाता है कि परगना साण्डीला और हरदोई में "ठठेरा" * लोग रहा करते थे जो "भर" जाति के सदृश थे। फिर वहाँ पर जयचन्द के समय में यह चमर गौड़ बिजनौर के नजदीक से आकर बस गये। इन चमर गौड़ों के साथ इनके दो सरदार भी थे और इनके साथ दीक्षित ब्राह्मण भी थे जो अब तक इनके पुरोहित हैं। ये चमर गौड़ उन चमर गौड़ों से जो कानपुर के निकट से आये बिल्कुल भिन्न हैं क्योंकि उनके पुरोहित तिवाड़ी ब्राह्मण हैं। हरदोई के सेटिलमेन्ट रिपोर्ट लिखने वाले ने चमर गौड़ों की बाबत इस प्रकार लिखा है:—चमर गौड़ जिद्दी झगड़ालू हैं। इनमें केवल एक ही गुण है कि वह अपनी कन्याओं की हत्या नहीं करते हैं। शायद इसलिये कि वह नाम के राजपूत हैं और असली राजपूत नहीं हैं।

इनके पूर्वज गंगासिंह वही जो "काणा" मशहूर था ने ठठेरों को मार भगाया। ‡

गौड़ क्षत्रिय सूर्य्य वंशी हैं। अतः यह उचित जान पड़ता है कि सूर्य्य वंश का इतिहास भी लोकोक्ति अनुसार पाठकों के मनोरञ्जनार्थ उद्धृत करूं। अतः भारत से लेकर वर्तमान समय तक के गौड़ क्षत्रियों का अद्यावधि संक्षेप में नीचे दिया जाता है।

———

* Oudh Gazetteer III, 307

‡ Tribes & Caste N. W. P. & Oudh, Vol. II. PP. 197.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सूर्य्य वंशीय गौड़ों का इतिहास

सूर्य्य पुत्र वैवस्वत मनु से राजा रामचन्द्र तक का शृङ्खला-बद्ध वृतान्त बाल्मीकीय रामायण * व श्रीमद्भागवत में यथा क्रम उल्लिखित है। अतएव यहां लिखने की पुनः आवश्यक्ता नहीं है। श्री रामचन्द्र जी के लघु भ्राता श्री भरत जी ने गन्धर्वों को परास्त कर अपने पुत्र तक्ष को तक्षशिला और पुष्कल को पुष्कलावती का राज्य दिया। जिसका वर्णन बाल्मीकीय रामायण में इस प्रकार है कि कुछ समय के बाद कैकय देश के राजा युधाजित ने श्री रघुनाथ जी के निकट अपने गुरू गार्ग्य जी (जो अङ्गिरा के पुत्र थे) को दश सहस्र उत्तम काबुली घोड़े, नाना प्रकार के वस्त्र, रत्न, आभूषणादि सहित भेंट के निमित्त भेजा। रघुनाथ जी ने जब यह सुना कि गार्ग्य आते हैं जिनके साथ अश्वपति मामा ने घोड़े, रत्न और बहुत धन भी भेजा है एक कोस तक भाइयों सहित ऋषि की अगवानी को गये। जैसे इन्द्र बृहस्पति की पूजा करते हैं उसी प्रकार रामचन्द्र जी ने महर्षि गार्ग्य की पूजा की। तत्पश्चात् गार्ग्य द्वारा वह मामा का भेजा हुआ धन प्राप्त कर वहाँ की कुशलता पूछी। फिर रघुनाथ जी ऋषि को राज मन्दिर में लाकर कहा मातुल का सन्देश बतायें जिस कारण वश आप यहां पधारे हैं। आप बोलने में साक्षात बृहस्पति के तुल्य हैं। ऐसे रामचन्द्र के

* बाल्मीकीय रामायण उत्तर काण्ड। १००—१०१ सर्ग

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बचन सुनकर महर्षि ने इस प्रकार से सन्देश का वर्णन किया ! हे नर श्रेष्ठ महाभुज आपके मामा युधाजित ने यह सन्देश दिया है कि गन्धर्व देश जो सिन्धु नद के दोनों तट पर बहुत से फल मूलों से सुशोभित है उसकी रक्षा युद्ध विद्या विशारद शस्त्रधारी महावली तीन कोटि शैलूष गन्धर्व के पुत्र करते है। हे काकुस्थ ! उन गंधर्वों को परास्त कर इस गन्धर्व नगर को अपने राज्य में मिलाइये हे महाभुज ! इस परम सुन्दर देश में दूसरे की गति नहीं है यदि आपकी इच्छा हो तो उद्योग कीजिये मैं आपका अनभल नहीं चाहता । मामा के इस सन्देश से अति प्रसन्न हो रामचन्द्र जी ने स्वीकार कर भरतजी की ओर देखा और दोनों हाथ बांध गार्ग्य ऋषि से बोले, महर्षि ! आपका भद्र हो यह दोनों भरतजी के कुमार तक्ष और पुष्कल उस गन्धर्व देश को जायेंगे। और अपने धर्म्म में सावधान हो मामा से सुरक्षित उपरोक्त देश का राज्य-शासन अपने हाथ लेंगे। इनके साथ बहुत सी चतुरङ्गिनी सेना ले धर्मात्मा भरत गन्धर्व कुमारों को युद्ध में परास्त कर वहाँ दो नगर बसायें जिनका राज्य अपने पुत्रों को सोंप शीघ्र ही यहाँ लौट आवेंगे। इस प्रकार ब्रह्मर्षि से कह रघुनाथ जी ने सेना सहित भरतजी को जाने की आज्ञा दे दोनों कुमारों का अभिषेक किया। शुभ नक्षत्र में अङ्गिरा के पुत्र गार्ग्य को आगे कर दोनों कुमारों को साथ ले सेना सहित भरतजी ने प्रस्थान किया। वह सेना इन्द्र तुल्य विक्रम भरत जी पालित नगर निकल कर उनके पीछे पीछे चली। देवताओं से दुर्द्धर्ष दोनों राजकुमार उस सेना की रक्षा करते थे। कुछ दूर जाने के पश्चात् मांसाशी अकाशचारी, तथा अन्य

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ऐसे ही जीव गन्धर्व पुत्रों के माँस भक्षणार्थ चले। वह सेना निरोग्यतापूर्वक डेढ़ मास में कैकय देश पहुँची जब कैकय देश के राजा ने सुना कि भरत सेनापति होकर आये हैं तब राजा गार्ग्य से बहुत प्रसन्न हुये। कैकयाधिपति युधाजित और भरत अपनी सेना लेकर गन्धर्वों के देश पहुँचे। भरत को युद्ध के निमित्त आये सुन गन्धर्व एकत्रित हो युद्ध लालसा से गर्जने लगे। दोनों ओर से युद्ध आरम्भ हुआ, सात अहोरात्र पर्यन्त युद्ध होने पर भी किसी की जय दुन्दुभी नहीं बजी, युद्ध क्षेत्र में रुधिर की नदी बहने लगी जिसमें खड्ग शक्ति और धनुष ग्राह रूप योद्धाओं के देह कच्छपाकार दृष्टिगत होते थे। तब भरत ने महा क्रोधित हो सम्वर्तक नामी कालास्त्र गन्धर्वों पर छोड़ा जिस से गन्धर्व लोग काल पाश में बंध गये। ऐसी लोकोक्ति है कि उपरोक्त कथित अस्त्र द्वारा भरत ने क्षण मात्र में तीन कोटि गन्धर्व रणक्षेत्र देवी की गोद में सदा के लिये सुला दिये। उक्त गन्धर्वों में जो परास्त हुये वे प्राण बचा यत्र तत्र चल दिये। युद्ध से निवृत्ति पा केकैयी पुत्र भरत ने फिर वहां दो उत्तम समृद्धिशाली नगरों की स्थापना की, अपने पुत्र तक्ष को तक्षशिला १ और पुष्कल को पुष्कलावत २ नगर

१—वितस्ता के पश्चिम और सिन्ध नद के दोनों पार्श्व में गन्धर्व देश था, भरत ने इस देश को दो भागों में विभक्त किया था, सिन्धु के पूर्व का भाग अपने पुत्र तक्षको दिया। तरङ्गिणी मासिक,जुलाई १९१९। जो वर्तमान टेक्सिला नामक नार्थ वेस्टर्न रेलवे का रावलपिण्डी के समीप का स्टेशन है। इस प्राचीन नगर की खुदाई सरकारी Archaeological Dept. ने की है। जिसे पथिक जन देखने को जाते हैं। २—यह जिला पेशावर में थी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(गान्धार देश) का राज्य दिया। दोनों नगरों की शोभा का वर्णन विस्तारपूर्वक होने से छोड़ा गया है। तो भी वहाँ का व्यवहार नीति, धर्म, संस्कृति का प्रसार बहुत उच्च कोटि तक पहुँचा हुआ ज्ञात होता है। पाँच वर्ष पर्यन्त भरत ने उन नगरों के राज्य की संरक्षता पूरण रूपेण की, तत्पश्चात् जब जनता सुखपूर्वक स्वतन्त्र रूप से आपने अपने कार्यों को चलाने लगे और उधर राज्य की नींव दृढ़ हो गई तो पञ्च वर्षोंपरान्त भरत ने अयोध्या की राह ली और कुछ समय पश्चात ही आकर श्री रामचन्द्र के दर्शन किये और वहाँ के वृतान्त की कथा अद्योपान्त कह सुनाई। उधर भरत की सन्तति निश्चिन्त रूपेण अपनी प्रजा का पालन करती रही। भारत की सत्रवीं पीढ़ी में नार ऋषि देव राजा हुए। जो अपने पुत्र का विवाह तथा भागीरथी का स्नान कर तक्षशिला को जा रहे थे कि मार्ग में बिठूर के समीप नारद मुनि के दर्शन हुए राजा ने ऋषि को प्रणाम कर सत्कार पूर्वक पूजा की, ऋषि ने राजा को सदुपदेश दिया, जिस अमृतमय उपदेश को सुन कर राजा की इन्द्रियां शान्ति को प्राप्त हुईं। तब राजा ने बिठूर में ही रहने का निश्चित संकल्प कर अपने पुत्र मनुऋषि देव का वहीं राज्याभिषेक कर तक्षशिला का राज्याधिकार दे वहां जाने का आदेश किया, किन्तु उस सुपुत्र ने अपने पिता से साथ जाने की प्रार्थना की, तब राजा ने उसे यह उपदेश "हमारे पूर्वजों का यही देश है जो ब्रह्मावर्त के नाम से प्रसिद्ध है। इसी देश में राजा मनु जिनके हम वंशज हैं तथा ध्रुव इत्यादि का जन्म भी इसी देश

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

में हुआ था। इधर ही बाल्मीक का जन्म हुआ, जिस स्थान को ही पवित्र जान मैंने अपनी तपस्याके योग्य पाया, अतः मुझे अपना शेष जीवन इसी तपस्वी क्षेत्रमें व्यतीत करने दो" करा स्वराजधानी को भेज दिया। आप वहीं बिठूर में तपस्या करने लगे, आपने वहाँ "नारद मंदिर" भी निर्मान कराया। राजा ने जहाँ तपस्या की उस स्थान पर एक "नार" नाम का गाँव, परगना रसूलाबाद ज़िला कानपुर में विद्यमान है। यहीं पर वह मन्दिर भी है, किसी समय यह स्थान बहुत ही रमणीक था। इसके पास ही एक नदी प्रवाहित है। मंदिर केवल नाम मात्र ईंटों के ढेर के रूपमें विद्यमान है। इसकी दुरावस्था का लोकोक्ति द्वारा भास होता है कि यवनों ने इस की यह दशा बना दी है। मंदिर के समीप ही खण्डहररूप एक गढ़ भी उस समय का स्मरण करा रहा है उपरोक्त राजा के पश्चात भी कई राजाओं ने यहाँ आकर तपस्या की और मठ मन्दिरों को निर्माण कराया। यह स्थान ई. आई. रेलवे पर कानपुर से दिल्लीकी ओर झींझक स्टेशन से चार मील की दूरी पर है। प्रतीत होता है कि यह स्थान पूर्वकाल में अवश्य ही रमणीक और सुहावना होगा, यवन काल में यह ब्रह्मावर्तीय स्थान रसूलाबाद के नाम से विख्यात हुआ और जो देव स्थान थे सब नष्ट भ्रष्ट कर दिये गये हैं। राजा नार ऋषि देव की कितनी ही पीढ़ियों के पश्चात राजा चन्द्र हास देव बड़े बलशाली हुये। इनकी सैकड़ों रानियाँ थीं, जिन्होंने एक सहस्त्र पुत्र उत्पन्न किये थे अनन्तर राजा तरगुल्फ देव महारथी हुये, जिन्होंने गन्धर्वों को युद्ध क्षेत्र में परास्त कर उनकी कन्या

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अहिल्या से पाणिग्रहण किया। उनके तीस पुत्र बड़े पराक्रमी हुये जिन्होंने धुन्धक दैत्यों को तीन वर्ष पर्यन्त युद्ध कर उनकी इति श्री की। उनके पश्चात् राजा करुष देव हुये, इनके पचास पुत्र थे जिन में से दश महारथी थे। इनके पश्चात् महाभारत काल में राजा बृहद्रथ का पुत्र राजा जयद्रथ सिन्ध देशमें हुआ१। जब यह शाल्व देश में विवाहार्थ जा रहा था, तब मार्ग में द्रोपदी के दर्शन कर मोहित हो राजा कोटिकाख्य से बोला कि देखो यदि यह सुन्दरी प्राप्त हो जावे तो मैं विवाह न कराऊँगा, राजा कोटिकाख्य द्रौपदी के पास गया तो उसने पूछा कि तुम कौन हो? उसने कहा कि मैं शिवि बंशीय राजा सुरथ का पुत्र हूँ मेरा नाम कोटिकाख्य है। मेरे साथियों का परिचय इस प्रकार है, राजा दोमक त्रिगर्त देश के पति का पूत्र है, नड़ाग के समीप इक्ष्वाकुवशीय राजा सुबल का सुत है वह अंगारक, कुञ्जर, गप्तक, शत्रुञ्जय, सञ्जय, सुप्रवद्ध, प्रभाकर, भमर, रवि, सूर, प्रताप और कुइन इस बारह राजाओं से परिवृत सिन्धु सौबीर देश का राजा जयद्रथ है और उसके भाई बलाहक, अनीक और विदरण आदि भी संग में हैं।

द्रौपदी ने उत्तर दिया कि मैं द्रुपद राजा की पुत्री और पाण्डवों की स्त्री हूँ द्रौपदी मेरा नाम है। पति आखेट गये हैं। आप सब ठहरें, राजा आपका सत्कार करेंगे, ऐसा कह भीतर गई। कोटिकाख्या ने जाकर सब वृतान्त जयद्रथ से कह सुनाया। तो जयद्रथ अपने छै साथियों सहित द्रौपदी के पास गया। और क्षेम कुशल

१—बन पर्व, द्रौपदी हरण व जयद्रथ विमोक्ष पर्व

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पूछी, और द्रौपदी ने भी प्रत्युतर में ऐसा पूंछकर सत्कार पूर्वक बैठने को आसन दिये और कहा कि अभी राजा आते हैं आपका अत्तिथि सत्कार करेंगे, जयद्रथ ने कहा हमारे संग चल, इस पर द्रौपदी ने अपमानसूचक शब्दों से उसका अभिनन्दन किया, परन्तु जयद्रथ ने बलपूर्वक अपने रथ पर बिठा कर निज देश को ले भागा, धौम्य भी उसके पीछे २ चले, इतने में पाण्डव भी आहेर से लौटे तो धात्री को व्याकुल रुदन करती पाया इन्द्रसैन ने उस से वृतान्त पूछ. उसके बताने पर पाण्डवों ने उसका पीछा किया मार्ग में धौम्य मिले, युधिष्ठिर ने उनसे कहा कि आप धीरे धीरे आइये, उनके शीघ्रता पूर्वक जाने पर जयद्रथ तथा द्रोपदी दृष्टिगत हुई, इसी अवसर पर शिवि सौवीर और सधव से उनका युद्ध आरम्भ हुआ, जयद्रथ के साथी और सैना नष्ट होगई कुछ भाग निकली यह देख जयद्रथ भी द्रौपदी को छोड़ कर प्राण ले भागा, जब वह दूर जाने से आदिष्ट होगया तो भीमसैन ने राजा युधिष्ठिर से सबको साथ लेकर लौट जाने को कहा, आप अर्जुन सहित जयद्रथ के ढूंढने को गया, इनके प्रस्थान के पूर्व युधिष्ठिर ने कहा था, कि यद्यपि जयद्रथ ने बहुत निकृष्ट कार्य किया है तो भी भग्नि दुःशाला और माता गान्धारी का ध्यान रख उसे मारना नहीं। धर्म्मराज के आदेशानुसार भीम और अर्जुन जयद्रथ को बन्दी कर ले आये और द्रौपदी हरण का दण्ड दिया फिर भी द्रौपदी के आग्रह करने पर उसे मुक्त कर दिया। उसी समय वह घर को ओर न जाकर गङ्गा द्वार की ओर गया, और वहाँ जा तपस्या में

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

संलग्न हो गया। जब महादेव उसकी तपस्या से सन्तुष्ट हुये तब प्रकट हो बोले ! वर माँगो !! जयद्रथ ने प्रार्थना की कि भगवन ! मैं पाँचों पाण्डवों को युद्ध में परास्त करना चाहता हूँ तो शिव ने उत्तर दिया कि अर्जुन तो प्रथम ही तपस्या करके पाशुपत अस्त्र ले चुका है, इस कारण अर्जुन को युद्ध में कोई परास्त नहीं कर सकेगा, उसके अतिरिक्त चारों पाण्डवों को तुम एक दिवस के युद्ध में परास्त कर सकोगे। शिव ऐसा कह अन्तर्धान होगये तो जयद्रथ ने भी अपनी राजधानी का मार्ग पकड़ा।

महाभारत में जब अभिमन्यु चक्रव्यूह भेदन को गया था उस समय जयद्रथ ने धृष्टद्युम्न, विराट, द्रुपद आदि महारथियों से सुरक्षित होने पर भी अभिमन्यु को पाण्डवों ने जितनी वेर बचाने के विचार से उसे चक्रव्यूह के भीतर जाने की चेष्टा कराई, उतनी वेर केवल जयद्रथ ने अभिमन्यु द्वारा तोड़े गये व्यूहके द्वार बन्दकर उसे भीतर प्रवेश करने से रोक दिया, उस समय जयद्रथ ने भीम को विरथ कर सब पाण्डवी सेना को निवारण कर दिया था। यह फल शिवके प्रदत्त वरदानका ही था। जब अभिमन्यु मारा गया और अर्जुन को पता लगा कि जयद्रथ ने शिव के प्रदत्त वरदान से उपरोक्त घटनायें कीं। तो अर्जुन ने राजा युधिष्ठिर से कहा; महाराज ! मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि कल ही जयद्रथ को मारूंगा, उसने यह हमारे पूर्व किये उपकारों को कृतघ्नतापूर्वक भूल कर दुर्योधन का साथ दिया, इतने पर ही वह स्थिर न रहकर आज इस महा शोचनीय मृत्यु का भी वही मूल कारण बना। इससे कल ही मैं

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उसे इस असार संसार से सदा के लिये बिदा कर दूंगा, हे श्रेष्ठ पुरुषो! यह जो मैंने कहा यदि ऐसा न कर सकूं, तो पुण्यवान लोगों की सो मेरी गति न हो। मैं स्वर्ग न प्राप्त करूं यदि कल जयद्रथ का बध न कर दूं। अतः मेरी वही गति हो जो माता पिता मारने, विश्वासघाती मनुष्यों की होती है। यदि जयद्रथ के जीवतावस्था में सूर्य्यास्त होगया तो उसी स्थान पर आप जनों के सम्मुख मैं प्रज्वलित चिता में जलकर भस्म हो जाऊंगा। जब यह प्रतिज्ञा गुप्तचरों द्वारा जयद्रथ को ज्ञात हुई तो उसने कौरवों की सभा में जाकर कहा कि हे भूपाल वृन्द! धनञ्जय ने मुझे कल सूर्य्यास्त से प्रथम बध कर देने की प्रतिज्ञा की है। इसलिए आप कल मेरी रक्षा का विशेष प्रबन्ध करें। वरन् मैं स्वयं भागकर अपने प्राणों की रक्षा कर सकूंगा। तिस पर दुर्योधन ने कहा कि मैं अपनी ग्यारह अक्षौहिणी सैना को केवल आपकी रक्षा हेतु ही नियुक्त कर दूंगा और कर्ण, भूरिश्रवा, शल्य, सुदक्षिण, अश्वत्थामा, शकुनि इत्यादि वीरों को तुम्हारे चारों ओर रखेंगे। आप स्वयं रथी वीरों में एक श्रेष्ठ योद्धा हो फिर अर्जुन की प्रतिज्ञा से भय क्या करते हो? उसी प्रकार द्रोणाचार्य ने जयद्रथ को अभयदान दिया। प्रातः काल द्रोणाचार्य ने जयद्रथ से कहा कि हे सिन्धु राज! आप छै कोस मेरे पीछे रहो वहाँ एक लक्ष सेना सहित कर्ण, अश्वत्थामा और कृपाचार्य तुम्हारी रक्षा करेंगे। इससे अर्जुन आप तक पहुँचने ही नहीं पावेगा क्योंकि इतनी सेना और रथियों को पार कर सूर्य्यास्त तक पाण्डवों क्या देवताओं के लिये भी कठिन

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

नहीं वरन् असम्भव है, जयद्रथ गांधार देशके बहुसंख्यक योद्धाओं और घोड़सवारों सहित द्रोणाचार्य के आदेशानुसार निश्चित स्थान पर उनके पीछे की ओर गये ! उस दिन युद्ध होते सूर्य्य का बिम्ब बादलों में छिप गया इसी से कौरवों ने जाना कि अब सूर्य्यास्त होगया । तब वह आनन्दकी सीमासे बाहर प्रमोदमें होनेके कारण असावधानी में परिणत हुये । क्योंकि अब तो सावधानता की आवश्यकता ही नहीं रही थी ।

उधर जयद्रथ भी मारे आनन्द से प्रफुल्लित हो रक्षित स्थान को त्याग लुप्तमय सूर्य्य को आनन्द से देखने लगा यथार्थ बात क्या है जिसे केवल कृष्ण ही जानते थे, कि सूर्य्य अभी अस्त नहीं हुआ, इसी कारण उन्होंने तत्काल अर्जुन से कहाः—हे अर्जुन ! यथार्थ में अभी सूर्यास्त नहीं हुआ, अब इस अवसर को न जाने दो, तुरन्त जयद्रथ के सिर को पञ्चतत्व देह से न्यारा कर दो, इस समय तुम इस कार्य को अनायास ही कर सकते हो। यह आदेश पाते ही अर्जुन जयद्रथ के रथ की ओर लपका, जो योद्धा जयद्रथकी रक्षा नमित्त नियुक्त थे वह प्रथमकी नांई सावधान तो थे ही नहीं। इसी कारण जयद्रथ को घेरने का सुअवसर उन्हें प्राप्त न था। अर्जुन को क्रोधित आता देख भयभीत हो सैनिकों ने भी मार्ग दे दिया तब अर्जुन जयद्रथ के समीप पहुँचा, अपने दातों को अपनेही ओष्ठोंसे काटते हुये क्रोध युक्त एक बान छोड़ा, बाज पक्षी जिस प्रकार किसी चिड़िया को लेकर उड़ जाता है ठीक उसी प्रकार अर्जुन का वह बाण जयद्रथ के सिर को ले उड़ा,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उधर आकाश में जो मेघ सूर्य्य बिम्ब को छिपाये हुये थे एक ओर हट गये, सूर्य्य के रक्तमय बिम्ब का शेषांश दृष्टि गोचर होने लगा। तब सभी को ज्ञान हुआ कि सूर्य्यास्त अभी नहीं हुआ था जब कि अर्जुन ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी करदी। वह कटा हुआ सिर बाण ने जयद्रथ के पिता वृहद्रथ की गोद में जो समीपवर्ती समन्त पञ्चक किसी स्थान में तप कर रहा था, फेंक दिया। उसका पिता उस समय सन्ध्या कर रहा था, वह भूमि पर उसे फेंकते ही आप भी प्राणान्त गति को प्राप्त हुआ। जयद्रथ का जब जन्म हुआ था तो आकाशवाणी हुई थी कि यह बड़ा बली होगा और इसका मस्तक युद्ध में एक वीर महा पुरुष काटेगा। तब उसके पिता वृहद्रथ ने कहा कि जो कोई मेरे पुत्र का सिर गिरायेगा उसका भी सिर सौ टुकड़े हो जायेगा, इसी कारण अर्जुन के बाण ने उसका सिर उसके पिता की गोद को ही समर्पित किया। जयद्रथ के पश्चात उसका सुरथदेव नामक पुत्र सिंहासन रूढ़ हुआ।

राजा प्रभुदित्य देव उपरोक्त उल्लिखत राजा की कई पीढ़ियों पश्चात हुआ। उसके द्वितीय राजकुमार सिंहादित्यदेव थे, उनका विवाह कनकपुर के राजा की पुत्री से हुआ था, वह बङ्ग देश को सेना लेकर गये, अपने सुसर की सहायता से उन्होंने वहां के क्षुद्र राज्यों को परास्त कर अपना गौड़* नामक राज्य स्थापित

* पुरानों से पाया जाता है कि श्रावस्ती नगरी गौड़ देश में थी :—
श्रावस्ती च महातेजा वत्सकस्तत्सुतोऽभवीत् ।
निर्मता येन श्रावस्ती गौड़ देशे द्विजोत्तमा: ॥ ३० ॥मत्स्य पुराण अ० १२

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

किया, उसके पुत्र लक्ष्मणादित्य व विजयसिंह हुये। राजा लक्ष्मणादित्य ने लक्ष्मणावती (लखनौती) बसाकर अपनी राजधानी स्थापित की, ❋ इसमें गढ़, तालाब, वाटिका आदि बनाये और नगर को बहुत समृद्धिशाली बनाया। सिंहल व गौड़ देश के इतिहासों में बङ्गाल का प्राचीन वृतान्त इतना ही मिलता है कि सिंहबाहु नामी एक बङ्गाल का राजा था, जिसका ज्येष्ठ कुमार विजयसिंह प्रजा को दुःखी करने के कारण देश से निकाला गया तो वह सात सौ योद्धाओं सहित जहाज में सवार हुआ। अनेक प्रकार के कष्ट सहन कर वह सिंहल पहुँचा और वहां के अधिकारियों को परास्त कर उनका राजा बन गया। उसकी मृत्यु के पश्चात उसके भतीजे पाण्डुबाहु ने जो बङ्गाल में रहता था,

---

अवध के गोंडा (गौड़ ज़िले में सहेत और महेत गांवों की सीमा पर कोशल (उत्तर कोशल) देश का प्रसिद्ध श्रावस्ती नगर था और इ-क्ष्वाकु बंशी राजा श्रावस्त (शावस्त) ने उसे बसाया था। बौद्धों का प्रसिद्ध जेतबन बिहार यहीं था, जहाँ बुद्धदेव ने निवास किया, जिससे वह विहार बौद्धों में बड़ा ही पवित्र माना जाता था। अलबरुनी ने थानेश्वर देश का नाम गौड़ (गौड़) दिया है (एडवर्ड साचू;)

"अलबरुनीज़ इण्डिया" वि० १ पृ० ३००

❋—लखणोती (लक्ष्मणावती की स्थापना करने वाला उपरोक्त वर्णित राजा कल्पित ज्ञात होता है। कारण कि उपरोक्त राजाओं में से किसी एक का भी कोई लेख आज तक प्राप्त नहीं हुआ, मैंने इस विषय में बहुत अनुसन्धान किया है। उपरोक्त राज्य के स्थापित कर्त्ता का उल्लेख मैं सेनवंश के वर्णन में इस पुस्तक के पृष्ठ ३१-३२ पर कर आया हूं। पाठकों को स्मरण ही होगा।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सिंहलद्वीप के सिंहासन को जा सुशोभित किया। यह सिंहल द्वीप के राजाओं में प्रथम राजा था, सिंहवाहु का पुत्र होने से सिंह वंश कहलाया और सिंह वंश का राजा होने से उस द्वीप का नाम भी सिंहलद्वीप प्रसिद्ध हुआ। जिस समय बुद्ध भगवान का स्वर्गवास हुआ, उसी वर्ष विजयसिंह सिंहल में पहुँचा। इससे भास होता है कि ५ शताब्दी पूर्व ईस्वी सन के प्रथम बङ्गाल में आर्य गौड़वंश के लोगों का अधिकार था[१]। इसी की कई पीढ़ियों पश्चात राजा शूरसेन जिसे आदि शूर भी कहते थे, हुये,[२]। इन्होंने कई देशों को विजय किया, ऐसा एक भाट के कवित्त से प्रतीत होता है। शेष वृतान्त इससे पूर्व पाठक पढ़ आये हैं।

गौड़ देश के इतिहास में लिखा है कि शूरवंश के राजा गौड़ में दरद देश (दर्दिस्थान) से यहाँ आये। इस वंश के राजाओं के नाम भी दिये हैं। जो शृङ्खलाबद्ध प्रमाणित नहीं होते। आदि शूर के वंशजों को ही शूर वंश के राजा लिखा है। कुछ लोगों का कथन है कि उपरोक्त राजा की तीसरी पीढ़ीमें तिलोकचन्द विक्रम सम्वत् के आदि में ही गौड़ देशका शासनकर्ता था। इनका विवाह उज्जैन की राजकुमारी भर्तृहरि की सहोदरा मैनावन्ती से हुआ था। इनका

१—इसका कोई प्रमाण प्राप्त नहीं हुआ न ही कोई शृङ्खलाबद्ध वंशावली प्राप्त हुई, जिससे निश्चयपूर्वक हम यह कह सकें कि यह सभी वंश एक ही वंश की शाखें थीं, जिनका वहाँ आधिपत्य रहा।

२—धर पूरब महायुद्ध भारत मंडे, खाग दल बहोल खंडे।
लखो गिरजन उठि भख वन, मुख रुदिर चवन्ति सरद रैन॥
परबचन्दना सीप समन्द मुख जवा,
तिन महाराज गवड़ शूरसिंह मोता हल रक्ता हुआ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पुत्र राजा गोपीचन्द हुआ। जिसने गोरखनाथ से योग ग्रहण कर माता के आदेशानुसार उसका शिष्य बना था*। जिसके गीत खास कर रंगपुर (बंगाल) जहां उनकी राजधानी थी, तथा अन्य स्थानों में भी प्रायः गाते हैं, जिनमें एक यह भी है—

आया गोपीचन्द गौड़ बङ्गाले राज करां सब देश।
माता मेरी मैनावन्ती मामा मेरे भर्तृहरि जान।
पिता हमारो जाने पृथ्वी नाम तिलोकचन्द।
सूर्यवंशी जात हमारी हैं राजा के पूत।
योगी होकर चल्यो जङ्गल में लग्यो ज्ञान को बान॥

ऐसी लोकोक्तियों से भी पता चलता है कि वह सूर्यवंशी थे। 'गोपीचन्द भर्तृहर' गौड़ का उल्लेख देश के इतिहास में सूर्य से ही किया गया है। गोपीचन्द के योग लेने पर कुबेरचन्द राज्याधिकारी हुए। यह दत्तक पुत्र थे, इनके सिंहासनारूढ़ होने पर बहुत से झगड़े निकटवर्ती भाइयों में चले, इनकी दश पीढ़ी पश्चात राजा जगन्नाथ हुये जिनके राजा होते ही पुनः विद्रोह आरम्भ हुआ, राजा युद्ध देवी की भेंट हुए। दूसरा दल प्रयाग ज्योतिषपुर (राजाशाही बङ्गाल) के राजा से जा मिला। प्रयाग ज्योतिषपुर के राजा भगदत्तवंशीय हर्षदेव ने जब गौड़ में विद्रोह सुना तो स्वयम् आक्रमण कर गौड़ देश को प्राप्त किया। उपरोक्त जगन्नाथ के पुत्र सीताराम वहां से भागकर मारवाड़ की ओर जा परिहारों के सामन्त बन गये।

* गोरखनाथ का होना ८ वीं शताब्दी में निश्चय होता है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रतिहारों द्वारा प्राप्त जागीर के भूभाग का नामकरण (गौड़-वाड़ा" रक्खा, प्रतिहारों का राज्य मारवाड़ में लगभग नौवीं शताब्दी में स्थापित हुआ। वत्सराज के पुत्र नागभट्ट प्रतिहार ने जब कन्नाज पर आक्रमण कर चन्द्रायुध को परास्त कर कन्नौज का साम्राज्य ले लिया। इस युद्ध में मदनचन्द गौड़ के पुत्र नाहरदेव, बाहरदेव, उदयसिंह और रणसिंह भी सम्मिलित थे,[1] इस युद्ध में उदयसिंह और रणसिंह रणदेवी की भेंट हुये। शेष दोनों भाइयों को काल्पी का परगना; गढ़ और राजा की उपाधि से कन्नौज दरबार ने सम्मानित किया। उन्होंने काल्पी में अपनी सत्ता लगभग ८८० विक्रमी को स्थापित की, गौड़वाड़े में दूसरे भाई अपना अधिकार जमाए रहे, किन्तु चौहान माणिक्यराय

१—सीताराम से यशवन्तसिंह जो बाहर देव का भाई गौड़वाड़े रह गया था, उसतक २१ पीढ़ी होती हैं, ऐतिहासिक दृष्टके अनुसार यदि २५ वर्ष प्रत्येक पीढ़ी को अन्तर दिया जावे तो ५२५ वर्ष होते हैं। उधर वत्सराज का समय आठवीं शताब्दी सिद्ध हुआ, तो सीताराम गौड़ का आना प्रतिहार राज्य-काल में तीसरी शताब्दी निश्चित होता है, जो कि गौड़ क्षत्रिय इतिहास लेखक की अन्य त्रुटियों की भाँति यह भी कल्पित है, नागभट्ट जिसने कन्नौज हस्तगत किया वह ८९० भाद्रपद शुक्ल ५ को स्वर्ग सिधारा, अब पाठकों को ज्ञात हो जावेगा, कि उधर तो एक शताब्दी ही प्रतिहारों के राज्य मण्डोर और कन्नौज का अन्तर देती है, उधर सीताराम और नाहरदेव में २१ पीढ़ी। हाँ ४६१ के लेखानुसार गौड़ों का इधर मारवाड़-मेवाड़ में ही अधिकार रहना मानना उचित है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(लक्ष्मण)* के आक्रमण के समय इनका अधिकार जाता रहा।

उपरोक्त कथित कालपीशाख ने यमुना तट पर अपना गढ़ बनाया, वहाँ कई पीढ़ियों तक राज्य करते रहे। औरङ्गजेब के समय जब कालपी पर मुगल का आक्रमण हुआ तो नाहरदेव के वंशज जो वहाँ के अधिकारी थे, परास्त हो राज्यच्युत हुये।

बाहरदेव जो नाहरदेव का दूसरा भाई था भगवतभक्त होने के कारण सतसंगी था, एक ब्राह्मणके सतसंग द्वारा उसे बिठूर ब्रह्मावर्त के महात्म्यका ज्ञान हुआ तो उसने अपने भाइ नाहरदेव सहित कन्नौज दरबार में जा प्रार्थना की कि बिठूर के इलाके पर हमारे पूर्वजों का अधिकार रहा था और वह पुण्य भूमि भी है। अतः उस इलाके की आज्ञा बाहरदेव के लिये प्रदान की जावे, कन्नौज दरबार ने उनकी प्रार्थना स्वीकार करली। बाहर देव ने नार में अपना राज्य स्थापित किया, उसके भाई बेटे यत्र तत्र ग्रामों में जा बसे। उनके पुत्र शिवराम देव ने नार में गढ़ बनवाया, इनके प्रपौत्र अमान देव ने एक गढ़ी भीञ्भक में निर्माण की, इनकी तीसरी पीढ़ी में राजा अजबदेव हुये। जिन्होंने नार खुर्द दूसरा ग्राम बसाया और वहां अजब सागर नाम का तालाब निर्माण कराया। इनके पौत्र प्रताप देव हुये जिन्होंने फरसू मधवापुर व परवर ग्राम बसाये और अपनी रानी के नाम पर वृन्दाबन ग्राम बसाया। इनके प्रपौत्र बनसिंह ने बरहुनि, वानबास और खेड़ा ग्राम बसाये और मधवापुर में गढ़ बनवाया। इनके पौत्र संग्राम देव ने माल गाँव

* Annals and Antiquities of Rajasthan Vol. 1. p. 128

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

और चामुण्ड देवी के मन्दिर की स्थापना की, इनके पुत्र मोहकम देव ने नैला शहर में गढ़ बनवाया और सार ग्राम की स्थापना की। इनके पुत्र सर्वजीत ने शाहपुर में गढ़ निर्माण कराया, ११५५ के लगभग चन्द्रदेव राठोर कन्नौजपति ने इस पर आक्रमण किया, तो राजा सर्वजीत भेंट सहित चन्द्रदेव के पास गया और निवेदन किया कि यह कन्नौज दरबारका प्रदत्त प्रसाद है। अतः अब जैसी आपकी इच्छा हो कीजिये, कन्नौज पति ने भी इसे पूर्ववत अपना सामन्त स्वीकार किया। चन्द्रदेव का राज्य उक्त समय में कन्नौज में ही था*। सर्वजीत के पुत्र विश्रामदेव ने विश्राम सागर बनवाया और हरियारी ताल खुदवाया। इनके पुत्र पृथ्वीचन्द देव को महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्र कन्नौज पति की बहिन ब्याही थी, जिस से कान्हदेव का जन्म हुआ, गोविन्दचन्द्र कन्नौज पति ने अपने बहनोई को सेनापति नियुक्त किया और उसी की उत्तेजना पर गौड़ देशपर आक्रमण कर विजय प्राप्त की थी। मुसलमानी आक्रमणों को भी गोविन्द चन्द्र देव कन्नौजपति ने भली प्रकार रोका उसी युद्ध में सेनापति पृथ्वी चन्द्रदेव वीर गति को प्राप्त हुये। कन्नौज पति को अपने सेनापति के स्वर्गगामी होने का बहुत शोक हुआ, उनके पुत्र सिंहदेव को कन्नौज दरबार ने नार का राज्य और बहुत से ग्राम दिये। दूसरे राजकुमार कान्हदेव को अपना

---

* P. M. P. Chandradeva of Kanauj Refered to by Vogel, PRAS. N. C., 1907-08, PP. 20 f & 39 No. 88.
Epigraphia India vol. IX. PP. 304 f.
इस समय ११४८ से ११५४ तक का मिलता है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सेनापति नियुक्त किया, राजा सिंहदेव के पौत्र बनवीर देव ने परवर में गढ़ बनवाया, इनके पुत्र हरदेव ने माल ग्राम, गढ़ और ताल बनवाया। उनके सात पुत्र रसिकचन्द्र, वत्सराज, बावनसिंह, बलारसिंह, रौचन्द्र, हृदयचन्द और भोनिकचन्द्र थे। राजा के स्वर्ग सिधारने पर रसिकचन्द्र अन्धे होने के कारण राज्यधिकारी न हुये, तो वत्सराज सिंहासनारूढ़ हुये। कुछ समय व्यतीत होने के पश्चात् आपसी विरोध होजाने के भय से अपने ज्येष्ठ भाई रसिक चन्द्र के पुत्र गोपाल चन्द्र को नार का राज्य सौंप दिया, द्वितीय पुत्र विजयसिंह (बिंबदेव) को राणा की उपाधि सहित बारण का परगना जागीर में दिया। इन्हीं के वंशज खानपुर, दिलवाल, और जलिहापुर के ठाकुर हैं। तृतीय पुत्र आशिष चन्द्र को घाटम-पुर का परगना दिया गया, जिनके वंशज वहाँ के चौधरी कहलाते हैं। चतुर्थ पुत्र होरिल चन्द्र को मिन्दमेक दिया। कुस के वंशज रावल कहलाये। फिर राजा वत्सराज ने अपने भाई बुलारसिंह को परगना गाहलों दिया और स्वयम् तीन भाइयों सहित तीर्थयात्रा को प्रस्थान कर गये। प्रथम श्रीजगदीश की यात्रा की फिर वहाँ से पुष्कर जी की यात्रा को लगभग ११८७-८९ में चले, संध्या होजाने के कारण अजमेर में ही ठहर गये। राजा दयासिंह नागोर उन दिनों पृथ्वीराज चौहान से द्रोह रखता था, किन्तु परस्पर सम्बन्ध में वह पृथ्वी राज का सुसुर था। इसी कारण चौहान उसे मारना नहीं चाहता था। उसी दिन रात्रि के समय जिस दिन कि गौड़ अज-मेर में उसी दरवाज़े पर ठहरे हुये थे, दयासिंह नागोर पति अजमेर पर आक्रमण करने आया था, जब उसने शहर के बाहर कुछ

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सैनिक पड़े देखे तो सावधान करने के शब्द से ललकारा। उत्तर में वत्सराज ने कहा कि हम युद्ध के लिये नहीं पड़े, हम तो श्री पुष्कर जी की यात्रा निमित्त आये हैं। रात्रि होजाने के कारण यहाँ पर विश्राम के लिये पड़े हैं। हम भी जाति के क्षत्रिय हैं। यह सुन दयासिंह ने कहा कि मैं नागौर का राजा हूं पृथ्वीराज को परास्त करने के लिये आया हूं। यदि आप पृथ्वीराज की ओर के नहीं हैं तो मेरी ओर हो जायें, पृथ्वीराज को मारकर अजमेर का राज्य तुम्हें दे देंगे। यह सुन कर वत्सराज बोले कि हम गौड़ क्षत्रिय हैं, क्षत्रिय होकर डाकुओं की वृत्ति कदापि अङ्गिकार नहीं करेंगे और तुम्हारा विचार भी हमें डाकुओं सा प्रतीत होता है अतः तुम्हें हम आगे जाने भी नहीं देंगे। इसी पर दोनों ओर से युद्ध आरम्भ हुआ, राजा दयासिंह परास्त हुये। किन्तु वत्सराज के दो भाई रोचन्द्र व हृदय चन्द्र युद्ध की भेंट हुये।

प्रातःकाल यह समाचार पृथ्वीराज चौहान को मिला वह स्वयम् युद्ध स्थान देखने आये। राजा वत्सराज (बच्छराज) से भेंट कर कुशल समाचार पूछने के पश्चात् उन्हें अपने यहाँ ले गये, पृथ्वीराज ने अपनी दो कन्याओं का विवाह क्रमशः राजा वत्सराज और उनके भाई बावनसिंह से कर दिया। वत्सराज को तो अजमेर में रख कर परगना केकड़ी, जूनियां, सरवाड़, देवलिया आदि का राज्य दिया ‡ और बावनसिंह को कुचावन व मारोठ का परगना दिया। उनके साथ जो अन्य गौड़ क्षत्रिय थे वह सभी वहां भली प्रकार से रहने लगे।

‡ Settlement Report of Ajmer & Mewar. 1875. P. 52.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सम्राट पृथ्वीराज के दिल्ली पधारने पर वत्सराज ने उपरोक्त परगनों सहित अजमेर का राज्य किया। इसी कारण इनके वंशज अजमेरी गौड़ कहलाते हैं।

चन्द्र कवि के पृथ्वी राज रासो और परमाल रासो में कितने ही स्थानों पर गौड़ वीरों का उल्लेख किया गया है। जो कि पृथ्वीराज की ओर से लड़े थे। राजा वत्सराज, बावनसिंह और अन्य कई गौड़ सरदार रण देवी की भेंट हुए थे। जब यवनों का आक्रमण अजमेर पर हुआ और तारागढ़ लूटा गया, उस समय वत्सराज के पुत्र तुलाराज ने जो अजमेर में थे, बादशाह के अधीनस्थ हो वहीं केकड़ी आदिके परगनें राज्यकर देने पर लिये। राजा तुलाराज की तीन पीढ़ियाँ यहाँ रहीं। राजा खींवसिंह के समय जब महमूद खिलजी सुलतान माण्डू ने चढ़ाई की उस समय खींवसिंह व हाकिम गजाधर राय से जो कि राणा की ओर से अजमेर में रहते थे, बहुत युद्ध हुआ। खींवसिंह परास्त हो वहीं रणक्षेत्रमें वीर गति को प्राप्त हुआ। इसका पुत्र नृसिंहदास अपनी माता के साथ अपनी ननिहाल जो सिसोदियों में थी चला गया। युवा होने पर मामा की सहायता से बहुत से वीरों को एकत्रित कर १५०५ में राणा रायमल के कुंवर पृथ्वी राज के साथ अजमेर पर जा आक्रमण किया। किन्तु भाटों की ख्यातों में उल्लेख है कि अजमेर पर नृसिंह देव ने आक्रमण किया था, इन लोगों ने घसियारों का वेश धारण किया, और अपने शस्त्र घासमें छुपाकर घास विक्रयार्थ गढ़ में प्रविष्टि हो गये; शेष जो बाहर रहे उन्होंने आक्रमण कर अचेत

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अवस्था में जा घेरा दोनों ओर के आक्रमण से विवश हो यवन परास्त हुये, गढ़ नृसिंह देव के हाथ लगा। दो पीढ़ियों तक इनके वंशजों ने अजमेर और केकड़ो आदि परगनों पर राज्य किया। शेरशाह सूरि ने गोपसिंह को राज्यच्युत किया। उस समय गौड़ों का सम्बन्ध बून्दी राज्य से था, इसलिये यह वहाँ चले गये। वहां इनको सम्मानपूर्वक रक्खा और लाखेरी ग्राम जागीर में दिया, बून्दी में गौड़ साङ्गावत—रावत आशकरण, गौड़ सुन्दरदास,[1] गौड़ गहपावत का उल्लेख नैणसी ने भी किया है[2] गौड़ों के वंश-वृक्ष अनुसार गोपसिंह की पाँचवीं पीढ़ी में योगीसिंह (जोगा गौड़)[3] भोज की ओर था, और दूदा की ओर धन्ना और बन्ना थे। दूदा और भोज दोनों सौतेले भाई थे, इस कारण आपस में दोनों का झगड़ा हुआ, हमीर दहिया ने भोज को लाखेरी के बोहरे से एकलक्ष रुपया अपनी जमानत पर ले दिया था। वह सम्राट अकबर के पास जा रहा, इधर दूदा को पता लगा, उसने भी इसे कहा कि एक लक्ष रुपया मुझे भी दे वरन् अभी मारता हूँ। हमीरने अपने भाई दौलत को बुलाकर सम्मति ले एक षडयन्त्र रचा कि पचास सहस्त्र रुपये नकद और पचास सहस्र में घोड़े आदि लगा लो, इस विवाद में दूदा के सभी सरदार धन्ना और बन्ना गौड़ सहित मारे गये। कुछ समय पश्चात दूदा का भी शरीरान्त हो गया। तो भोज बून्दी आकर सम्राट द्वारा सिंहासनारूढ़ हुआ। भोज के

१ – सुन्दरदास नामक महल शिवपुर बड़ोदा के गढ़ में अभीतक भी है।

२—मुहणोत नैणसी की ख्यात भाग १ पृष्ठ १०४

३—वही पृष्ठ ११२

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

समय में जब गोपालदास गौड़ को दहियों ने अपनी कन्या ब्याह दी तो इनका बैर मिटा और देश में शान्ति हुई।॥

योगीसिंह (जोगा) मरते समय अपनी सन्तति को यह आदेश कर गया था कि अपनी यहाँ पांच पीढ़ी सम्बन्धियों के रहते होगई हैं। इनके यहाँ रहना अनुचित है क्योंकि हम अजमेर के गौड़ कहाते हैं। तुम उद्योग करना, अजमेर नहीं तो निकटवर्ती किसी भूभाग को ग्रहण कर अपना अधिकार जमाना। यही मेरी हार्दिक इच्छा और अन्तिम उपदेश है।

इस समय यवन साम्राज्य फैल रहा है तुम अपनी वीरता का परिचय उन्हें दिखाओगे तो अवश्य राज्याधिकारी हो जावोगे। इनके स्वर्गारोहण पश्चात इनका ज्येष्ठ पुत्र गोपालदास गौड़ जहाँगीर बादशाह के पुत्र शाहजहाँ से जो दक्षिण के युद्ध पर जा रहे थे मिले वह इसे साथ ले गये, उन्होंने उस युद्धक्षेत्र में बड़ी वीरता का परिचय दिया, जिसकी प्रशंसा का पत्र शाहजहाँ ने अपने पिता को लिखा, इस पर बादशाह ने प्रसन्न हो गोपालदास को सात हजारी मनसब व राजा की उपाधि और सोंई का परगना दिया, जहाँ उन्होंने गढ़ निर्माण किया जो अब खण्डहर रूप में दृष्टिगत हो रहा है और ग्राम भी प्रायः साधारण रूप में परिणित हो गया है। जहाँगीर के समय यह असेर के गढ़पति थे और जब बादशाह और उसके पुत्र शाहजहाँ (खुर्रम) के मध्य वैमनस्य होगया तो उस समय गोपालदास अपने ज्येष्ठ पुत्र विक्रम सहित शाहजहाँ के

॥—मुहणोत नैणसी की ख्यात भा० १ पृष्ठ ११४

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

साथ रहे और ठट्ठे के युद्ध में वह दोनों वीरगति को प्राप्त हुये। गोपालदास के मारे जाने पर उसका द्वितीय पुत्र बिट्ठलदास जूनियां में शाहजहां के पास जा उपस्थित हुआ, तो शाहजहाँ ने उसको बहुत सा पुरस्कार देकर सन्तुष्ट किया। शाहजहाँ के सिंहासनारूढ़ होने के पश्चात उसको तीन हज़ारी ज़ात और पन्द्रह सौ सवार का मनसब दियाऔर उसको व उसके भाइयोंको भी जागीरें दीं। * फिर उसकी प्रतिदिन उन्नति होती रही। बादशाह के चतुर्थ राज्य वर्षगाँठ के समय वि० स० १६८७-८८ में वह रणथम्भोर का गढ़-पति नियत हुआ, वि० स० १६८९-९० में मिरज़ा मुज़फ्फ़र किर-मानी के स्थान पर अजमेर का फ़ौजदार और वि० स० १६९१-९२ में अजमेर का सूबेदार नियुक्त हुआ। वही भूभाग उसकी जागीर का था। वि० स० १६९७-९८ में वज़ीरखाँ सूबेदार के मरने से वह अकबराबाद (आगरा) का गढ़पति (क़िलेदार) और सूबेदार नियत किया गया, तब उसका मनसब पांच हज़ारी ज़ात और चार हजार सवार का हो गया था, वह अपनी मृत्यु से प्रथम पाँच

---

* १ राजा बिट्ठलदास गवर्नर अजमेर, राजा राजगढ़।
२ राजा मनोहरदास, शिवपुर (गवालियर रियासत में है)
३ राजा बलराम, सरवाड़ (कृष्णगढ़ राजपूताने में है)
४ ठा० गिरधरदास, तेजपुर।
५ ठा० विजयराम, विजयगढ़।
६ ठा० अजयराम, कन्धार, कौलाष व माड़ोर।
७ ठा० प्रद्युम्न, जैसागढ़।
८ ठा० रणछोड़दास, रामगढ़।
९ ठा० बलभद्र, जेतागढ़।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हजारी ज़ात और पाँच हज़ार सवारके मनसब तक पहुँच गया था। वह कई युद्धों में युवराज शुजा और औरङ्गजेब के साथ नियुक्त रहा था। वि० स०१७०६ में उसका शरीरान्त हुआ। उसके चार कुमार अनिरुद्ध, अजन, भीम और हरजस थे। अनिरुद्ध तो अपने पिता का उत्तराधिकारी बना और बादशाह की सेवा में रहकर अपने अच्छे कामों से पैंतीस सौ ज़ात और तीन सहस्र सवार तक के मनसब तक पहुँच गया। औरङ्गजेब के राज्य समय वह शुजा की चढ़ाई में वि० स० १७१६-१७ में नियुक्त हो आगरे से प्रस्थान कर मार्ग ही में मृत्यु को प्राप्त हुआ। उसकी सन्तान राजगढ़ जागीर भोगती है। अब आगे हम यहीं से राजगढ़ व शिवपुर बड़ोदा राज्य के इतिहास को पृथक करते हैं, राजगढ़ व अन्य गौड़ों का वर्णन न्यारा प्रकाशित हो चुका है,* यहाँ से राजा गोपालदास के पुत्र राजा मनोहरदास शिवपुर बड़ोदा का वर्णन किया जाता है।। मुग़ल बादशाहों के समय में गौड़ क्षत्रियोंका बड़ा मान था। राजा गोपालदास गौड़ जिन्होंने सोंई में राज्य किया था, उनके

---

१० ठा० मुकन्दसिंह, सलीमपुर।
११ ठा० बिहारीसिंह, सूरत।
१२ ठा० भावसिंह, पेमगढ़ व भावगढ़।
१३ ठा० मुरारीदास देवगढ़।
१४ ठा० भीकमदास, देवगढ़।
१५ ठा० रामसिंह गजपुर।

*— गौड़ क्षत्रिय इतिहास पं० शिवप्राद त्रिपाठी कृत, प्रकाशित सन् १९२२ ई०

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

द्वितीय पुत्र राजा बिट्ठलदास ने राजगढ़ बसाया और इनके भ्राता राजा मनोहरदास ने १५३७ ईस्वी में शौपुर व गढ़ लिया।[1] जिस समय औरङ्गजेब दिल्ली के राज्य सिंहासन के लिये अपने भाइयों से युद्ध कर रहा था, उस समय राजा मनोहरदास से भी उसने सहायता माँगी थी, तब उन्होंने यथाबल सहायता दी। जब औरंगजेब दिल्ली के सिंहासन पर बैठा, तो मनोहरदास से प्रसन्न हो महाराज की पदवी और शिवपुर राज्य की सनद, मनसब साही मरतिब सहित देकर दरबार शाही में बड़ी प्रशंसा की जिस समय सनद दी गई थी उस समय उस राज्य की आय पन्द्रह लाख वार्षिक थी। उस समय के शाही खलीते व मानपत्र शिवपुर बड़ौदा के वर्तमान रईस के पास हैं उनके अवलोकन से यह कह सकते हैं कि बादशाह औरंगजेब के समय में इस राज्य की बड़ी प्रतिष्ठा थी। उस समय में शिवपुर राज्य के आधीन कितने ही जागीरदार[2] व राजा थे। जब राजा राजसिंह से राजगढ़ का राज्य औरंगजेब बादशाह ने छीन लिया था, तब इन्हीं महाराज की विनती से राजगढ़ का राज्य राजा राजसिंह को लौटा दिया

---

1 Imperial Gazetteer. See Sheopur indax.

२—१६२१ ई० में राजा मनोहर दास बड़ौदा वालों ने रिंगनी ग्राम रावल गणपत गुजराती ब्राह्मण औदिच को दिया।

१७०० ई० में राजा उत्तम जी ने इस माफी का ताम्र पत्र जीतूराम पुत्र गणपत जी को दिया। जब यह देश दरबार ग्वालियर के अधिकार में आया तो १८१० ई० में महाराजा दौलतराव साहब ने यह माफी बहाल रखी।

तवारीख जागीर दारान भा० १ पृ० २१६

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गया था। पुराने पट्टों से यह ज्ञात होता है कि शिवपुर बसाने के पहिले से ही यहाँ पर गौड़ क्षत्रिय राजाओं का राज्य सोंई राज्य के आधीन था। पायडोला जो शिवपुर से चार कोस पर दक्षिण सिम्त में है वहाँ एकनाथ के पास विट्ठलदास का दिया हुआ पट्टा था जो समय के फेर-फार से नष्ट हो गया। महाराज मनोहरदास के स्वर्गवास होने पर महाराजा पुरुषोत्तमदास राज्याधिकारी हुए। इनके पश्चात इनके पुत्र राजा उत्तमराम* राज्याधिकारी हुए और १६७५ ई० में तीसरी पीढ़ी में महाराजा

---

*—सं० १६७४ ई० में राजा उत्तमराम शिवपुर ने जलालपुरा आदि सात गांव ठाकुर अमरसिंहजी राजपूत हाडा इन्द्र सालोत रईस खातौली निवासी को उनकी कार्य कुशलता के निमित्त जागीर दी। १६८६ ई० में अमरसिंह ने पुर की लड़ाई में अच्छा कार्य किया जिसके पुरस्कार में अढवाहा और नौ अन्य ग्राम देकर सोलह ग्राम की नई सनद प्रदान कर दी।

१७४० ई० तक पुरी जागीर इस वंश की रही, राजा उत्तमराम के पश्चात राजा इन्द्रसिंह ने उनके नौ ग्राम ज़ब्तकर लिये और अमरसिंह के पौत्र फकीरसिंह के नाम सात ग्राम की नूतन सनद प्रदान कर दी।

१८०९ ई० में जब यह देश दरबार ग्वालियर के अधिकार में आया तो फकीरसिंह के पौत्र जोरावरसिंह ने कर्नल जहान बेटिस्ट साहब को सहायता दी, जिस कारण दरबार ने इन सात ग्रामों पर उनका अधिकार कायम रखकर १८११ ई० में दूसरी सनद प्रदान की।

तवारीख जागीर दारान भा० १ पृ० २

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

राधिकादास[1] हुए इनकी माता ने जो सिसोदिया वंश की थीं, एक चन्द्रपुरा नामक ग्राम पर सम्वत् १८४७ बैसाख सुदी २ को उसमें बावड़ी बनवाई जो शिवपुर से दक्षिण को ओर ६ मील पर है उसमें शिला लेख भी है। महाराज राधिकादास बड़े विष्णुभक्त थे– उन्होंने १८०५ ई० में किलगाँवड़ी ग्राम अभयराम ब्राह्मण गुजराती औदिच्य को धर्मादा में दिया जिसको बाद में दरबार सिंधिया ने भी कायम रखा। इस राजा ने राज कार्य की ओर किंचित भी ध्यान नहीं दिया।

कर्नल टाड साहब ने इनके निमित्त यह लिखा है कि पृथ्वी-राज के युद्धों के सम्बन्ध में बार बार गौड़ों के बड़े बड़े प्रसिद्ध सरदारों का वर्णन आया है जिनमें से एक ने भारत के बीच में एक छोटा सा राज्य स्थापित किया जो मुगलों के सातसौ वर्ष के शासनकाल में बना रहा और उसके उपरान्त अन्त में अंग्रेजों के मरहटों पर अनेक बार विजय प्राप्त करने से वह राज्य किसी तरह बिगड़ गया अर्थात सेधिया ने सन १८०६ ई० में गौड़वंश का अधिकार नष्ट करके उसकी राजधानी शिवपुर पर अपना अधि-कार निम्न प्रकार कर लिया।

एक छोटा सा प्रदेश जिसकी वार्षिक आय अनुमानतः ६०००० साठ हजार रुपया है। इस गौड़ जाति के लोगों के गुजारे के लिये उनके बारह लाख रुपये सालकी आय वाले भूभाग में से रहा है।

१—तवारीख जागीरदारान गवालियर, भाग १ पृ० २०१

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सन् १८०७ में जब कर्नल टाड साहब इन प्रदेशों का अन्वेषण करने के लिये जो उस समय अज्ञात थे, भ्रमण करते हुए इस देश में आये तो उनका स्वागत और आतिथ्य बड़ौदा तथा शिवपुर दोनों स्थानों में किया गया। सन् १८०६ ई० में उसने अत्यन्त भिन्न अवस्था में इस देश में प्रवेश किया। अर्थात् इस अँग्रेज़ी एलची के सहचर वर्ग में, जो सिंधिया सरकार के दरबार में रहता था और उसको शिवपुर के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही तथा उसके पतन की अवस्था देखकर महान शोक प्राप्त हुआ क्योंकि वह अपने मित्रों की सहायता करने को असमर्थ था।

जब कर्नल * फिलोज़ को मालवा के दक्षिण पश्चिम भाग के भीलों को दमन करने और शान्ति स्थापन करने के लिये नियत किया गया तो उनके लिये एक और आवश्यकीय काम आ पड़ा, महाराजा दौलतराव ने उसे हुक्म दिया कि शौपुर की ओर जाकर राज्य-कर वसूल करे जो कि मरहठों ने मांगा था, जिस समय शोपुर राज्य के एजन्टों ने सुना कि जॉनबेटिस्ट (John Betteest) की सेना आक्रमण के लिये आ रही है तो उन्होंने डेढ़ लाख रुपये देने का वायदा करके आक्रमण को रोक दिया। लेकिन जिस समय फिलोज़ की सेना उदयपुर में संलग्न थी, शोपुर राज ने राज्य कर न दिया और कुछ समय तक मरहठे इनके विरुद्ध कुछ न कर सके, इस समय कर्नल फिलोज़ की सेना में आपसमें एक दूसरे के विरुद्ध

* The Gwalior Residency Part I.
The Felose family of Gwalior. PP. 50-60.

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विचार होगये थे। जिस समय कर्नल फिलोज़ बन्दी था उस समय सैनिक प्रबन्ध टूट गया था, जिसके मन में जैसा आया वैसा किया, क्योंकि कई मास का वेतन न मिलनेके कारण तीन पलटनों ने काम करने से इन्कार कर दिया और महाराजा के पास जाकर वेतन का तकाज़ा किया, इस विद्रोह के कारण तीन पलटनों को तोड़ दिया गया, जब कि कर्नल फिलोज़ उदयपुरमें था, जयपुर का राजा जगतसिंह जोधपुर की राजकुमारी से विवाह करने के हेतु गया, विवाह हो जाने के पश्चात् राजा ने अपनी राजधानी को लौटने की ठानी। किन्तु उसे अफगान लुटेरे अमीरखां के हाथों पकड़े जाने का भय था जो कि उन दिनों जयपुर को लूट रहा था। इसलिये राजा जगतसिंह ने कर्नल फिलौज़ को एक लाख रुपया देना स्वीकार किया ताकि वह उसे जयपुर सुरक्षित पहुँचा दे। कर्नल ने यह मानकर उसे जयपुर पहुँचा दिया, तो एक लाख रुपया जो देने का वचन किया था उपरोक्त कर्नल के माँगने पर राजा ने रुपया न देकर उत्तर दिया कि कुत्ते को एक हड्डी जब काफी है तो एक लाख फिर काहे को मांग रहा है। कर्नल फिंलोज़ ऐसा व्यक्ति नहीं था जो ऐसे व्यवहार से चुप रहता, इस कारण कर्नल ने दौसा जो कि जयपुर का निकटवर्ती कसबा था। आक्रमण कर राज के किलेदार को बन्दी कर खज़ाना पकड़ लिया जिसमें २४०००) रुपया था, कर्नल ने फिर अपनी सेना जोधपुर से बुला ली और मोवा, हिन्डोन, मुलहारना, डोङ्गुर, कुशलगढ़ और जयपुर के कई एक स्थानों पर अधिकार कर लिया और यहां वह कोई दो वर्ष से अधिक समय तक रहकर, ४२०००००) की मालगुजारी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इकट्ठी की। राजपूतों ने भी अपनी पूरी कोशिश से इनको निकालना चाहा।

दूनी के चान्दसिंघ ने ३०००० राजपूतों की सेना इकट्ठी करके बापू सेन्धिया और सरजेराव घाटगे को जो कि जयपुर के टोडरी स्थान पर थे जाकर भय उत्पन्न कर दिया, तिस पर उन्होंने कर्नल से सहायता के लिये प्रार्थना की, जो कि तुरन्त आ गई। खूब घमासान युद्ध हुआ। जिससे कर्नल फिलोज की बहादुरी और बुद्धिमता के कारण मरहठों की विजय हुई। विजेताओं के हाथ, ४२ तोपें, बारूद, तलवारें, घोड़े तथा अन्य पशु व सामान इस युद्ध में कर्नल फिलोज के हाथ आया। इस युद्ध में कर्नल के १००० सैनिक और राजपूतों के २४०० सैनिक खेत रहे। जयपुर सेना इतनी कमजोर हो गई थी, कि उन्होंने अपनी शवों को गीदड़ों के लिये छोड़ कर भागने का मार्ग लिया। जब राजा ने देखा कि रुकावट पैदा करना अनुचित है तो मरहठों के लिये १८००००० रुपये देने का वायदा करके सन्धि करली। तो कर्नल फिलोज ने अपनी सेना उन स्थानों से हटा ली जहां पर वह तीन वर्ष के लगभग अधिकारी रहा था।

जब वह जयपुर के राजपूतों की शक्ति छिन्न कर चुका और सेन्धिया का खजाना भर दिया, तो कर्नल फिलोज ने अपने आपको राजा शोपुर के साथ पुराने झगड़े को निर्णय करने का समय पाया * आपको याद होगा कि तीन

---

* सन् १८०१ ई० में जब किला शिवपुर फतेह हुआ इसकी मुखबिरी

वर्ष पहले राजा ने डेढ़ लाख रुपया देने का वायदा करके किले का घेरा उठवा दिया था, जो अब तक नहीं दिया। अब राजा को यह सन्देश भेजा गया कि वह शीघ्र ही उस रुपये को भेज देवे, नहीं तो सेना भेजकर आपके राज्य पर अधिकार कर लिया जावेगा। तो राजा ने सन्तोषजनक उत्तर देकर टालने का प्रयत्न किया, परन्तु फिर भी उसे उचित न जान कर युद्ध के लिये तैयार हो गया। ५००० वैरागियों ने किले की रक्षा करनी चाही, युद्ध एक धर्मार्थ और फौजी था, जैसे कि मध्यकाल में धार्मिक वीरों ने किया था। इन वैरागियों का सेनापति महन्त (बड़े गुरू) थे। यह वैरागी अपनी ऊजड्डता और बलके कारण मध्य भारतके लिये हानिकारक थे। कर्नल फिलोज ने धोकेसे उन पर जा आक्रमण किया और उनकी बहादुरी को छिन्न भिन्न कर उनके टुकड़े २ कर दिये। फिर शोपुर में छः मास तक घेरा डाले रक्खा। किले की शक्ति इतनी अधिक थी कि गोलाबारी का वहां पर कुछ असर न हो सका, कर्नल फिलोज के एक हजारसे अधिक सैनिक मारेगये। जिससे वह इन्हें परास्त करने में और भी उत्साहित हो गया। गढ़के बहादुरों के पास वृक्षों के पत्तों के अतिरिक्त और कुछ खाने को न रहा तो

एक मुसलमान ने की जिसका नाम शेख नाथू था। जिसको कर्नल जान बैटिस्ट साहब ने वर वक्त फतेह करने किले शिवपुर के व सिले मुखबिरी मौजा सिरसोद अता किया, बादहू सनद के गुम होजाने से सन् १८१७ ई० में कर्नल जान बैटिस्ट साहब ने व एवज मौजा मजकूर सदर दूसरा मौजा सीसवाली जागीर में अता किया।

तारीख जागीरदारान गवालियर सन् १९२३ ई० जिल्द २ सफा २३५

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

राजा ने इस शर्त पर सन्धि करना स्वीकार किया कि उसे सुखमय जीवन व्यतीत करने के लिये जागीर दी जावे। कर्नल फिलोज ने यह शर्त मानली और राजा को बड़ौदा का इलाका जिसकी वार्षिक आय ४०००० थी जागीर दे दिया, इसके बाद कर्नल ने किले पर अधिकार कर लिया और निकटवर्ती इलाके को राज में सम्मिलित करने का विचार किया।

ऐसा कहा जाता है कि महाराज राधिका दास का कामदार एक व्यास था। विश्वासघात करके उसने महाराज को बहकाकर किला खाली करवा दिया। एक बार गौड़ सरदारों ने आक्रमण करके क़िले पर अधिकार कर लिया था। परन्तु कामदार ने जब सेना युद्ध को आती देखी तो क़िला खाली करने व बृटिश गवर्नमेण्ट से विनय करने की सलाह महाराज राधिकादास को देकर क़िला खाली करा दिया। यह दशा देख कर गौड़ वीरों ने इनका साथ छोड़ दिया, महाराज राधिकादास ने बृटिश गवर्नमेण्ट से विनय की कि हमारा क़िला दिलवाया जावे। जिसका मिलना दशहरे को निश्चय किया गया था, परन्तु महाराज राधिकादास का देहान्त दशहरे से पहिले प्राचीन छावनी गवालियर में हो गया। महाराजा की छत्री गवालियर में इन्हीं के बाग में बनी हुई है, और स्मरणार्थ एक छत्री बड़ौदा (शिवपुर) के राज बाग में भी बनी हुई है। इनके पश्चात इनके दत्तक पुत्र बलवन्तसिंह राज्याधिकारी हुए। राधकिादास ही के समय में शिवपुर की रियासत पृथक हो कर महाराज गवालियर के अधिकार में सम्वत् १८६६ में आ गई

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

थी। केवल गौड़बंश की राजधानी कुछ ग्रामों सहित बड़ौदे में नियत हुई। जो यह पहिचान के लिये शिवपुर बड़ौदे के नाम से प्रसिद्ध है। महाराज राधिकादास के तीन बहिनें थीं। उनमें से प्रथम का विवाह महाराज जयपुराधीश श्रीप्रतापसिंह जी से भादों बदी संवत १८५४ में हुआ, द्वितीय का हाडाकुल कलश श्रीबिशनसिंहजी बून्दी से हुआ और तृतीय का नरवर महीपति श्री मनोहरसिंह जी से हुआ। राजा बलवन्तसिंह के तीन विवाह हुए। प्रथम राजा नरवर की पुत्री से हुआ द्वितीय ठिकाना खातोली हाडाकुल में और तृतीय भाटीकुल जैसलमेर में हुआ।

राजा बलवन्तसिंह के तीन पुत्र हुये। सबसे बड़े राजकुमार नरसिंह जी सम्वत् १९१४ में शोपुर की लड़ाई में काम आये, द्वितीय राजकुमार जयसिंह जी का बड़ौदे में स्वर्गवास हुआ। तृतीय राजकुमार विजयसिंह जी का सम्वत १९१९ वैसाख शुक्ल १५ भृगुवार को जन्म हुआ और यही शोपुर के अधिकारी हुये।

सम्बत १९१४ में राजा बलवन्तसिंह जी के बड़े राजकुमार नरसिंह जी ने सेना इकट्ठी करके चढ़ाई की और क़िले शौपुर पर फिर अपना अधिकार कर लिया। जब सूबा ज़िला शौपुर गोविन्दराय (विट्ठल शमशेरजंग बहादुर) ने दरबार से मदद चाही तो महाराजा जियाजी राव साहब सिन्दे ने जनरल बापू साहब अवाड़े को सेना देकर भेजा, उसी लड़ाई में उसी साल राजकुमार नृसिंह जीं मारे गये व दरबार का शौपुर पर कब्जा हो गया और बड़ौदा भी दरबार के कब्जे में आ गया राजा बलवन्त-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सिंह जी कोटा इलाके में चले गये और वहाँ जाकर जरिये चिट्ठी महाराजा सिन्दे सरकार से प्रार्थना की कि मेरे बड़े लड़के ने शोपुर पर चढ़ाई की थी जिसकी सजा वह पा चुका है मेरा विद्रोहियों से कोई सम्बन्ध नहीं था। पश्चात् वह स्वयं हाजिर दरबार हुये महाराजा जियाजीराव साहब ने राजा साहब को बढ़ौदा व २५ गाँव वापस फरमाये।

सम्वत १९२२में राजा बलवन्तसिंहका शरीरान्त हुआ। उनके बेटे राजा विजयसिंह हुये, उसकी बाल्यावस्था के समय में बड़ौदा और निगरानी दरबार रहा इस काम के वास्ते मिन्जानिब दरबार सब पिटर फिलोज साहब जो सूबा सबलगढ़ में थे उन्होंने नायब सूबा शौपुर को सुपरिण्टेण्डेण्ट क़ायम कर अच्छा इन्तजाम कर दिया।

सम्वत १९२८ में महाराजा जीयाजीराव साहब सेंधिया ब तकरीब दौरा जिला सबलगढ़ रौनक़ अफ़रोज़ हुए, वहाँ पर ब अर्ज़ नजराना १००००) दस हज़ार रुपये पेश किये, राजा साहब को खिलअत जा नशीनी का अता फरमाया।

बड़ौदे पर निग्रानी दरबार सम्वत १९२३ से १९३६ तक १३ वर्ष रही, राजा साहबके बालिग़ होनेपर स्वस्थान पर अख़्त्यारात उनको अता किये गये, और दरबार से ख़िलअत व पोशाक अता हुई।

सम्वत १९४० में राजा विजयसिंह साहब ने मामलात तनाजे सरहद्द व तवस्सुत रेजिडेन्सी शुरू किये इस पर दरबार गवालियर की तरफ़ से रेजिडेण्ट साहब बहादुर को लिखा गया, कि बड़ौदा मातहत दरबार होने से तनाजे की तहक़ीक़ात मार्फत पंचान होनी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

चाहिये और राजा साहब को हिदायत होनी चाहिये, उस पर से रेजिडेण्टसाहब बहादुरने बज़रिये खारीसा खालीता ता० ७ जौलाई सन् १८८३ (सम्वत १९४०) राजा साहब को हुक्म दिया कि वह दरबार के हुक्म की तामील करें। कुछ अर्से बाद फिर राजा विजयसिंह साहब ने दरबार के हुक्म की तामील नहीं की उस पर से ब ज़माने कौंसिल ऑफ रीजेन्सी दरबार की तरफ़ से रेजिडेन्सी में लिखा गया और उसमें यह भी "एतराज" तहरीर हुआ कि किताब इचसन ट्रीटीज़ जो सन् १८६२ ईस्वी में शाया हुई, उसमें राजा साहब को (मिडिय टाइजडूड) लिखा है, वह खिलाफ वाकिआत के हैं, और जो दस्तख़त रेजिडएट साहब के बारह मौजे की सनद पर हुये थे उसके मानी किफ़ालत के नहीं हो सकते, उस पर से मामला गवर्नमेण्ट ऑफ इन्डिया तक पहुँच कर वहाँ से फैसला हुआ।

राजा विजय सिंह जी के दो ज्येष्ठ भगनियाँ थीं। प्रथम का विवाह वैसाख शुक्ल तीज सम्वत् १८२३ को करौली के महाराजा मदनपाल जी के साथ हुआ और द्वितीय का सम्वत १९२५ के मार्ग शीर्ष मास में श्री महाराव शत्रुसाल जी कोटा दरबार के साथ हुआ। राजा विजयसिंह जी ने पाँच विवाह किये। प्रथम तो राघोगढ़ में खीची कुल में सम्वत १९३२ को हुआ। इससे सन्तान नहीं हुई, द्वितीय राठौर कुल में ठिकाना, जून्या में वैसाख बदी १२ सम्वत १९३६ में हुआ। इनके गर्भ से एक कन्या हुई जिसका विवाह महाराजा भँवरपाल करौली नरेश से सम्वत्

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

१६५६ में हुआ, तृतीय विवाह उमट कुल में राजगढ़ उमरवाड़ा में चैत्र शुक्ल १२ गुरुवार सम्वत १६४० को हुआ, चतुर्थ चावड़ा कुल में मानसा देश गुजरात में कार्तिक शुक्ल २ सम्वत् १६४२ को हुआ इनके गर्भ से एक कन्या हुई और पञ्चम भाटी कुल में ठिकाना ओसिया देश मारवाड़ में वैसाख शुक्ल ३ सम्वत् १६४३ को हुआ इनके गर्भ से दो राजकुमार और दो कन्या हुई। बड़ी कन्या का विवाह सम्वत १९६७ में राजा साहब उदयसिंह राठौर झाबुआ के साथ हुआ, द्वितीय कन्या का विवाह इलाके मेवाड़ में ठिकाने भेसंरोड़गढ़ में रावत जी साहब के कुंवर हिम्मतसिंह जी साहब के साथ हुआ।

राजा विजयसिंहजी देवनागरी के प्रेमी थे। आपकी काव्य शक्ति अच्छी थी आपने एक शिवालय, चन्द्रसागर ताल, शिवपुर बड़ौदेमें बनवाया था। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९७४ के मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्दशी को हुआ। आपके दो राजकुमार भवानीसिंह व शम्भूसिंह हैं। इस समय राजा भवानीसिंहजी शौपुर बड़ौदा के अधिपति हैं।

लवाजमा व मान मरातिब

लवाजमा

१ चौरी—दस्ता तिलाई
२ छड़ी—झालदार तिलाई
३ मोरछल—दस्ता तिलाई
४ छत्री—
५ आफ़ताब गीरी—
६ नक्कारा निशान हाथी का
७ रोशन चौकी हाथी की
८ माही मरातिब हाथी के

२ हाथी १० पालकी

मान मरातिब मिन्जानिब दरबार गवालियर

१ नीम—ताजीम दरबार

२ नशिस्त—दरबार गाशिया

३—अताय—खिलअत दरबार

(अ) राजा साहब को

पार्चे पांच कण्ठा एक सिर पेच एक	}	दाखला जामदार खाना सम्वत् १६२३
हाथी एक घोड़ा एक ढाल एक तलवार एक	}	मुन्दर्जे काग़ज़ात दाखला ज़िला

(ब) स्वस्थान के खास लोगों को पार्चा साढ़े तीन (दा० जा० सम्वत् १६२३)

(क) वकील को पार्चा दो (दाखला जामदार खाना सम्वत् १६२३)

(ङ) राजा साहब की वाल्दा को पैठनी एक, लुगड़ा एक, श्वस्र एक, दुशाला एक (दाखला जामदार खाना सम्वत् १६२३)

(ज) राजा साहब के भाई कुंवर शम्भूसिंह साहब को पार्चे पाँच कण्ठी और सिर पेंच ब मौके शादी खुद आता हुआ (दाखला दफ्तर मास्टर ऑफ़ सेरिमनीज़ सम्वत् १९७५)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(४) राजा साहब की तरफ़ से दरबार को खिलअत पार्चे वग़ैरह २१ इक्कीस मय हाथी घोड़ा पेश होती हैं (दाखला दौरा दरबार सम्वत् १६२३)

राजकुंवर शम्भूसिंहजी को राज्य से जागीर वग़ैरा का पूर्ण प्रबन्ध है आपको योग्यता का हाल इस पुस्तक के प्रारम्भ में चित्र के साथ दिया गया है।

गवालियर-शिवपुर बड़ोदा सम्बन्धी पत्रों की नक़ल

अनुवाद पत्र अङ्गरेजी मेजर ए० मॅकयू अर्य सी० आई० अफिशेटिङ्ग रेजिडेण्ट राज्य ग्वालियर की ओर से चीफ सेक्रेटरी साहब हिज हाईनेस महाराजा सिन्धिया राज्य ग्वालियर नम्बर ५३० तारीख २८ जनवरी १८६७ ई०।

जनाब !

बजवाब खत नम्बरी १८६४ व २६१५ मुवर्खे २३ सितम्बर व २६ दिसम्बर १८९३ ई०मिनजानिब सेक्रेटरी साहब निसबत कौंसिल औफ रिजेन्सी और ब सिलसिले तहरीर इस दफ्तर नम्बरी २४४ मुवर्खे १४ जनवरी १८६७ ई० दरबारे रिश्ते कार्वाई दरम्यान शौपुर बड़ोदा रियासत ग्वालियर मुझको हिदायत दी गई है कि मैं दरबार को सरकार कैसरेहिन्द के हुक्म मुन्दर्जे जेल से आगाह करूं। यानी—

१—साहब रेज़िडेण्ट बहादुर ग्वालियर राजा शिवपुर बड़ोदा को बहुत अच्छी तरह से समझा दें कि उनको महाराजा सिंधिया

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

को अपना सरताज समझना चाहिये और उनके हुक्म की तामील करना चाहिये।

२—अलावा ऐसे मौकों के जहाँ पर कि गवर्नमेएट को हमेशा दख़ल देने का अखतियार है, यह बात करार पा चुकी है कि (१) शिवपुर बड़ोदा की गद्दी नशीनी के बारे में दरबार ग्वालियर फैसला करेगा (२) मुलज़मों के लेन देन की कार्रवाई आयन्दा बाला बाला दरबार से होगी न कि मारफत रेज़िडेएट साहब बहादुर ग्वालियर के (३) राजा साहब के दिवानी अख-त्यारात दरबार के हुक्म के बमूजब उसी तरह पर होंगे जैसे कि ग्वालियर के अव्वल दर्जे के जागीरदारान को हैं।

३—सरकार कैसरेहिन्द ने करनल राबर्टसन साहब बहादुर की तजवीज़ जो कि उनके खत फिकरा १६ से २१ तक है पसन्द और मञ्जूर किया है। वह मजमून यह है—

फिकरा १९—मुलजिमों के दाद सितद के बारे में दरख्वास्त वही हुक्काम कर सकेंगे जो हुक्काम कि रियासत के आला सरदारों से खत किताबत करने के मजाज हैं।

फिकरा २०—राजा साहब के दिवानी अखत्यारात उसी कदर होंगे जिस क़दर कि रियासत के अव्वल दर्जे के जागीरदारों को हासिल हैं। मसलन—सर किशनराव बापू साहब जादों के० सी० आई० ई० और बाबा साहब शीतोले के जो इख्त्यारात उनके बड़े जागीर अरोन व पोहरी में हासिल हैं वही उनको होंगे। उस हालत में राजा साहब कुल मुकद्दमात दिवानी और फौजदारी जो

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कि उनकी जागीर में होंगे और जिससे कि उनकी रैय्यत का ताल्लुक होगा, फैसल कर सकेंगे। और सिर्फ संगीन मुकद्दमात की इत्तला सूबा साहब शिवपुर को दिया करेंगे न कि साहब रेजिडेण्ट बहादुर ग्वालियर को। इस तरह पर कि मुतजिकरे बाला सरदार लोग मुकद्दमात्त कत्तल अमद व कत्तल इन्सान जो हद कत्तल अमद तक न पहुँचा हो, डकैती, रेजनी को इत्तला देते हैं। और इससे ज्यादा तारीफ़ उनके इख्त्यारात की करने की जरूरत मालूम नहीं होती।

फिकरा २१—मैं इस बात को राजा साहब के बखूबी दिल नशीन किया चाहता हूं कि गो वह रेजीडेण्टी ग्वालियर में अपना वकील हाजिर रक्खें और इस तरह पर कि साहब रेजिडेण्ट बहादुर तक बाला बाला पहुँच सकें ताहम उनको हमेशा इस बात का ख्याल रखना चाहिये कि वह दरबार के मातहत हैं और महाराजा सिंधिया साहब उनके सरताज हैं जिनकी खुशी उनको हमेशा तलाश करना चाहिये, और दरबार से हम इस बात की इल्तजा करते हैं कि हुक्काम रियास्त ग्वालियर राजा साहब से उसी तौर का बर्ताव करें जैसा कि मुतजिकरे बाला सरदार साहबान के साथ किया जाता है। मैं इस बात से आगाह हूँ कि महाराजा सिंधिया अपनी निगरानी में एक नया दफ्तर खोलने की तजवीज में हैं ताकि वह अपने मातहत राजपूत ठाकुरों से बाला बाला तहरीर कर सकें और इसी तरह पर हुक्काम दरबार को उन ठाकुरों को दिक करने का मौक़ा न मिले। मैंने महाराजा साहब व बापू साहब जादों से शिवपुर बड़ौदा के बारे में अच्छी तरह

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पर गुफ्तगू की है मुझको इस बात का यकीन है कि इनका इरादा ठाकुर साहब से गुजिश्ता बर्ताव के बदला लेने का नहीं है और न यह इरादा है कि वह बाला बाला रेजिडेण्ट साहब से अगर उनको किसी बात की तकलीफ हो इल्तजा न करें, यानी करें।

फिकरा नंबर २१ के बारे में राजा साहब को बहुत अच्छी तरह यह बात जहन नशीन कर दूंगा कि उनको दरबार के बड़े समझने की अशद जरूरत है अगरचे वह रेजीडेण्टी में वकील रख सकते हैं, अगर वह चाहें। फकत।

तारीख जागीरदारान मय कवा-यद जिल्द दोयम सफा २३२	दस्तखत आई मकयूआर्स मेजर आफिशेयेटिङ्ग रेजिडेण्ट गवालियर।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

* गौड़ राजपूतों के गोत्र प्रवर

गोत्र—भारद्वाज ।

वेद—यजुर्वेद । उपवेद—धनुर्वेद ।

प्रवर—भारद्वाज, आङ्गिरस, बार्हस्पत्य । (पञ्च प्रवर)

सूत्र—कात्यायन ।

शाखा—माध्यन्दनी ।

शिखा—दाहिन, । पाद—दाहिन ।

पुरोहित—पारिख ।

चारण—मिस्ट

भाट—डोखर, राव—लखनात ।

नगारा—रणजीत चोप, ।

वरतिया—सामी करसान ।

नाई—नीलडिया— । घाट—हरद्वार ।

नौबत—महाकाली । निशान-सुर्ख, दरियाई ।

बन—मधुवन । गुरू—वशिष्ठ ।

नदी—गलिता । ढाल—जयतिराम ।

तोप—कटक बिजली । कटार-रणजीत ।

तम्बू—दल बादल । वृक्ष-केला ।

इष्ट—माता कालिका व काल भैरव ।

पितर—रणसिंह व उदयसिंह ।

---

* रुद्र क्षत्रिय प्रकाश पृष्ठ ९२

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

राजा—वत्सराज (बच्छराज) के समय से नारायणी देवी व भानी गऊ भी मानी गई।

गौड़ राजपूत निम्न लिखित शाखों में विभक्त हैं:—

शाखें—ओनताहिर (उटाहिर-उबड़), सिलहाला (सालियाना), तूर, दुसेना (दुहाणा) और वोदाना (बुदाऊं-बोड़ाणा)।

उपशाखायें:—

अजमेरी गौड़, चमर गौड़, अमेठिया गौड़, अजीत मल्ली गौड़, नागमल्ली गौड़, उद्धरामो गौड़, खड्गसेनो गौड़, मरोठिया गौड़, बिठलोत, मनोहर दासोत, बालसोत, गिरधर दासोत, विजयरामोत, अजय रामोत, रणछोड़ दासोत, बलभद्र दासोत, मुकन्दसिंहोत, बिहारी सिंहोत ! भावसिंहोत, मुरारी दासोत, सिंहोत प्रद्युमनोत, अर्जन दासोत आदि।

समाप्तम्

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

परिशिष्ट

सन् १९१७–१९ की बात है, जब मैं स्वर्गीय माधवराव महाराज शिंदे ग्वालियर-नरेश की सेवा में था, तब अकस्मात् राजकुमार श्रीशंभूसिंहजी साहब शोपुर के शुभ परिचय का मुझे लाभ हुआ। मुझे इतिहास की खोजभाल का चाव है, अतएव मैंने अपने संग्रह की शोपुर-राजवंश संबंधी कुछ सामग्री कुँवर साहब की सेवा में प्रविष्ट करके अनुरोध किया कि वे अपने पराक्रमी पूर्वजों की गुणगाथा को प्रकाशित करें तो बड़ा अच्छा होगा। तदुपरांत भी समय-समय पर कुँवर साहब से तत्संबंधी वार्तालाप होती रही; अतएव इतने वर्षों के अनंतर अभी हालही में गौड़ राजपूतवंश के इतिहास प्रणयन के समाचार सुनकर मुझे अत्यानंद हुआ। एक दिन तो कुँवर साहब ने उक्त पुस्तक की प्रूफ कॉपी भी मुझे अवलोकनार्थ दी और मेरे संग्रह की सामग्री को परिशिष्ट में प्रकाशित करने का अनुरोध किया तदनुसार मैं कुछ सामग्री भेंट करता हूँ।

क्षत्रिय कुलों में गौड़वंश बड़ा धीर-वीर रहा है। औरंगजेब तथा उसके अनंतर के गौड़ वीर-पुरुषों ने बड़े पराक्रम बतलाये। आरंभ में जहां गौड़ वीरों ने औरंगजेब की सहायता की, वहां उसकी मृत्यु के अनंतर मुगलवंश के अत्याचारों का बदला चुकाने में भी उन्होंने कोई कोर-कसर नहीं रखी। मुगलवंश के क्षय में जाटों से भी अधिक गौड़ राजपूत वीरों ने योग दिया। श्रीयुत ठा० रुद्रसिंहजी तोमर ने 'गौड़ इतिहास', ज्ञात होता है कि बहुत जल्दी में लिखा है; अन्यथा तत्संबंधी और भी सामग्री इसमें सम्मिलित हो सकती थी। अभी मेरे संग्रह में भी प्रचुर सामग्री मौजूद है; पर स्थान तथा अवकाशाभाव से द्वितीय संस्करण में तत्संबंधी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विस्तृत विवेचन करने का प्रयास करूँगा। यहां पर तो केवल गौड़ों के मराठों से संबध विषयक ही संक्षेप में चर्चा की जाती है।

गौड़ इतिहास में शिवपुर राजवंश का सन् १८०९ में मराठों से संपर्क होने की बात लिखी है, वास्तव में तो मराठों के सेनापति वीरवर महादजी सेंधिया जब राजपूत राजाओं पर अपना अधिकार जमा रहे थे, तभी शिवपुर नरेंश ने एक स्वतंत्र राजा की नाईं ग्वालियर वंश स्थापक से संधि की थी, वह इतिहास भी बड़ा विचित्र है इतिहास से पाया जाता है कि अलवर राज्य के संस्थापक रावराजा प्रतापसिंह माचौड़ीवाले नें यह षड्यंत्र रचा कि जयपुर की राजगद्दी से प्रतापसिंह को हटाकर मानसिंह को स्थापित किया जावे। तदनुसार महादजी सेंधिया ने जयपुर पर चढ़ाई की। जयपुर की २० हजार फौज और जोधपुर की १० हजार फौज मिलकर मराठों से मुटभेड़ होनें का निश्चय हुआ। हमारे पूज्य पूर्वज खंडेराव हरी तथा अंबाजी इंगले भी अपनी फौज सहित महादजी सेंधिया की सेवामें हाजिर हुए। इतने में ता० १२।५।८७ ई० को जयपुर के राजा नें बकाया खंडनी ६२ लाख देना निश्चित किया और आठ लाख रुपये अदा भी कर दिये। इसी समय शोपुर नरेश राजा राधिकादासजी नें ता० १८ मई १७८७ को महाराजा महादजी से संधि की, जिसकी प्रतिलिपि यहां पर उद्धृत की जाती है। महाराज राधिकादासजी का ननिहाल शीसोदिया कुल था। संभव है कि उनका विवाह संबंध जोधपुर या जयपुर राजवंश में हुआ हो और उस समय उक्त-उभय कुलों से सेंधिया की अनबन होजाने के कारण वे किसी विशेष पक्ष को सहायता करने के लिये गये हों! किंतु अनंतर किसी विशेष घटना के कारण उन्होंने संधि करली हो। एक और अनुमान भी किया जा सकता है। हमारे पूर्वज खंडेरावहरी का कार्यक्षेत्र हाड़ौती प्रांत का दक्षिणीय भाग रहा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

है। अतएव एक ही प्रांतीय के नाते आपा खंडेरावजी ने ही महाराजा राधिकादास के विशेष लाभ को सोचकर उक्त संधि करादी हो। हमारे संग्रह में उक्त सामग्री का प्राप्त होना ही उसकी पुष्टि के लिए पर्याप्त है। अस्तु।

इस संधि से मराठों के इतिहास में भी एक नई बात की खोज होती है और वह यह कि सन् १७६१ के पानीपत के युद्ध के पूर्वतक तो पेशवा के सेनापति शिंदे, होलकर तथा पवार प्रत्येक राजा से संयुक्त संधियां करते थे, पर उसके और सन् १७८१ के अंग्रेजों की संधि के कारण महादजी के स्वतन्त्र राजा घोषित होने के अनन्तर इस प्रकार का अमिष्ट होने का यह पहिला ही उदाहरण है। शेष दो सरदार होलकर तथा पवारों का संबंध गौड़-राजवंश से कब छूटा, इसका कोई साधन नहीं उपलब्ध हुआ। अस्तु।

इसी मिति को महाराजा महादजी सिंधिया से महाराज राधिकादासजी की एक और स्वतंत्र संधि हुई, उसकी प्रतिलिपि भी यहां पर दीजाती है। इस प्रकार दो संधियां होने का कारण ज्ञात नहीं होता। 'टीका का नजराना' क्यों देना पड़ा। इसपर भी प्रकाश पड़ने की आवश्यकता है।

उक्त घटना के १० मास पश्चात् महाराजा राधिकादासजी की ओर से महाराजा महादजी सिंधिया की महारानी सौभाग्यवती बाई साहब को साड़ी-चोली के प्रीत्यर्थ एक गांव जागीर में देने के उदाहरण से देखते तो गौड़ राजवंश का सिंदे राजवंश से कुटुबयिन्यता होना पाया जाता है। म० महादजी की किस महारानी को म० राधिकादासजीने अपनी भगिनी बनाया था ? यह प्रश्न भी विचारणीय है। उदैपुर, रतलाम आदि राज्यों

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

की नाईं शोपुर वंश का सिंदे वंश से राखीबंद भैयाचारा आरंभ स्थापित होना उभय कुलों के लिये अभिमान का विषय है। ऐसी दशा कर्नलवेप्टिस्ट का सन १८०९ में शिवपुर छीन लेना चिंतनीय है। आ है द्वितीय संस्करण में इस विषय पर अधिक प्रकाश डाला जायेगा।

अंत में कुँवर साहब तथा ठाकुर रुद्रसिंहजी को मुझे इस शुभकार्य योगदान देने का अवसर देने के उपलक्ष में धन्यवाद देता हूँ।

२०-१२-३४

विनम्र—

भास्कर रामचंद्र भालेरा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

क्षत्रिय अन्वेषक समिति द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

पाण्डव यशेन्दु चन्द्रिका

साहित्य प्रेमियों के सम्मुख इसका परिचय व्यर्थ है। आज-कल जो 'पाण्डव यशेन्दु चन्द्रिका' यत्र-तत्र प्रकाशित होई हुई है उसमें बहुत-सी कविता शैली की त्रुटियाँ रह गई हैं। परन्तु यह नवीन संस्करण बड़े परिश्रम और धन व्यय से संशोधित और परिवर्धित टीका टिप्पणियों सहित सुन्दर अक्षरों में बढ़िया कागज़ पर छपाया गया है। इसकी थोड़ी-सी प्रतियाँ ही शेष रह गई हैं। क्योंकि छपते समय ही हमारे पास बहुत आर्डर आ गये थे। पुस्तक नये ढंग पर छपने के कारण सर्व-प्रिय सिद्ध हुई है। अतः शीघ्र आर्डर भेजने पर हस्तगत हो सकेगी। वरना फिर द्वितीयावृत्ति तक ठहरना पड़ेगा। मूल्य केवल ३) रुपया।

रुद्र क्षत्रिय प्रकाश

अथवा

३६ राजकुलों के अतिरिक्त

गढ़वाली, बंगाली, महाराष्ट्रीय क्षत्रिय जाति का

परिश्रम और धन व्यय से सं

जिसमें क्षत्रियों सहित सुन्दर अक्षरों में बढ़ि...हास, क्षत्रिय वंश निर्णय, गोत्रप्रवर...की थोड़ी-सी प्रतियाँ ही शेष रह...र, शाखा, शिखा सूत्र, कुलदेवता,...मारे पास बहुत आर्डर आ गये थे...इतिहास, वर्तमान ठिकाने, परस्पर...ण सर्व-प्रिय सिद्ध हुई है। अतः शी...धर्म लिखे गये हैं जिसकी प्रशंसा देश-विदेश क...फिर द्वितीयावृ...ने मुक्तकण्ठ से की है। मूल्य २) । द्वितीयावृत्ति प्रेस में है अपना आर्डर रजिस्टर्ड करालें।

आर० एस० तोमर एण्ड संस, दिल्ली।

केवल टाइटिल पेज और भूमिकादि, हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, दिल्ली में छपी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust